CMYK

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

हल्द्वानी, गुरुवार 21 अगस्त 2025 हल्द्वानी संस्करण: वर्ष 22 अंक 360 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

अधिकतम : 29° C
न्यूनतम : 23° C

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com | भाद्रपद कृष्ण पक्ष 11 विक्रमी सम्वत् 2082 | 26 सफर 1447 हिजरी | नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

देश को पुलिस स्टेट बनाने की साजिश :ओवैसी पेज 2

वनडे बैटर्स रैंकिंग से रोहित-कोहली गायब खेल टाइम्स

जननायक राहुल गांधी का एक और दांव सम्पादकीय

हमारे कच्चे तेल का कोई विकल्प नहीं: रूस पेज 12

अग्नि-5 मिसाइल का सफल परीक्षण, रेंज 5000 किमी

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। भारत ने अपनी पहली इंटर कॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-5 का सफल परीक्षण कर लिया है। ओडिशा के चांदीपुर में इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज में बुधवार को इसकी टेस्टिंग हुई।

यह मल्टिपल इंडिपेंडेंटली टार्गेटेबल री-एंट्री व्हीकल (एमआईआरवी) टेक्नोलॉजी से लैस है। यानी इसे एक साथ कई टारगेट्स पर लॉन्च किया जा सकता है। इसका पहला परीक्षण अप्रैल 2012 में हुआ था। अग्नि-5 की रेंज 5000 किमी है। ऐसे में यह मिसाइल पाकिस्तान, चीन, तुर्की जैसे कई देशों तक मार करने की क्षमता रखती है। मिसाइल 7500 किलोग्राम के बंकर बस्टर वारहेड ले जाने और जमीन में 100 मीटर की गहराई तक जाकर दुश्मनों के न्यूक्लियर सिस्टम, रडार सिस्टम, कंट्रोल सेंटर, हथियार स्टोरेज को तबाह कर सकेगी। डिफेंस मिनिस्ट्री ने बुधवार को अग्नि-5 के सफल परीक्षण की जानकारी दी। अग्नि-5 भारत की पहली और एकमात्र इंटर कान्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल है, जिसे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने बनाया है। ये भारत के पास मौजूद लंबी दूरी की मिसाइलों में से एक है।

चीन और पाकिस्तान तक मार करने की क्षमता, भारत की पहली इंटर कॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल

भारतीय वायुसेना को मिलेंगे 97 एलसीए मार्क 1ए फाइटर जेट

नई दिल्ली। केंद्र सरकार नें भारतीय वायुसेना (आईएएफ) के लिए 97 एलसीए मार्क 1ए फाइटर जेट खरीदने के लिए 62 हजार करोड़ के प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी। रक्षा सूत्रों ने बताया कि एक हाई लेवल मीटिंग में फाइटर जेट की खरीद को अंतिम मंजूरी दे दी गई।

दिल्ली सीएम रेखा गुप्ता पर हमला

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर बुधवार सुबह सीएम आवास में जनसुनवाई के दौरान हमला हुआ।

दिल्ली सीएम ऑफिस ने बयान में कहा कि बुधवार को जनसुनवाई के दौरान एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री पर हमला किया। उसे दिल्ली पुलिस ने पकड़ लिया। पूछताछ की जा रही है। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि आरोपी ने सीएम का हाथ पकड़कर खींचा। वे मेज के कोने से टकराईं। सिर पर चोट आई है। मीडिया में चल रही थप्पड़ वाली बात गलत है। दिल्ली पुलिस ने आरोपी पर अटेम्प्ट टू मर्डर (हत्या की कोशिश) का केस दर्ज किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, आरोपी को बुधवार को ही कोर्ट में पेश भी किया गया। आरोपी का नाम राजेशभाई खीमजीभाई सकरिया (41) है। वह गुजरात के राजकोट का रहने वाला है।

NCERT ने ऑपरेशन सिंदूर पर स्पेशल मॉड्यूल किया जारी

नई दिल्ली। ऑपरेशन सिंदूर पर एनसीईआरटी (नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग) ने दो स्पेशल मॉड्यूल जारी किए हैं। इन्हें क्लास 3 से 12 तक के छात्रों के लिए सप्लीमेंट्री मटेरियल के तौर पर शामिल किया गया है। मॉड्यूल में बताया गया है कि पाकिस्तान भले ही पहलगाम आतंकी हमले में किसी भी तरह से शामिल होने से इन्कार करता है, लेकिन यह हमला पाकिस्तान की सैन्य और राजनीतिक लीडरशिप के सीधे आदेश पर हुआ था। ये मॉड्यूल स्कूली बच्चों के बीच भारत की सैन्य शक्ति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के मकसद से बनाए गए हैं। क्लास 3 से 8 के लिए मॉड्यूल का टाइटल ऑपरेशन सिंदूर-वीरता की गाथा और 9 से 12 तक के लिए मॉड्यूल का टाइटल ऑपरेशन सिंदूर- सम्मान और बहादुरी का मिशन है। एनसीईआरटी के स्पेशल मॉड्यूल रेगुलर कोर्स का हिस्सा नहीं होते। इसे कोई खास टापिक बच्चों को समझाने के लिए सप्लीमेंट्री मटेरियल के तौर पर तैयार किया जाता है।

नया विधेयक: 30 दिन हिरासत में रहे, तो माननीय खो देंगे पद

सरकार लाई बिल, मंजूरी के लिए जेपीसी को भेजा गया

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। लोकसभा ने प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या किसी भी मंत्री की गंभीर अपराध में गिरफ्तारी और 30 दिन तक न्यायिक हिरासत में रखे जाने पर उन्हें पद से हटाने के प्रावधान वाले संविधान संशोधन विधेयक तथा दो अन्य विधेयकों को विपक्ष के भारी विरोध और हंगामे के बीच संयुक्त संसदीय समिति को भेज दिया।

क्षुब्ध विपक्षी सदस्यों ने सदन में गृह मंत्री के ऊपर कागज के गोले भी फेंके। गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्ष के भारी विरोध के बीच संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, 2025, केंद्र शासित प्रदेश (संशोधन) विधेयक, 2025 तथा जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक 2025 संसद में पेश किया। विपक्षी दलों ने इन विधेयकों को विपक्षी दलों की सरकारों को लक्ष्य कर बनाया गया विधेयक करार देते हुए इसे वापस लेने की मांग की। विधेयक में प्रावधान है कि पांच वर्ष या उससे अधिक की सजा वाले गंभीर अपराधों में अगर प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या किसी अन्य मंत्री को 30 दिन की हिरासत में रखा जाता है, तो इसके अगले दिन ही उसे पदमुक्त समझा जाएगा। हिरासत से छूटने के बाद ऐसे व्यक्ति को फिर से पद दिया जा सकता है। श्री शाह ने विधेयक को संसद की संयुक्त समिति को भेजने का प्रस्ताव किया जिसे ध्वनिमत से स्वीकार कर लिया गया।

विपक्ष ने तीनों बिलों को वापस लेने की मांग की, सदन में गृह मंत्री के ऊपर कागज के गोले फेंके

टीम इंडिया की स्पॉन्सर ड्रीम-11 हो सकती है बैन

नई दिल्ली। लोकसभा में बुधवार को विपक्षी सदस्यों के हंगामे के बीच ऑनलाइन खेल संवर्धन एवं विनियमन विधेयक, 2025 ध्वनिमत से पारित किया गया। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने विधेयक को लेकर कहा कि डिजिटल प्रौद्योगिकी हाल के कुछ वर्षों में तेजी से फैल रही है। इससे शिक्षा और खेलों के क्षेत्र में सीखने के अनेक आसान उपाय एवं साधन उपलब्ध हुए हैं और लोगों के सीखने की गति तेज हुई है। उन्होंने कहा कि यह विधेयक ई-स्पोर्ट और ऑनलाइन सोशल गेम्स को प्रोत्साहित करता है।

अब्बास अंसारी की विधायकी होगी बहाल

प्रयागराज। उप्र के प्रयागराज में बुधवार को मुख्तार अंसारी के बेटे पूर्व विधायक अब्बास अंसारी को इलाहाबाद हाईकोर्ट से बड़ी राहत मिली है।

हाईकोर्ट ने अब्बास अंसारी की याचिका को मंजूर कर लिया और उनको एमपी- एमएलए स्पेशल कोर्ट मऊ से मिली दो साल की सजा रद्द कर दी है। बता दें कि अब्बास अंसारी ने सजा रद्द करने के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। जिस पर सुनवाई करते हुए जस्टिस समीर जैन ने अब्बास अंसारी की 2 साल की सजा को रद्द कर दिया है। अब अब्बास अंसारी की विधायकी बहाल हो जाएगी।

हाईकोर्ट ने दो साल की सजा पर रोक लगाई

मोदी की स्नातक डिग्री विवाद मामले में फैसला टला

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने पीएम मोदी की स्नातक डिग्री विवाद से संबंधित मामले में बुधवार को अपना फैसला टाल दिया। न्यायमूर्ति सचिन दत्ता की एकल पीठ ने इस मामले में सुनवाई पूरी होने के बाद 27 फरवरी को अपना फैसला सुरक्षित रखा लिया था। उन्होंने यह भी कहा कि डीयू को अदालत को रिकॉर्ड दिखाने में कोई आपत्ति नहीं है। हाईकोर्ट ने डीयू की याचिका पर सुनवाई के बाद 23 जनवरी, 2017 को सीआईसी के आदेश पर रोक लगा दी थी। सीआईसी ने 21 दिसम्बर, 2016 को आवेदक नीरज को उन सभी विद्यार्थियों के अभिलेखों के निरीक्षण की अनुमति दी थी, जिन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से 1978 में स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

राज्यपाल-सरकार रिश्ते पर सुप्रीम नजर

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को एक अहम टिप्पणी करते हुए कहा कि क्या आजादी के बाद से देश संविधान निर्माताओं की उस उम्मीद पर खरा उतरा है, जिसमें राज्यपाल और राज्य सरकार के बीच सामंजस्य और आपसी परामर्श की व्यवस्था की कल्पना की गई थी।

यह टिप्पणी पांच जजों की संविधान पीठ ने की, जिसकी अध्यक्षता चीफ जस्टिस बीआर गवई कर रहे हैं। इस पीठ में न्यायमूर्ति सूर्यकांत, विक्रम नाथ, पीएस नरसिम्हा और एएस चंद्रचूड़कर भी शामिल हैं। वहीं सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने केंद्र सरकार की ओर से पेश होकर कहा कि संविधान सभा में राज्यपाल की नियुक्ति और उनकी शक्तियों को लेकर गहन बहस हुई थी। अक्सर आलोचना होती है कि राज्यपाल का पद राजनीतिक शरण लेने वालों का ठिकाना है, लेकिन असल में यह पद संवैधानिक जिम्मेदारियों और कुछ निश्चित शक्तियों से जुड़ा हुआ है। पीठ राष्ट्रपति के उस राष्ट्रपति संदर्भ पर सुनवाई कर रही है, जिसमें सवाल उठाया गया है कि क्या सुप्रीम कोर्ट राज्यपाल और राष्ट्रपति को यह निर्देश दे सकता है कि वे राज्य विधानसभाओं से पास हुए बिलों पर तय समय सीमा के भीतर फैसला लें। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और अटॉर्नी जनरल से यह पूछा था कि आखिर क्यों कई राज्यों के विधानसभा से पास हुए बिल साल 2020 से ही राज्यपालों के पास लंबित पड़े हुए हैं। यह चिंता का विषय है, लेकिन अदालत संवैधानिक दायरे में रहकर ही अपनी राय देगी।

अदालत ने अहम टिप्पणी करते हुए कहा- संविधान निर्माताओं का सपना, हकीकत से कितना दूर

संक्षिप्त समाचार

राजीव गांधी की 81वीं जयंती, संसद में श्रद्धांजलि दी गई

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की बुधवार को 81वीं जयंती थी। इस मौके पर संसद में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी समेत कई सांसद शामिल हुए। इधर, कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे दिल्ली के वीर भूमि पहुंचे और उन्हें श्रद्धांजलि दी। कांग्रेस पूर्व पीएम के जन्मदिवस को दिवस के रूप में मना रही है। राहुल गांधी ने एक्स पर पापा राजीव गांधी की फोटो शेयर कर लिखा कि एक ऐसा भारत जहां हर नागरिक को सम्मान मिले, जहां सद्भावना हो, लोकतंत्र और संविधान से देश मजबूती से खड़ा हो। पापा, आपके देखे इस सपने को पूरा करना ही मेरा जीवन लक्ष्य है। पीएम मोदी ने कहा कि आज उनकी जयंती पर, पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी को मेरी श्रद्धांजलि।

मुंबई में लगातार तीसरे दिन स्कूल-कॉलेज दफ्तर बंद

नई दिल्ली। मुंबई में तेज बारिश का बुधवार को तीसरा दिन था। 24 घंटे में यहां 300 एमएम बारिश हुई। मुंबई में लगातार तीसरे दिन स्कूल-कॉलेज, गवर्नमेंट और सेमी-गवर्नमेंट ऑफिस बंद रहे। मुंबई लोकल की 34 ट्रेनें (17 जोड़ी) कैंसिल हैं। 250 से ज्यादा फ्लाइट्स पर भी असर पड़ा है। मंगलवार शाम मुंबई में एक मोनोरेल से करीब 800 लोगों को रेस्क्यू किया गया। मैसूर कॉलोनी रेलवे स्टेशन के पास शाम 6 बजे एक मोनोरल एलिवेटेड ट्रैक पर अटक गई थी। इसमें मौजूद 582 यात्रियों को विंडो तोड़कर क्रेन की मदद से करीब 40-50 फीट की ऊंचाई से रेस्क्यू किया गया।

अधर्म के खिलाफ जारी रहेगा युद्धः अखिलेश यादव

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ कहा-भाजपा वोट चोर है, चुनाव आयोग-जिलाधिकारी इनके साथी

लखनऊ। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने वोटी चोरी के मामले में भाजपा की केन्द्र और प्रदेश सरकार पर जमकर निशाना साधा और कहा कि यूपी में 2022 के विधानसभा चुनाव में नाम काटने को लेकर हमने जो 18000 शपथपत्र दिए थे, भाजपा सरकार उनमें से एक का भी जवाब सही तरीके से देना नहीं चाहती है। यहां तक की चुनाव आयोग ने भी कह दिया कि उन्हें कोई शपथपत्र नहीं मिला।

अखिलेश यादव ने कहा कि चुनाव आयोग की बात को यूपी के 3 जिलाधिकारियों ने झूठा करार दे दिया है। उन्होंने 18000 शपथपत्र मिलने की बात स्वीकारी है। जिस तरह कासगंज, बाराबंकी, जौनपुर के डीएम हमारे 18000 शपथपत्रों के बारे में अचानक अति सक्रिय हो गए हैं, उसने एक बात तो साबित कर दी है कि जो चुनाव आयोग कह रहा था कि एफिडेविट की बात गलत है' एफिडेविट नहीं मिले, उनकी वो बात झूठी निकली। अब सतही जवाब देकर खानापूर्ति करने वाले इन जिला. धिकारियों की संलिप्तता की भी जांच होनी चाहिएख कोर्ट संज्ञान ले, चुनाव आयोग या डीएम में से कोई एक तो गलत है ही न? जो सीसीटीवी पर पकड़े गए हों उनके द्वारा अपने घपलों पर दी गई सफाई पर किसी को भी रत्ती भर विश्वास नहीं है। ऐसे भ्रष्ट लोग न तो अपने ईमान के सगे होते हैं, न परिवार, न समाज के, तो फिर भला अपने साझेदारों के कैसे होंगे।

ये बेईमान लोग देश और देशवासियों से ताउम्र दगा करते हैं और अंततः पकड़े जाने पर अपमान से भरी जिंदगी जीने की सजा काटते हैं। भाजपा सरकार, चुनाव आयोग और स्थानीय प्रशासन की मिलीभगत वो 'चुनावी तीन तिगाड़ा' है, जिसने सारा काम बिगाड़ा है, देश के लो. कतंत्र पर डाका डाला है। अब जनता इस 'त्रिगुट' की अदालत लगाएगी। जिलाधिकारी को आगे करके चुनाव आयोग बच नहीं सकता। इस मामले की गहन जांच-पड़ताल हो। डीएम साहब दिखाएं कि नाम काटते समय जो 'मृतक प्रमाणपत्र' लगाए गए थे वो कहां हैं, अगर ये झूठ नहीं है तो ये सफाई देने में इतने साल क्यों लग गए? अखिलेश ने कहा कि किसानों की स्थिति लगातार बिगड़ रही है। सरकार किसानों को खाद तक नहीं दे पा रही है। अयोध्या में किसान खाद के लिए घंटों लाइनों में खड़े हैं, ये लोग किसानों की आय दोगुनी करने की बात करते थे, लेकिन आज किसान लागत भी नहीं निकाल पा रहे। आलू किसान बुरी तरह से परेशान हैं।

राहुल गांधी के साथ यूपी चुनाव लड़ने के सवाल पर अखिलेश यादव ने कहा कि यह धर्मयुद्ध है और इसमें साथ आना पड़ेगा। चुनाव आयोग पर बोलते हुए उन्होंने भाजपा पर वोट चोरी का आरोप लगाया कि भाजपा वोट चोर है। ये लोग वोटों को त्रिकोण बनाकर चोरी करते हैं, जिसमें चुनाव आयोग और अधिकारी तक शामिल हो जाते हैं, लेकिन, 2027 का चुनाव हम कार्यकर्ताओं के सहयोग से लड़ेंगे और वोट चोरी नहीं करने देंगे।

देश को पुलिस स्टेट बनाने की साजिश

पीएम-सीएम व मंत्रियों को हटाने वाले विधेयक पर बोले ओवैसी

नई दिल्ली, वार्ता

■ इससे कार्यकारी एजेंसियों को खुली छूट मिल जाएगी कि वे मामूली आरोपों और शक के आधार पर ही जज व जल्लाद दोनों बन जाएं

लोकसभा में बुधवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तीन अहम विधेयक पेश किए, जिन पर संसद के अंदर तीखी बहस और हंगामा देखने को मिला।

एआईएमआईएम सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने इन तीनों विधेयकों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने कहा कि यह बिल संविधान में निहित शक्ति-विभाजन के सिद्धांत का उल्लंघन है और जनता के जरिए चुनी हुई सरकारों के अधिकार को कमजोर करता है। ओवैसी ने कहा कि इससे कार्यकारी एजेंसियों को खुली छूट मिल जाएगी कि वे मामूली आरोपों और शक के आधार पर ही जज और जल्लाद दोनों बन जाएं। ओवैसी ने संसद में कहा कि यह सरकार किसी भी कीमत पर देश को 'पुलिस स्टेट' में बदलने पर तुली हुई है। उनके अनुसार यह कदम चुनी हुई सरकारों पर सीधा हमला है और लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर करने वाला है।

उन्होंने चेतावनी दी कि अगर इन विधेयकों को लागू किया गया, तो यह भारत के लोकतंत्र पर 'डेथ नेल' (अंतिम वॉर) साबित होगा। ओवैसी ने इसे संविधान के साथ छेड़छाड़ कर जनता की आवाज दबाने की को. शिश बताया। ओवैसी के बयान के बाद विपक्षी दलों ने भी सरकार पर निशाना साधा। उनका आरोप है कि भाजपा सत्ता के केंद्रीकरण और कार्यपालिका को असीमित ताकत देने का काम कर रही है। विपक्ष का कहना है कि इससे न्यायपालिका की भूमिका कमजोर होगी और लोकतंत्र केवल नाम का रह जाएगा। इन विधेयकों को लेकर संसद के बाहर भी राजनीतिक टकराव तेज हो गया है और आने वाले दिनों में यह मुद्दा बड़ी बहस का कारण बनेगा।

राधाकृष्णन ने उप राष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन किया

नई दिल्ली, वार्ता

■ राजग के 160 सदस्य नामांकन के समय उपस्थित रहे

उप राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौजूदगी में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। इस ऐतिहासिक मौके पर प्रधानमंत्री उप राष्ट्रपति उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन के प्रस्तावक बने।

इस अवसर पर उनके साथ मोदी के अलावा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा और राजग सहयोगी दलों के वरिष्ठ नेता तथा जनता दल यूनाइटेड से ललन सिंह और संजय झा, लोजपा (रामविलास) से चिराग पासवान, केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी के अलावा और भी कई केन्द्रीय मंत्री मौजूद थे। श्री राधाकृष्णन का नामांकन चार सेटों में दाखिल हुआ है। जिनमें से प्रत्येक पर 20 प्रस्तावकों और 20 अनुमोदकों के हस्ताक्षर हैं। पहले सेट में मुख्य प्रस्तावक के रूप में प्रधानमंत्री मोदी के हस्ताक्षर हैं, जबकि बाकी सेटों में केंद्रीय मंत्रियों और वरिष्ठ राजग नेताओं के हस्ताक्षर हैं, जो गठबंधन में व्यापक सहमति को दर्शाता है। उप राष्ट्रपति उम्मीदवार राधाकृष्णन के इस ऐतिहासिक मौके पर संसद भवन में नामांकन पत्र दाखिल करने के दौरान मंत्रियों और सांसदों सहित राजग के लगभग 160 सदस्य उपस्थित रहे।

दायित्वों के निर्वहन में लापरवाही बरतने के आरोप में 10 अन्य को भी नोटिस

यूपी के तीन जिलों के कृषि अधिकारी सस्पेंड

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ खाद की कमी पर सवाल उठाए जाने पर मंत्री सूर्यप्रताप शाही ने कहा अखिलेश को बोलने का कोई हक नहीं

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा है कि पदीय दायित्वों का निर्वहन में लाप. रवाही बरतने के आरोप में तीन जिलों के जिला कृषि अधिका. रियों को निलंबित करने के साथ ही दस अन्य लोगों को नोटिस जारी की जा रही है।

उन्होंने कहा कि नोटिस उन लोगों को जारी की जा रही है, जिनके पास खेत कम है और उन्होंने खाद ज्यादा उठा ली है। यहां कृषि भवन में बुधवार को आयोजित प्रेस कांफ्रेंस के दौरान कृषि मंत्री ने कहा कि जिन जिला कृषि अधिकारियों को निलंबित किया गया है। उनमें मंजीत कुमार सिंह, जिला कृषि अधिकारी बलरामपुर प्रकाश चंद्र विश्वकर्मा और अशोक प्रसाद मिश्र जिला कृषि अधिकारी श्रावस्ती शामिल है। प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में खाद की कालाबाजारी को लेकर रिपोर्ट मंगाई जा रही है। जांच के बाद उन पर कार्रवाई की जाएगी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा खाद की कमी पर सवाल उठाए जाने को लेकर कृषि मंत्री ने कहा कि अखिलेश को बोलने का कोई हक नही है। उनके समय मे खरीफ सीजन में केवल 91.45 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में खरीफ फसलों की बुवाई हुई थी, जबकि किसानों को समय से उन्नत बीज खाद पानी सिंचाई संसाधनों में निरंतर वृद्धि के परिणाम स्वरुप वर्ष 2023 24 में खरीफ के फसलों का आच्छादन बढ़कर 101-आई 8 हेक्टेयर हो गया है। 2024 में यह क्षेत्रफल 105.93 लाख हेक्टेयर हो गया है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में सरकार बनते ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 36000 किसानों की ऋण माफी की थी। कृषि मंत्री ने बताया कि महाराजगंज में जून माह के दौरान 186 लोग ऐसे पाए गए हैं। जिन्होंने एक मीट्रिक टन से लेकर 2.375 मीट्रिक टन तक यूरिया का क्रय किया गया है। इन लोगों के द्वारा चार बार से लेकर 13 बार तक खाद का क्रय किया गया है। जांच के दौरान यदि कालाबाजारी पाई जाती है तो उनके विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी।

राज्य कर विभाग ने बीमा कंपनियों को जारी किया नोटिस

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह विभाग के राजस्व वृद्धि को बढ़ाने की कवायद के तहत रियल एस्टेट और खनन जैसे क्षेत्रों की तर्ज पर बीमा कंपनियों पर अपना ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया है। राज्य कर विभाग ने उत्तर प्रदेश में राज्य जीएसटी के तहत पंजीकृत सभी बीमा कंपनियों को नोटिस जारी कर लगभग 40 प्रश्नों के उत्तर मांगे हैं, ताकि यह सत्यापित किया जा सके कि क्या वे प्रीमियम पर ग्राहकों से वसूला गया पूरा जीएसटी जमा कर रही हैं अथवा नहीं। पहली बार, विभाग ने अपने मुख्यालय में एक संयुक्त आयुक्त के अधीन सेंटर भी स्थापित किया है ताकि यह जांच की जा सके कि क्या बीमा कंपनियां कर-संबंधी शिकायतों में लिप्त हैं या किसी प्रकार की अनियमितता में लिप्त हैं जिससे राज्य के खजाने को राजस्व का नुकसान हो रहा है।

सेंसेक्स 81857.84

निफ्टी 25000

सोना रु. 98803

प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 111225

प्रति किलो

आईटी, एफएमसीजी में लिवाली से गुलजार हुआ शेयर बाजार

मुंबई, वार्ता

आईटी, एफएमसीजी और रियलिटी क्षेत्रों की कंपनियों में लिवाली से बुधवार को घरेलू शेयर बाजारों में तेजी रही और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (सूचकांक) का निफ्टी-50 सूचकांक करीब चार सप्ताह बाद 25,000 अंक के पार बंद हुआ।

बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 213.45 अंक (0.26) प्रतिशत की तेजी के साथ 81,857.84 अंक पर पहुंच गया। आईटी सेक्टर में लिवाली से इंफोसिस और टीसीएस के शेयरों में सबसे अधिक तेजी रही। नेशलन स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक कारोबार की समाप्ति पर 69.90 अंक यानी 0.28 फीसदी की बढ़त में 25,050.55 अंक पर रहा। यह गत 24 जुलाई के बाद पहली बार 25 हजार अंक के पार बंद हुआ है। दोनों प्रमुख सूचकांकों में सुबह मामूली उतार-चढ़ाव था, लेकिन बाद में उनका ग्राफ लगातार ऊपर की ओर बढ़ता गया। मजबूत निवेश धारणा के कारण संसेक्स और निफ्टी-50 लगातार पांचवें दिन मजबूती के साथ बंद हुए हैं। आईटी कंपनियों में निवेशकों ने जमकर लिवाली की और निफ्टी आईटी 2. 69 प्रतिशत चढ़ गया। निफ्टी एफएमसीजी और निफ्टी रियलिटी में भी एक प्रतिशत से अधिक की तेजी रही। बैंकिंग, वित्तीय सेवा, फार्मा और स्वास्थ्य क्षेत्र के सूचकांक लाल निशान में रहे। संसेक्स 27.08 अंक की तेजी के साथ 81,671.47 अंक पर खुला। खुलने के तुरंत बाद यह 81,494.50 अंक तक उतर गया। इसका दिवस का उच्चतम स्तर 81,985.62 अंक रहा। निफ्टी-50 सूचकांक 14.85 अंक की गिरावट में 24,965.80 अंक पर खुला। यह नीचे 24,929.70 अंक और ऊपर 25,088.70 अंक तक गया। ज्यादा शेयरों पर आधारित निफ्टी-100 सूचकांक भी 0.30 अंक की बढ़त में रहा। मझौली और छोटी कंपनियों में लिवाली से निफ्टी मिडकैप-50 में 0.57 फीसदी और स्मॉलकैप-100 में 0.46 फीसदी की तेजी रही।

सोने और चांदी के भाव में रही गिरावट

नई दिल्ली। सोने-चांदी के दाम में बुधवार को भारी गिरावट देखी गई। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार 24 कैरेट सोने का दाम 365 रुपए गिरकर 98,803 रुपए प्रति 10 ग्राम पर आ गया है। चांदी की कीमत भी 2,400 रुपए कम होकर 1,11,225 रुपए प्रति किलो हो गई है। इससे पहले चांदी 1,13,625 रुपए पर थी। देश के महानगरों दिल्ली में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,003,00 और 22 कैरेट सोने की कीमत 91,950 रुपये रही, जबकि मुंबई में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,00,150 और 22 कैरेट सोने की कीमत 91,800थी। कोलकाता में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,00,150 और 22 कैरेट सोने की कीमत 91,800 रही, वहीं चेन्नई में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,00,150 और 22 कैरेट सोने की कीमत 91,800 रही, जबकि भोपाल में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,00,200 और 22 कैरेट सोने की कीमत 91,850 रही। इस साल यानी 1 जनवरी से अब तक 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का दाम 76,162 रुपए से 22,641 रुपए बढ़कर 98,803 रुपए पर पहुंच गया है। चांदी का भाव भी 86,017 रुपए प्रति किलो से 25,208 रुपए बढ़कर 1,11,225 रुपए पर पहुंच गया है। पिछले साल यानी 2024 में सोना 12,810 रुपए महंगा हुआ था।

गेहूं महंगा, चावल हुआ सस्ता, दालों व खाद्य तेलों में रही तेजी

नई दिल्ली। घरेलू थोक जिंस बाजारों में बुधवार को चावल के औसत भाव टूट गए, जबकि गेहूं में तेजी देखी गयी। चीनी के भाव में लगभग टिकाव रहा, जबकि दालें और खाद्य तेल महंगे हो गए। विदेशों में मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का नवंबर वायदा 24 रिगिंट फिसलकर 4,497 रिगिंट प्रति टन बोला गया।

अमेरिकी सोया तेल वायदा भी 0.58 प्रतिशत की गिरावट के साथ 51.51 डॉलर के भाव बोला गया। घरेलू थोक जिंस बाजारों में चावल की औसत कीमत 14 रुपए फिसलकर 3,819.41 रुपए प्रति क्विंटल पर लगभग स्थिर रही। गेहूं चार रुपए प्रति क्विंटल बढ़कर 2,841.09 रुपए प्रति क्विंटल के भाव बिका। वहीं, आटा 3,293.57 रुपए प्रति क्विंटल पर लगभग स्थिर रहा। सरसों तेल औसतन

करीब 72 रुपए प्रति क्विंटल महंगा हो गया। मूंगफली तेल 54 रुपए फिसल गया, जबकि वनस्पति में 65 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी रही। पाम ऑयल आठ रुपए प्रति क्विंटल महंगा हुआ। सूरजमुखी तेल में 44 रुपए की तेजी रही। सोया तेल भी 57 रुपए प्रति क्विंटल महंगा हुआ। दाल-दलहनों में मसूर दाल औसतन दो रुपए प्रति क्विंटल महंगी हो गयी। तुअर दाल और मूंग दाल के दाम लगभग स्थिर रहे। चना दाल तीन रुपए और उड़द दाल 12 रुपए प्रति क्विंटल महंगी हो गई। गुड़-चीनी : बाजार में गुड़ की औसत कीमत करीब चार रुपए बढ़ गयी। चीनी की कीमतों में कमोबेश टिकाव रहा।

भारतीय प्रबंधन संस्थान विधेयक राज्यसभा में ध्वनिमत से पारित

नई दिल्ली। राज्यसभा ने असम के गुवाहाटी में भारतीय प्रबंधन संस्थान खोलने से संबंधित भारतीय प्रबंधन संस्थान (संशोधन) विधेयक 2025 बुधवार को विपक्ष के बहिर्गमन के बीच ध्वनिमत से पारित कर दिया। इसके साथ ही विधेयक पर संसद की मुहर लग गई है। लोकसभा इसे पहले ही पारित कर चुकी है।

विपक्षी सदस्यों ने बिहार में मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण के मुद्दे पर चर्चा कराए जाने की मांग नहीं माने जाने पर जोरदार हंगामा किया और सदन से बहिर्गमन किया। विपक्ष के हंगामे के कारण दो बार के स्थगन के बाद पीठासीन उप सभापति भुवनेश्वर कलिता ने अपराह्न दो बजे सदन की कार्यवाही शुरू करते हुए शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान से भारतीय प्रबंधन संस्थान संशोधन विधेयक चर्चा और पारित करने के लिए कहा। प्रधान के बोलने के लिए खड़े होते ही विपक्षी सदस्यों ने मतदाता सूची के मुद्दे पर चर्चा कराने की मांग शुरू कर दी। विपक्षी सदस्य आसन के निकट आकर नारेबाजी करने लगे। इस पर कलिता ने विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे को अपनी बात रखने की अनुमति दी। खड़गे ने मतदाता सूची के मुद्दे को उठाने की कोशिश की, लेकिन आसन ने उन्हें इसकी अनुमति नहीं दी। आसन ने कहा कि आप इस विधेयक के अलावा और किसी विषय पर बात नहीं रख सकते। विपक्ष के सदस्य इसके विरोध में नारेबाजी करते हुए सदन से बहिर्गमन कर गए। इसके बाद सदन ने संक्षिप्त चर्चा और शिक्षा मंत्री द्वारा उसका जवाब दिए जाने के बाद विधेयक को ध्वनिमत से पारित कर दिया। विपक्ष के सदस्यों ने विधेयक के कुछ प्रावधानों पर संशोधन के प्रस्ताव दिए थे, लेकिन सदस्यों के सदन से अनुपस्थित रहने के कारण इन्हें सदन में नहीं रखा जा सका। विधेयक में गुवाहाटी में भारतीय प्रबंधन संस्थान की स्थापना का प्रावधान है। संस्थान के पहले निदेशक मंडल के गठन तक इसका कामकाज केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त व्यक्ति संभालेंगे। इस संस्थान पर 5500 करोड़ रूपए की लागत आएगी। विधेयक में भारतीय प्रबंधन संस्थान अधिनियम 2017 में संशोधन के साथ-साथ भारतीय प्रबंधन संस्थानों को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान घोषित करने और उनके कामकाज को विनियमित करने के प्रावधान किए गए हैं।

वैधानिक सूचना

पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर कार्यवाही करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल कर लें तथा उचित सलाह ले लें। कोई भी अभिदाता जो इस अखबार में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संदर्भ में कोई राशि भेजता है, किसी चिकित्सीय सलाह पर कोई कार्यवाही या खर्च करता है या कोई वचन देता है, तो ऐसा वह स्वविवेक, बुद्धि तथा जोखिम पर करेंगे। कम्पनी, प्रकाशक या उसका कोई कर्मचारी विज्ञापनदाता या उसके किसी उत्पाद या सेवा हेतु किये गये किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन नहीं देते तथा ऐसे विज्ञापनों विश्वास करके किसी व्यक्ति को हुई क्षति, हानि परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

हंगामें की भेंट चढ़ा विधानसभा का मॉनसून सत्र

चार दिवसीय सत्र डेढ़ दिन में खत्म

शाह टाइम्स संवाददाता

गैरसैंण। उत्तराखंड की ग्रीष्मकाल. ीन राजधानी गैरसैंण के भराड़ीसैंण में 19 अगस्त से शुरू हुआ विधानसभा का मॉनसून सत्र दूसरे दिन 20 अगस्त को ही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया है। विधानसभा मॉनसून सत्र का दूसरा दिन भी पहले दिन की तरह की हंगामेदार रहा, विपक्ष अपनी मांगों पर अड़ा रहा, इसी बीच सरकार की ओर से 9 विधेयक और 5,315.89 करोड़ का अनुपूरक बजट पास कराया गया।

पहले दिन सदन की कार्यवाही स्थगित होने के बाद से जारी विपक्षी विधायकों का धरना रात भर चला, बुधवार सुबह भी विपक्ष का धरना जारी रहा, सरकार की लाख को. शिशों के बावजूद भी विपक्ष नहीं माना। विपक्ष की और से जिला अधिकारी नैनीताल का तबादला करने, एसएसपी को निलंबित करने और कांग्रेस नेताओं पर से मुकदमा वापसी की मांग की जाती रही।

हालांकि, सरकार ने 5,315 करोड़ रुपए का अनुपूरक बजट और 9 विधेयक भी पास किए।

कांग्रेस विधायकों के रवैया पर भाजपा विधायकों और मंत्रियों ने कड़ी आपत्ति जताई। विधायकों कहा कि विपक्ष के हंगामे के चलते सदन की कार्यवाही नहीं चल पाई, इससे जनहित के मुद्दे सदन में नहीं उठे। विधानसभा का चार दिवसीय मानसून सत्र डेढ़ दिन में ही खत्म कर दिया गया। इस दौरान सदन में उत्तराखंड अल्पसंख्यक विधेयक, समान नागरिक संहिता संशोधन विधेयक भी पारित हुआ। नए प्रावधानों के तहत गलत तरीके से लिव-इन-रिलेशनशिप में रहने वालों के लिए सजा बढ़ा दी गई है। सदन में संशोधित सख्त धर्मांतरण कानून भी पास किया गया। अब जबरन धर्मांतरण पर उम्रकैद तक की सजा का प्रावधान होगा।

सत्र के दौरान कांग्रेस ने तीखा प्रदर्शन किया। निर्दलीय विधायक संजय डोभाल भी विपक्षी विधायकों के साथ धरना-प्रदर्शन में शामिल हो गए। इसी बीच कांग्रेस विधायक सुमित हृदयेश ने सदन में कागज फाड़कर उछाले, जिससे माहौल और गर्मा गया।

सत्र चलाने में सहयोग नहीं करना चाहता था विपक्षः धामी

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने कहा कि बड़ी कठिनाइयों और मानसून की परेशानियों के बावजूद सभी लोग भराड़ीसैंण पहुंचे, मगर विपक्ष भराड़ीसैंण में सत्र चलाने के मूड में नहीं था। कल यानी 19 अगस्त को 1 घंटा 45 मिनट में 8 बार सदन को स्थगित करना पड़ा। सीएम धामी ने कहा कि उन्होंने सत्र से पहले नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य से मुलाकात की थी और सत्र को सुचारू चलाने की अपील की थी। इस सत्र में सरकार ने कई तैयारी की थी। धराली और पौड़ी में भीषण आपदाएं आई थी, सरकार और सत्ता पक्ष के विधायक आपदा के विषय पर नियम 310 के तहत चर्चा करने के पक्ष में थे, लेकिन विपक्ष ने सस्ती लोकप्रियता के लिए हंगामा किया। सीएम धामी ने कहा कि अनुपूरक बजट पर चर्चा होनी थी, देहरादून में रिस्पना और बिंदाल एलिवेटेड रोड के लिए बजट की व्यवस्था की गई है। वहीं, पंचायत चुनाव पर सीएम धामी ने कहा कि देहरादून और बाजपुर में कांग्रेस चुनाव जीती है, वहां से कोई सवाल नहीं आया, केवल नैनीताल का विषय आया और वहां पर सरकार की ओर से कार्रवाई की जा रही है।

विपक्ष के आचरण पर स्पीकर हुई खफा

देहरादून। दो दिनों तक चलने वाली सदन की कार्यवाही कुल 2 घंटे 40 मिनट ही चल पाई, ऐसे में विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूड़ी ने भी भी विपक्ष के इस आचरण पर नाराजगी जाहिर की। ऋतु खंडूड़ी ने कहा कि विपक्ष को सदन की कार्यवाही चलाने में सहयोग देना चाहिए था, मगर विपक्ष कल से ही लगातार हंगामा कर रहा है, इसे सदन की कार्यवाही नहीं चल पाई।

भ्रष्टाचार व जनविरोधी नीतियों की स्याह हकीकत को जनता से छुपाना चाहती है सरकार

सदन में सरकार चर्चा से क्यों घबराईः प्रीतम

शाह टाइम्स संवाददाता

गैरसैंण। मानसून सत्र को दूसरे दिन अनिश्चितकाल के लिये स्थगित किये जाने के बाद प्रेस से वार्ता करते हुए कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व चकराता विधायक प्रीतम सिंह ने कहा कि सत्ता में बैठे लोगों का एकमात्र ध्येय देश के अंदर जो सामाजिक सौहार्द है उसे दूषित करना है। कहा कि सदन में सरकार चर्चा से क्यों घबरा रही हैं। प्रदेश की ध्वस्त कानून व्यवस्था, दैवीय आपदा प्रबंधन में घोर विफलता, प्रत्येक स्तर पर हो रहे व्यापक भ्रष्टाचार और जनविरोधी नीतियों की स्याह हकीकत को प्रदेश की जनता के सामने बेनकाब होने से भयभीत सरकार ने सत्र को डेढ़ दिन में ही किया अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर दिया है। कहा कि आमजन ने देखा है कि प्रदेश में कानून व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। पंचायत चुनावों में पुलिस व प्रशासन के संरक्षण में अराजक व गुंडा तत्वों की और से सरेआम लो. कतंत्र की हत्या का घृणित खेल सत्ता में बैठे लोगों की और से खेला गया। उत्तरकाशी के धराली, जिला पौड़ी और सीमांत जनपद पिथौरागढ़ में आई दैवीय आपदा के प्रबंधन और राहत बचाव कार्यों में सरकार की घोर विफलता प्रदेश के लोगों ने देखी है। आपदा के दौरान सत्ता में बैठे लोग पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर वोट चोरी के कृत्यों में लिप्त थे। पूरी सरकार आकंठ भ्रष्टाचार में डूबी हुई है, सरकार की जनविरोधी नीतियों से आमजन त्रस्त हो चुका है।

कांग्रेसियों ने आपदा में दिवंगत हुए मृतकों को दी श्रद्धांजलि

गैरसैंण (भराड़ीसैंण)। कांग्रेस विधायकों ने बुधवार को देवभूमि उत्तराखंड के जनपद उत्तरकाशी के धराली व हर्षिल, जनपद पौड़ी, जनपद पिथौरागढ़ सहित अन्य जगहों पर आई दैवीय आपदा में असमय काल कलवित हुए सभी मृतकों की आत्मशांति के लिये कैंडल जलाकर व दो मिनट का मौन रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रीतम सिंह ने कहा कि ईश्वर से प्रार्थना है कि शोकाकुल परिजनों को इस असीम दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

यशपाल व प्रीतम सिंह ने कार्यमंत्रणा समिति से दिया इस्तीफा

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड विधानसभा के मानसून सत्र में विपक्ष की मांगे न माने जाने और बिना कार्यमंत्रणा को विश्वास में लिए सदन की कार्यवाही को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किए जाने से आहत नेता प्रति पक्ष यशपाल आर्य व कांग्रेस विधायक प्रीतम सिंह ने कार्यमंत्रणा समीति से इस्तीफा दे दिया है।

आर्य ने कहा कि नैनीताल, बेतालघाट, रुद्रप्रयाग, बागेश्वर और उधमसिंह नगर में पुलिस के संरक्षण में हुई अपराधिक घटनाओं ने देवभूमि उत्तराखण्ड को कुशासन वाले राज्यों की पंक्ति में खड़ा कर दिया है। ये घटनाएं तब हो रही थी जब राज्य के उत्तरकाशी जिले के धराली सहित कही हिस्सों में आपदा ने तबाही मचा रखी थी। सरकार और सत्ता दल भाजपा का ध्यान आपदा राहत के बजाय पंचायत पदों के अपहरण करने पर था।

इन शर्मनाक घटनाओं के तुरंत बाद हो रहे विधानसभा के मानसून सत्र से हमें बड़ी आशा थी। पूरा विपक्ष चाहता था कि, पंचायत चुनावों में हुई गुंडागर्दी और कानून व्यवस्था की स्थिति के कारण राज्य में संवैधानिक संकट आया है इसलिए चर्चा नियम 310 के तहत होनी चाहिए। विपक्ष आपदा पर भी नियम 310 के तहत चर्चा चाहता था।

सरकार ने यहां भी निराश किया। कार्य मंत्रणा समिति की बैठक के बिना विधानसभा के सत्र को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया। हम चाहते थे कि, राज्य के निवासियों की आकांक्षा के प्रतीक गैरसैण में इस सभी विषयों पर नियम 310 में चर्चा होकर कुछ ठोस निष्कर्ष निकले परन्तु सरकार इन गंभीर विषयों को टालना चाहती थी। सरकार राज्य के सर्वोच्च सदन विधानसभा को भी अपने हिसाब से चलाना चाहती है।

इन परिस्थितियों में हमारा कार्य मंत्रणा समिति में रहना सार्थक नहीं है। उन्होंने कहा कि, अतः कांग्रेस विधानमंडल की ओर से कार्य मंत्रणा समिति में चुने सदस्य के रूप में मैने और मेरे वरिष्ठ साथी प्रीतम सिंह ने इस्तीफा देने का निश्चय किया है।

भाजपा सांसद ने कांग्रेस पर लगाया स्वार्थपरक राजनीति का आरोप

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून । भाजपा ने कांग्रेस पर स्वार्थपरक राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा कि जन मुद्दों पर सजग रहने के बजाय विपक्ष सदन मे सो गया और उसकी निंद्रा नही टूटी। विपक्ष का सड़क से सदन के भीतर जन मुद्दों पर लड़ने की बात भी शिगूफा ही साबित हुई।

प्रदेशाध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट ने निशाना साधा कि आपदा के जख्मों पर मरहम लगाने के बजाय विपक्षी नेताओं ने अपने ऊपर लगे मुकद्दमों को लेकर हंगामा किया। वहीं सत्र समाप्ति को उचित बताते हुए कहा, सदन सिर्फ हंगामा करने, नींद लेने और राजनी. ति के लिए ही नही चलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने गैरसैण सत्र में विपक्षी विधायकों द्वारा सदन में की गई तोड़फोड़ और अराजकता की कड़े शब्दों में निंदा की है। भट्ट ने कहा कि आज प्रदेश धराली, पौड़ी आदि अनेकों स्थानों पर आपदा के दंश का सामना कर रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के नेतृत्व में शासन प्रशासन जनता के सहयोग से राहत बचाव कार्यों के संचालन और प्रभावितों को मदद पहुंचाने में लगा है। ऐसे में सहयोग के हाथ बढ़ाने के बजाय कांग्रेस पार्टी लगातार नकारात्मक राजनीति कर रही है। उनके नेताओं द्वारा लगातार रेस्क्यू ऑपरेशन और राहत राशि को लेकर अफवाह फैलाई गई। उन्होंने कहा कि जनभावनाओं का सम्मान करते हुए सरकार द्वारा पहले से ही गैरसैण में मानसून सत्र आहूत किया हुआ था। बेहतर होता कि सत्र के आगाज में त्रासदी से जान गंवाने और किसी भी तरह का नुकसान उठाने वालों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए, विस्तृत चर्चा होती। पक्ष विपक्ष बैठकर आपदा में राहत बचाव कार्यों और भविष्य की योजनाओं को लेकर एक सर्वव्यापी और सर्वसमावेशी मापदंड और नीति तैयार करने पर विचार करते।

विपक्षी सदस्यों के व्यवहार के विरोध में भाजपा विधायकों ने किया प्रदर्शन

कहा – सदन के भीतर अमर्यादित व्यवहार कर रही कांग्रेस

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

गैरसैंण । उत्तराखंड विधानसभा मानसून सत्र के दूसरे दिन बुधवार को सदन की कार्यवाही शुरू हुई तो विपक्ष के विरोध के बीच सत्ता पक्ष के विधायक भी उग्र नजर आए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सदन के भीतर अमर्यादित व्यवहार कर रही है। कांग्रेस के विधायक यहां केवल पिकनिक मनाने आए हैं।भाजपा विधायकों ने जहां सदन में तख्तियां लेकर प्रदर्शन किया तो पहली बार सदन के बाहर भी रैली निकालकर विपक्ष का विरोध जताया।

मानसून सत्र में विपक्ष के रुख को देखते हुए पहले दिन शांत रहने वाले सत्ता पक्ष के विधायक दूसरे दिन उनके विरोध में उतर आए। बुधवार को सुबह जैसे ही सदन की कार्यवाही शुरू हुई तो विपक्ष के विरोध के बीच सत्ता पक्ष के विधायक भी उग्र नजर आए। उनका कहना था कि कांग्रेस सदन के भीतर अमर्यादित व्यवहार कर रही है। कांग्रेस के विधायक यहां केवल पिकनिक मनाने आए हैं। जनहित का एक भी मुद्दा कांग्रेस ने नहीं उठाया। धराली आपदा और राज्य के विकास के विषयों से कांग्रेस भाग रही है। सत्ता पक्ष के विधायक हाथ में तख्तियां लेकर सदन में पहुंचे, जिस पर कांग्रेस विरोधी स्लोगन लिखे थे। हालांकि विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूड़ी भूषण के निर्देश के बाद सभी तख्तियां हटाई गईं। विपक्ष के विरोध के बीच लगातार सत्तापक्ष के विधायक भी बोलते रहे। कई बार छींटाकशी भी हुई, जिसमें दोनों के बीच विवाद की स्थिति पैदा हुई। हालांकि संसदीय कार्यमंत्री सुबोध उनियाल के बीच-बचाव करने के बाद मामला शांत हो गया। इसके बाद सत्ता पक्ष के विधायकों ने सदन के बाहर रैली निकालकर विपक्ष का विरोध जताया। उनका कहना था कि कांग्रेस विधायकों ने लोकतंत्र का अपमान किया है। लो. कतांत्रिक प्रक्रिया की गरिमा को तार-तार किया है। भाजपा के रुद्रप्रयाग विधायक भरत चौधरी का कहना था कि जिस तरह से विपक्ष ने गैर जिम्मेदाराना हरकत सदन के अंदर की है। सदन की संपत्ति को क्षति पहुंचाई है। चर्चा से वो भाग रहे हैं, पंचायत चुनाव में मिली हार से वो बुरी तरह बौखलाए हुए हैं। विधायक सुरेश गडिया का कहना था कि धराली आपदा से बहुत नुकसान हुआ है। हमारे लोग कष्ट में हैं।

कांग्रेस के विरोध में भाजपा विधायकों ने की विधानसभा परिक्रमा

गैरसैंण के भराड़ीसैंण विधानसभा सदन के अंदर कांग्रेस के लगातार प्रदर्शन से भाजपा विधायकों ने गुस्सा जाहिर किया। कांग्रेस द्वारा सदन ना चलने देने पर भाजपा विधायकों ने विधानसभा की परिक्रमा की।

विपक्ष ने जन आकांक्षाओं का गला घोंटा हैः महाराज

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून/गैरसैंण। प्रदेश के पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने कहा है कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने जन आकांक्षाओं का सम्मान करते हुए गैरसैंण में विधानसभा सत्र आयोजित करने का निर्णय लिया था। लेकिन विपक्ष ने हंगामे और सदन की कार्यवाही में बार अवरोध खड़े कर सदन की मर्यादा को तार-तार करने के साथ-साथ विपक्ष की भूमिका निभाने में भी असफल रहा है।

महाराज ने कहा कि सदन में विपक्ष का जो आचरण रहा है वह घोर निंदनीय था। विपक्ष कानून व्यवस्था की स्थिति पर चर्चा चाहता था, लेकिन खुद नियम-कानून का पालन करने को तैयार नहीं था। निकाय चुनाव और हाल ही में संपन्न राज्य के 10 पंचायत निकायों के चुनावों में भाजपा को मिले जनादेश से विपक्ष निराशा और हताशा में है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सरकार ने पहाड़ के हितों एवं जन आकांक्षाओं के अनुरूप मानसून के दौरान गैरसैंण में विधानसभा सत्र आयोजित किया लेकिन विपक्ष ने प्रदेश की जनता के हितों को तिलांजलि देकर सदन को नहीं चलने दिया।

संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर में खुलेगा उत्तराखंड मुक्त विवि का केंद्र, छात्रों को मिलेगा नया अवसर

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। केंद्रीय संस्कृत विश्व. विद्यालय के श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का केंद्र जल्द ही स्थापित होने जा रहा है। इस केंद्र के खुलने से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक नया अध्याय जुड़ने वाला है। खासतौर पर संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए यह कदम रोजगार और शिक्षा के नए द्वार खोलेगा।

विश्वविद्यालय प्रशासन का मानना है कि इस पहल से प्रदेश में उच्च शिक्षा का कायाकल्प होगा और छात्रों को अपने भविष्य को बेहतर बनाने का सुनहरा अवसर मिलेगा।

बुधवार को उत्तराखंड मुक्त विश्व. विद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर का दौरा किया।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के बाद कौशल-आधारित शिक्षा का महत्व तेजी से बढ़ा है और मुक्त विवि इसी दिशा में प्रभावी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने बताया कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बाद उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय दूसरा बड़ा संस्थान है, जो बड़े पैमाने पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करा रहा है।कुलपति ने कहा कि इस विवि की खासियत यह है कि किसी भी आयु वर्ग का व्यक्ति, चाहे वह खेती करता हो, मजदूरी करता हो या नौकरी करता हो, कहीं से भी शिक्षा प्राप्त कर सकता है। प्रवेश प्रक्रिया पूरी होते ही विद्यार्थियों के घर पर अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर में केंद्र खुलने से टिहरी जिले का पूर्वी भाग, पौड़ी जिले का बड़ा हिस्सा और श्रीनगर का निकटवर्ती क्षेत्र सीधा लाभान्वित होगा।उन्होंने यह भी बताया कि उत्तराखंड में होम स्टे व्यवसाय लगातार बढ़ रहा है। इसे देखते हुए मुक्त विवि ने 'होम स्टे मैनेजर' नामक कोर्स भी शुरू किया है, जो स्थानीय युवाओं को स्वरोजगार के नए अवसर प्रदान करेगा। इसके अलावा परिसर के छात्र संस्थागत शिक्षा के साथ ही मुक्त विवि से दूरस्थ शिक्षा में दूसरी डिग्री भी प्राप्त कर सकते हैं।

महिलाओं, युवाओं व भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण को बनेगी अलग नीति

धामी कैबिनेट में लगी कई महत्वपूर्ण फैसलों पर मुहर, अपराध से पीड़ित सहायता (संशोधन) योजना 2025 मंजूर

शाह टाइम्स संवाददाता

गैरसैंण। उत्तराखंड की ग्रीष्मकाल. ीन राजधानी गैरसैंण के भराड़ीसैंण में विधानसभा के मानसून सत्र की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित होने के बाद धामी सरकार ने कैबिनेट बैठक कर कई महत्वपूर्ण फैसले लिये।

बुधवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता में आयोजित हुई कैबिनेट में महिलाओं, युवाओं और भूतपूर्व सैनिकों के रोजगार के साधन बढ़ाने, कौशल विकास, सरकारी और निजी संस्थानों में नौकरी प्रदान करने के लिए तीनों वर्गों के लिए अलग-अलग नीति बनाने का निर्णय लिया गया है। जिस के तहत प्रतियोगी परीक्षाओं के तैयारी जैसे सरकारी सेवा, नीट, नर्सिंग, विदेशी भाषाओं का प्रशिक्षण, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस आदि के क्षेत्र में प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाएगी। बृहद स्तर पर युवा महोत्सव और रोजगार मेलों का आयोजन किया जाएगा। व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए आईटीआई, पॉलिटेक्निक और स्कूल आपसी समन्वय से कार्य करेंगे। युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए अल्पकालिक, माध्यकालिक और दीर्घकालिक योजना के तहत कार्य किए जाएंगे। युवाओं और महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए मौन पालन, एप्पल मिशन और बागवानी के लिए हर ब्लॉक में प्रारंभिक चरण में 200 लोगों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। स्वैच्छिक चकबंदी योजना जल्द शुरू की जाएगी। राज्य के स्थानीय उत्पादों फल, सब्जी, दूध की खरीद के लिए कृषि विभाग और आईटीबीपी के बीच उवन किया गया है। इसी तरह एसएसबी और अन्य केंद्रीय एजेंसियों के साथ भी उवन किया जाएगा, जिससे राज्य के स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय स्तर पर लोगों की आजीविका भी बढ़ेगी। निजी क्षेत्रों में भी स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए उद्योग विभाग के माध्यम से मार्केट लिंकेज की व्यवस्था की जाएगी।

भूतपूर्व सैनिकों राज्य में उपनल के माध्यम से कार्य करते हैं, उनको रोजगार और स्वरोजगार उपलब्ध कराने के लिए सरकारी योजनाओं से जोड़ा जाएगा और विभिन्न संस्थानों में उनकी योग्यता पर आधारित सेवाओं से जोड़ने की दिशा में कार्य किए जाएंगे। इसके अलावा उत्तराखण्ड अपराध से पीड़ित सहायता (संशोधन) योजना, 2025 को मंजूरी प्रदान कर दी गई है। सचिव गृह शैलेश बगोली ने बताया कि उत्तराखण्ड अपराध से पीड़ित सहायता योजना, 2013 (यथासंशोधित 2014 एवं 2016) दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा-357 (क) के अधीन अधिसूचित की गयी थी। पोक्सो न्यायालयों की और से लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012 के तहत पीड़ितों को क्षतिपूर्ति भुगतान को आदेश पारित किये जाते रहे हैं, मगर वर्तमान योजना में पोक्सो पीड़ितों के लिये कोई स्पष्ट प्रावधान न होने के कारण विभाग को व्यावहारिक कठिनाई का सामना करना पड़ता रहा। इसी कठिनाई के निराकरण और न्यायालय के आदेशों के अनुपालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से योजना में संशोधन कर उत्तराखण्ड अपराध से पीड़ित सहायता (संशोधन) योजना, 2025 अधिसूचित की जा रही है। इस संशोधन के तहत पोक्सो पीड़ितों के लिए न्यूनतम एवं अधिकतम क्षतिपूर्ति राशि निर्धारित करते हुए नए प्रावधान अनुसूची-2 के रूप में सम्मिलित किये गये हैं। इसके माध्यम से पीड़ितों को समयबद्ध एवं प्रभावी सहायता उपलब्ध करायी जा सकेगी। उत्तराखण्ड सरकार साक्षी संरक्षण योजना, 2025 को भी मंजूरी दी गई है। न्याय व्यवस्था को सशक्त एवं निष्पक्ष बनाने के लिए राज्य सरकार ने उत्तराखण्ड साक्षी संरक्षण योजना, 2025 को मंजूरी प्रदान कर दी है, जो साक्षियों की सुरक्षा एवं गरिमा सुनिश्चित करेगी। इस योजना का उद्देश्य साक्षियों को किसी भी प्रकार के भय, दबाव अथवा प्रतिशोध से मुक्त रखकर उन्हें न्यायालय के समक्ष स्वतंत्रतापूर्वक एवं सत्यनिष्ठा से गवाही देने हेतु सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना है। योजना के अंतर्गत विभिन्न स्तरों पर पहचान गोपनीयता, स्थान परिवर्तन, सम्पर्क विवरण में बदलाव, भौतिक सुरक्षा व्यवस्था एवं आवश्यकतानुसार वित्तीय सहायता जैसी सुरक्षा उपायों का प्रावधान किया गया है। सभी निर्णयों में गोपनीयता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। इसके लिए राज्य साक्षी संरक्षण समिति गठित की गई है, जिसमें न्यायपालिका, पुलिस एवं जनपद स्तर के वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित हैं। यह समिति साक्षियों की सुरक्षा आवश्यकता का आकलन कर समयबद्ध रूप से उपयुक्त संरक्षण उपाय सुनिश्चित करती है।

शिक्षकों की चाक डाउन हड़ताल तीसरे दिन भी रही जारी

कोटद्वार । राजकीय शिक्षक संघ उत्तराखंड के प्रांतीय नेतृत्व के आह्वान पर शिक्षकों की विभिन्न मांगों को लेकर प्रथम चरण के आंदोलनात्मक कार्यक्रम के तहत जनपद के अधिकांश विद्यालयों के शिक्षक तीसरे दिन बुधवार को भी चाक डाउन हड़ताल पर रहे। पूर्व जिलामंत्री मनमोहन सिंह चौहान ने बताया कि प्रदेश के लगभग 90 प्रतिशत विद्यालय स्थाई प्रधानाचार्य विहीन हैं।

कलगड़ी में बैली ब्रिज का निर्माण पूर्ण होने पर छोटे वाहनों के लिए खोला गया

शाह टाइम्स संवाददाता

कोटद्वार। गढ़वाल और कुमाऊं को जोड़ने वाले बुआखाल-धुमाकोट-रामनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर पाबौ के निकट कलगड़ी में नवनिर्मित बैली ब्रिज को छोटे वाहनों के आवागमन के लिए खोल दिया गया है। पुल बनने से पौड़ी जिले के पैठाणी, थलीसैंण, चाकीसैंण, त्रिपालीसैंण, भरसार, बीरोंखाल और धुमाकोट क्षेत्र का जिला मुख्यालय से तथा पौड़ी का कुमाऊं मंडल के रामनगर क्षेत्र से एक बार फिर सीधा यातायात संपर्क स्थापित हो गया है।

कार्यदायी संस्था लोक निर्माण विभाग (राष्ट्रीय राजमार्ग खंड) धुमाकोट के अनुसार लगभग पांच दिन में पुल को बड़े वाहनों की आवाजाही के लिए भी पूर्ण रूप से खोल दिया जाएगा। गौरतलब है कि 6 अगस्त की सुबह भारी बारिश के कारण कलगड़ी में वर्ष 1970 में बना पुराना पुल ध्वस्त हो गया था, जिससे कई क्षेत्रों का संपर्क पूरी तरह कट गया था। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के आपदाग्रस्त क्षेत्र में स्वयं पहुंचकर दिए गए निर्देशों के क्रम में जिलाधिकारी स्वाति एस. भदौरिया के नेतृत्व में पीडब्लूडी एनएच डिवीजन ने तत्परता और समर्पण के साथ नए पुल का निर्माण कार्य शुरू किया और रिकॉर्ड समय में इसे पूरा किया।

पीडब्लूडी के सहायक अभियंता प्रमोद नेगी के अनुसार कलगड़ी में 45 मीटर स्पान का बैली ब्रिज बनाया गया है। मंगलवार की रात विभागीय वाहनों को गुजारकर पुल की टेस्टिंग की गई। सारे पहलुओं को देखने के बाद बुधवार को प्रथम चरण में इसे छोटे वाहनों के लिए खोल दिया गया है और जल्द ही भारी वाहनों की आवाजाही भी सुचारू हो जाएगी। जिलाधिकारी ने कहा कि यह पुल न केवल आवा. जाही की सुविधा बहाल करता है, बल्कि पहाड़ की जीवनरेखा को भी जोड़ता है। हमारी प्राथमिकता थी कि लोगों को जल्द से जल्द राहत मिले। टीमवर्क, तेज निर्णय और जनता के सहयोग से यह संभव हुआ है। साथ ही उन्होंने कहा कि पीडब्लूडी को पुल पर गुणवत्ता के साथ जल्दी से जल्दी बड़े वाहनों के लिए भी खोलने के निर्देश दिये गये हैं।

दो करोड़ से ज्यादा की ठगी

जमीन बेचने के नाम पर लगाया चूना, पुलिस ने किया मुकदमा दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता

काशीपुर। एक प्रोपर्टी डीलर ने जमीने बेचने वालों के साथ मिलकर ग्राहकों से 2 करोड़ रुपये से ज्यादा की ठगी कर ली। आईटीआई थाना पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरु कर दी है। ग्राम भरतपुर, कुंडा, काशीपुर निवासी नरेन्द्र सिंह थाडी पुत्र दलजीत सिंह ने आईटीआई थाना पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उन्हें व उनके साथी मोती राम जैन पुत्र रामचन्द्र जैन, लवीश जैन पुत्र मोतीराम जैन को हाईवे पर 2 एकड़ जमीन की आवश्यकता थी। जिसके बारे में उन्होंने कई प्रोपर्टी डीलरों से संपर्क किया था। नरेन्द्र सिंह ने बताया कि एक दिन अवतार सिंह ब्रोकर पुत्र हरदयाल सिंह निवासी बरखेड़ी, लोहिया पुल, काशीपुर ने उन्हें बताया कि उसके करीबी गुरजीत सिंह उर्फ हीरा और संदीप सिंह जो बरखेड़ा राजपूत में रहते है। उनकी जमीन एनएच 74 हाईवे पर दो एकड़ एक करोड़ अठहत्तर लाख रुपये में बिक रही है, जिसको वह उन्हें दिला देगा। नरेन्द्र सिंह ने बताया कि 19 अक्टूबर 2022 को तहसील काशीपुर में अमरजीत कौर पुत्री बक्शीश सिंह पत्नी महेन्द्र सिंह निवासी बरखेड़ा राजपूत ने संदीप सिंह पुत्र महेन्द्र सिंह, गुरजीत सिंह उर्फ हीरा पुत्र महेन्द्र सिंह व हरप्रीत कौर पत्नी गुरजीत सिंह और अवतार सिंह निवासी बरखेड़ा राजपूत, काशीपुर की मौजूदगी में इकरारनामा किया गया कि 30 नवम्बर 2023 तक का समय रजिस्ट्री कराने का समय दिया गया, जिसमें पहली शर्त अवतार सिंह प्रोपर्टी डीलर को 2 प्रतिशत के हिसाब से 4 लाख रुपये कमीशन देना तय पाया व दूसरी शर्त उपरोक्त भूमि में गुरजीत सिंह उर्फ हीरा मिट्टी से भराव करके देंगे व तीसरी शर्त 50 लाख रुपये विक्रेता के पास पहुंचने पर बाउंड्री चाहर दीवारी क्रेता कर सकता है।नरेन्द्र सिंह ने बताया कि 19 अक्टूबर 2022 को 15 लाख रुपये नगद दिये गये। यह इकरार नामा 30 नवम्बर 2023 तक वैध था। जिसके बाद 14 दिसम्बर 2022 को उपरोक्त के साथ एक इकरार नामा पुनः तहसील काशीपुर में किया गया जिसमें 30 अप्रैल 2024 तक भूमि की रजिस्ट्री किये जाने तथा 20 लाख रुपया लवीश जैन के खाते से दिये गये तथा शेष भुगतान 30 अप्रैल 2024 को दिया जाना तय हुआ। 06 मई 2024 तक उनके द्वारा अपने बैंक खाते द्वारा एक करोड़ तैतीस लाख तिरासी हजार रुपये दिये, नगद रुपये की हस्ताक्षरित रिसीविंग करवाई जो कि उनके पास मौजूद है। बताया कि इस तरह एक करोड़ इकहत्तर लाख तिरासी हजार रुपये उपरोक्त जमीन खरीदने के एवज में वे उपरोक्त लोगों को दे चुके हैं। जिसमें अवतार सिंह प्रोपर्टी डीलर ने अपनी कमीशन चार लाख रुपये बैंक खाते से व उपरोक्त जमीन में मिट्टी भरान के नाम पर 15 लाख रुपये ले चुका है तथा आज तक उपरोक्त जमीन पर मिट्टी भरान भी नहीं किया है। उनके द्वारा दी गई धन. राशि को वापस भी नहीं कर रहे हैं और उल्टा उन पर दबाब बनाने के लिये झूठे मुकदमे काशीपुर व उच्च न्यायालय नैनीताल में कर रहे हैं। उन्होंने उक्त लोगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की मांग की है। पुलिस ने उपरोक्त लोगों के खिलाफ आईपीसी की धारा 120बी, 406, 409, 417, 423, 465, 504, 506 के तहत मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरु कर दी है।

छात्र ने शिक्षक को गोली मारी, घायल

शाह टाइम्स संवाददाता

काशीपुर। कुंडेश्वरी रोड स्थित एक स्कूल में जब एक छात्र ने अपने ही शिक्षक पर गोली चला दी। गोली लगने से शिक्षक घायल हो गए। उन्हें गंभीर हालत में एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना पर पहुंची पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार श्री गुरूनानक सीनियर सेकेण्डरी स्कूल में सोमवार को किसी बात को लेकर छात्र की उसके शिक्षक गगन सिंह से कहासुनी हुई थी। शिक्षक ने छात्र की पिटाई कर दी थी। इस बात को लेकर छात्र आहत था। गुस्से में आकर उसने बदला लेने की नीयत से बुधवार को स्कूल में पिस्टल लाकर शिक्षक पर फायर झोंक दिया। गोली सीधे शिक्षक के कंधे में जा लगी। अचानक गोली चलने से स्कूल के अन्य छात्र और शिक्षक दहशत में आ गए। बच्चों में अफरातफरी का माहौल बन गया। कई छात्र डर के मारे कक्षाओं से बाहर भागे। स्कूल प्रबंधन ने तुरंत घायल शिक्षक को अस्पताल पहुंचाया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई, जबकि आरोपी छात्र मौके से फरार हो गया। पुलिस ने उसकी तलाश शुरू कर दी है। घटना के बाद से अभिभावकों और स्थानीय लोगों में गहरी चिंता है। डॉक्टरों के मुताबिक गोली शिक्षक गगन सिंह के कंधे को छूते हुए निकली है। उनकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। उन्हें अस्पताल में निगरानी में रखा गया है। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि मामले की विस्तृत जांच की जा रही है। आरोपी छात्र की उम्र, हथियार कहां से आया और फायरिंग के पीछे की पूरी कहानी की जानकारी जल्द ही सामने लाई जाएगी।

एक नजर...

विश्वविद्यालय में नियुक्तियों में फेरबदल

पंतनगर। पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति ने संकाय सदस्यों को अतिरिक्त जिम्मेदारियां सौंपी हैं। इस फेरबदल में कुछ अधिकारियों को उनके वर्तमान दायित्वों से मुक्त कर दिया गया है, जबकि अन्य को नए पदभार दिए गए हैं। मुख्य कार्मिक अधिकारी के कार्यालय आदेश के अनुसार सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय के मानव विकास और पारिवा. रिक अध्ययन विभाग की सहायक प्राध्यापक डा. छाया शुक्ला को सह अधिष्ठाता, छात्र कल्याण तथा कृषि महाविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग के प्राध्यापक डा. श्रीराम को संस्थापनाधिकारी का अतिरिक्त दायित्व दिया गया है। इसके अलावा, विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के प्राध्यापक डा. ओम प्रकाश को अपर अधिष्ठाता, छात्र कल्याण तथा मुख्य प्रशासनिक अधिकारी केएस अधिकारी को संस्थापनाधिकारी के दायित्वों से मुक्त कर दिया गया है।

श्रीअन्न महोत्सव आज से

पंतनगर। गोविन्द बल्लभ पंत कृषि और प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर में 21 से 23 अगस्त 2025 तक श्रीअन्न महोत्सव का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम का उद्घाटन विश्व. विद्यालय के कुलाधिपति एवं उत्तराखण्ड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि.) द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम का उद्देश्य श्रीअन्न (मोटे अनाज) की कृषि, पोषण और व्यावसायिक संभावनाओं को बढ़ावा देना है। इस महोत्सव में विशेषज्ञ व्याख्यान, प्रदर्शनी, किसान संवाद, तकनीकी सत्र और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

गंगे बाबा मंदिर पर गणेश महोत्सव 27 से

काशीपुर। श्री गंगे बाबा मंदिर उदासीन आश्रम में इस वर्ष भी श्री गणेश महोत्सव का भव्य आयोजन किया जा रहा है। वृंदावन के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत होने वाली श्रीकृष्ण रासलीला इस आयोजन का मुख्य आकर्षण रहेगी। महोत्सव के कार्यक्रम 27 अगस्त से प्रारंभ होंगे और 9 सितंबर 2025 तक चलेंगे। आयोजकों ने बताया कि 27 अगस्त को बुधवार दोपहर श्री गणेश जी का आगमन होगा तथा उसी दिन शाम 8 बजे से श्रीकृष्ण जी की रासलीला का शुभारंभ किया जाएगा। 31 अगस्त को रविवार के दिन श्री राधारानी जन्मोत्सव मनाया जाएगा, जबकि 1 सितंबर को सोमवार के दिन श्री चन्द्र भगवान जन्मोत्सव होगा। 5 सितंबर को शुक्रवार को फूलों की होली का आयोजन होगा। इसके बाद 7 सितंबर रविवार को सुबह 10 बजे श्री गणेश मूर्ति विसर्जन किया जाएगा। 9 सितंबर मंगलवार को दोपहर में विशाल भंडारा आयोजित होगा। महोत्सव के आयोजक महंत श्री लक्ष्मणदास जी महाराज ने बताया कि इस आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन में सभी श्रद्धालुओं को आमंत्रित किया गया है।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता 24 को

बागेश्वर। नंदा महोत्सव के तहत पुंगरघाटी विकास मंच के तत्वावधान में 24 अगस्त रविवार को कृषि इंटर कॉलेज दोफाड़ में तीन चरणों में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता होगी। यह प्रतियोगिता प्राथमिक, जूनियर, सीनियर वर्ग में होगी। परिणाम उसी समय धोषित किया जाएगा। पुरस्कार वितरण 31अगस्त मेले के सम्पन्न बेला पर होगा। प्रतियोगी परीक्षा को लेकर पुंगर घाटी विकास मंच ने बैठक कर विभिन्न लोगों को जिम्मेदारी सौंपी गई। परीक्षा प्रभारी डां. नंदन सिंह कालाकोटी, महेश पांडेय, प्रकाश कालाकोटी, भूपेश रोतेला, हरीश पुरी, नरेंद्र रौतेला, कैलाश कोरंगा, राजेश रौतेला, हिमांशु कालाकोटी, हरीश कालाकोटी, प्रतिभा कालाकोटी, प्रेमा, बबिता आदि मौजूद रहे।

अवैध खनन पर लगी जेसीबी को सीज

अल्मोड़ा। विकासखंड हवालबाग के ग्राम पंचायत अथरबनी में अवैध खनन का मामला सामने आया है। मामले में ग्राम प्रधान की शिकायत पर प्रशासन की टीम ने मौका मुआयना कर जेसीबी को सीज किया। नवनिर्वाचित ग्राम प्रधान विनोद कुमार जोशी ने बताया कि अथरबनी क्षेत्र में जेसीबी से अवैध खनन किया जा रहा है। जिसकी जानकारी उन्होंने एसडीएम सदर को दी। प्रधान की सूचना मिलने पर प्रशासन की टीम मौके का निरीक्षण किया। इस दौरान जेसीबी चालक खनन संबंधी कोई भी वैध दस्तावेज नहीं दिखा पाया। मौके पर ही प्रशासन की टीम ने जेसीबी को सील कर आगे की कार्रवाई की गई। यहां निरीक्षण में तहसीलदार ज्योति धपवाल, नायब तहसीलदार दीवान सिंह सलाल, कानूनगो चंद्रशेखर कांडपाल, राजस्व उपनिरीक्षक जगदीश प्रसाद, पूर्व प्रधान रैखोली हेम भंडारी रहे।

स्थानांतरण की कार्रवाई को लंबित रखने पर रोष

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। उत्तरांचल पर्वतीय कर्मचारी शिक्षक संगठन स्थानांतरण की कार्रवाई को लंबित रखने और फारगो नियमावली विसंगति का निराकरण नहीं होने पर नाराजगी जताई है। मामले में सरकार से जल्द समस्याओं के निदान की मांग उठाई है। शिक्षकों ने कहा कि सरकार ने वार्षिक प्रबंध के तहत स्थानांतरण की कार्रवाई को लंबित रखा है। वहीं, कार्मिकों को समय पर स्थानांतरण नहीं करना दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने सुगम से दुर्गम व दुर्गम से सुगम अनिवार्य स्थानांतरण व अनुरोध के आधार पर स्थानांतरण को जल्द निस्तारण करने की मांग उठाई। यहां अध्यक्ष डा. मनोज कुमार जोशी, दिगंबर दत्त फुलोरिया, महेश आर्य, धीरेंद्र कुमार पाठक, दीपक भंडारी, गणेश भंडारी, डीके जोशी, राजेंद्र लटवाल, पीएस बोरा, गोकुल मेहता, रमेश पांडे, महेंद्र गुसाईं, तारा सिंह बिष्ट, भगवत सिंह सतवाल, दीपशिखा मेलकन्या आदि रहे।

मां गार्गी गंगा की आरती कर लिया आशीर्वाद

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। एकादशी व्रत के पावन अवसर पर श्री नारायणी सेवा ट्रस्ट द्वारा मां गार्गी गंगा के पवित्र तट पर भव्य आरती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के सदस्यों ने मां गार्गी गंगा का पूजन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया और क्षेत्र की सुख-समृद्धि की कामना की। आरती कार्यक्रम नैनीताल जनपद के रानीबाग स्थित गार्गी गंगा घाट पर सम्पन्न हुआ, जिसमें प्रदेश अध्यक्ष पूर्णिमा रजवार के नेतृत्व में बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं ट्रस्ट सदस्य शामिल हुए। कार्यक्रम में उपस्थित प्रमुख सदस्यों में आशा शुक्ला, ज्योति पांडे, मीना मिश्रा, रेनू कांडपाल, योगेंद्र साहू, बलरामी, मीरा, श्रुति, यस राज पांडे सहित अन्य भक्तगण शामिल रहे। सभी ने मिलकर मां गार्गी गंगा की आरती की और गंगा मैया से शांति, सद्भाव और कल्याण की प्रार्थना की।

भीमताल में निशुल्क नेत्र जांच शिविर

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। भीमताल के ग्राम सुरंग में पोस्ट ऑफिस के निकट एक निजी प्रतिष्ठान में आयोजित निःशुल्क नेत्र जांच शिविर में माधवी फाउंडेशन एवं प्रभु नेत्रालय रुद्रपुर की संयुक्त पहल ने ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती प्रदान की। शिविर में 100 से अधिक ग्रामीणों की आंखों की जांच की गई, जिन्हें निशुल्क दवाइयां और चश्मे के नंबर भी प्रदान किए गए। इस शिविर की एक खास उपलब्धि रही 30 मरीजों का मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए चयन। चयनित मरीजों को अगली सुबह प्रभु नेत्रालय, रुद्रपुर ले जाकर ऑपरेशन करवाने और फिर उनके सुरक्षित घर लौटने तक की पूरी व्यवस्था माधवी फाउंडेशन और प्रभु नेत्रालय द्वारा निशुल्क की जाएगी। माधवी फाउंडेशन के ब्लॉक अध्यक्ष उमेश सुयाल ने कहा हमारा उद्देश्य है कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता बढ़े। यह केवल एक शुरुआत है, ऐसे शिविर भविष्य में भी नियमित रूप से लगाए जाएंगे। संस्था अध्यक्ष पीयूष जोशी ने राज्यभर में इन शिविरों को विस्तार देने की बात कही और युवाओं से संस्था से जुड़ने की अपील करते हुए कहा, यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है, जिसे मिलकर निभाना होगा। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों की भागीदारी रही। इस दौरान सामाजिक कार्यकर्ता टीकम सिंह, क्षेत्र पंचायत सदस्य नंदन खनवाल, सुरंग ग्राम प्रधान नारायण बोहरा, सूई ग्राम प्रधान त्रिलोचन बेलवाल, समा. जसेवी भवान सिंह कबरिया, बालम बोरा, लक्ष्मण पूरी और पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य नरेश खनवाल समेत कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मुर्गियों में बर्डफ्लू की पुष्टि, प्रशासन अलर्ट

शाह टाइम्स संवाददाता

बागेश्वर। कौसानी के सेली गांव में मुर्गियों में बर्डफ्लू की पुष्टि के बाद जिला प्रशाासन के साथ ही आम लोग भी अलर्ट हो गए हैं। मंगलवार शाम कौसानी मार्ग स्थित मोटासिमल के पास एक पिकअप में भरकर मुर्गियां लाई जा रही थीं। लोगों ने इसकी शिकायत पुलिस व पशुपालन विभाग से की। टीम मौके पर पहुंची और जांच के बाद मुर्गियों को छोड़ दिया। मालूम हो कि गत दिनों कौसानी के सेली गांव में मुर्गियों में बर्डफ्लू की पुष्टि हुई। इसके बाद दस किमी क्षेत्र को निगरानी जोन में रख दिया। यहां उत्पादित मुर्गियों की बिक्री पर रोक लगा दी है। अब तक वहां से 77 मुर्गियों के सेंपल जांच के लिए आरबीआई बरेली भेजे हैं। इसके बाद से जिला प्रशासन, पशुपालन, पुलिस अलर्ट है। मंगलवार की शाम लोगों की शिकायत पर पुलिस व पशुपालन विभाग उप मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डाक्टर पंकज कुमार जोशी ने पिकअप की जांच की। इस वाहन में मुर्गियां ले जाई रही थीं। मामले की जांच की गई। मुख्य पशु चिकित्साधिकारी केके जोशी ने बताया कि मुर्गियां मोटासिमल के फार्म स्वामी पूरन सिंह के फार्म से आई थीं। लगभग 200 मुर्गियां विक्रय हेतु लाई गई हैं। सभी मुर्गियां स्वस्थ पाई गई। जिले के बाहर से मुर्गियों को लाने में रोक है। कौसानी क्षेत्र को छोड़ कर जिले के अंदर से जिले में परिवहन पर रोक नहीं है। इधर लोगों में बर्डफ्लू की सूचना पहुं. चने के बाद लोगों में डर का माहौल बना हुआ है। जिला मुख्यालय में स्थित मीट मार्केट में बुधवार को दुकानदार ग्राहकों का इंतजार करते रहे। लोग अब कम संख्या में चिकन ले जाना पसंद कर रहे है।

जयंती पर कांग्रेसियों ने किया राजीव गांधी को नमन

शाह टाइम्स संवाददाता

काशीपुर। द्रोणा सागर रोड स्थित एनडी तिवारी एससी गुड़िया नव चेतना कांग्रेस भवन में आज पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की जयंती पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम ध्वजारोहण कर स्व. राजीव गांधी के जीवन पर डाला गया। इसके उपरांत उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि आज भारत तेजी से सूचना एवं इनफार्मेशन टेक्नोलाजी क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। यह पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की देन है। पंचायती राज गठन की बात हो, मतदान करने की उम्र सीमा 18 वर्ष की सौगात देश के युवाओं को देना, यह सब उत्कृष्ट कार्य देश नहीं भूल सकता। कांग्रेसी वक्ताओं ने स्व. राजीव गांधी के जीवन से आज की युवा पीढ़ी को सीख लेने का आवाहन किया। इस मौके पर महानगर अध्यक्ष मुशर्रफ हुसैन, मनोज जोशी एडवोकेट, विमल गुड़िया, महेंद्र लोहिया, अरुण चौहान, डॉ दीपिका गुड़िया आत्रेय, अलका पाल, इंदुमान, राकेश भगत, प्रदीप जोशी, जितेंद्र सरस्वती, अर्पित मेहरोत्रा, जय सिंह गौतम, चंद्रभूषण डोवाल, राजेश शर्मा एडवोकेट, अब्दुल कादिर, शाह आलम आदि तमाम कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

महापौर दीपक बाली ने किया जिला पंचायत अध्यक्ष अजय का स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता

काशीपुर। नगर निगम महापौर दीपक बाली ने जिला पंचायत अध्यक्ष अजय मौर्य का काशीपुर पहुंचने पर गर्भजोशी से स्वागत किया। इस अवसर पर महापौर ने उन्हें पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मानित किया और भविष्य में नगर एवं जिले के विकास कार्यों में मिलकर सहयोग करने की बात कही। महापौर दीपक बाली ने कहा कि नगर निगम और जिला पंचायत के बीच बेहतर तालमेल से विकास कार्यों को गति मिलेगी और जनता को उसका सीधा लाभ मिलेगा। वहीं जिला पंचायत अध्यक्ष मौर्य ने महापौर श्री बाली के आतिथ्य और सम्मान के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संयुक्त प्रयासों से क्षेत्र का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जाएगा। इस अवसर पर सतीश भट्ट, रमेश ढींगरा, वीरेंद्र मौर्य, शशांक सिंह, समरवीर सिंह, अनीस अहमद मौजूद थे।

बोलोरो से खैर के गिल्टे बरामद

शाह टाइम्स संवाददाता

शांतिपुरी। ग्राम नज़िमाबाद के निकट देर रात्रि कलकत्ता फार्म पुलिस चौकी प्रभारी ओव पीव नेगी को अवैध लकड़ी तस्करी सूचना मिली सूचना मिलने पर कलकत्ता फार्म पुलिस चौकी द्वारा नाकेबंदी और घेराबंदी की गई थोड़ी देर मे रास्ते से आ रही बोलेरो गाड़ी संख्या यूपी20एल 7191 को बैरिकेट लगाकर रोक. कर पकड़ा और कलकत्ता फार्म पुलिस चौकी पर खड़ा कर तलाशी लेने पर उसमें से 17 अवैध खैर के गिरते बरामद किए। लकड़ी तस्कर रमेश पाल पुत्र कन्हैय लाल निवासी हमीरपुर थाना टांडा जिला रामपुर उत्तर प्रदेश 2-दिनेश पाल पुत्र जीवा राम निवासी हमीरपुर थाना टांडा जिला रामपुर उत्तर प्रदेश 3-तारा सिंह पुत्र बलदेव सिंह निवासी कोर्टखरा थाना किच्छा जिला उधम सिंह नगर निवासी को अवैध खैर के साथ गिरफ्तार किया गया जिसकी बाजार कीमत लगभग तीन लाख रुपये है। कलकत्ता फार्म चौकी प्रभारी नेगी ने बताया की अभियुक्तगणों के विरुद्ध अभियोग पंजीकृत किया जा रहा है। पुलिस टीम में सिपाही यशपाल आर्या, अमित कुमार, ग्राम प्रहरी योगेन्द्र कुमार, अरविन्द कुमार शामिल रहे।

छात्रा ने की खुदकुशी

शांतिपुरी। नगला गोलगेट निवासी हाई स्कूल की छात्र ने खुदकुशी कर ली। बुधवार सुबह पुलिस को 112 नंबर पर सूचना मिली कि नगला गोलगेट में किसी युवती ने घर मेंफांसी का फंदा लगाकर जान दे दी है। सूचना पर एसएचओ पंतनगर सुदरम शर्मा के नेतृत्व में पहंची एसआई नीलम मेहता व पुलिस टीम ने शव कब्जे में ले लिया और पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। पुलिस के अनुसार शांतिपुरी रेलवे क्रासिंग के पास नाले में अजय कुमार झोपड़ी बनाकर अपने परिवार के साथ रहते हैं। बुधवार सुबह घर में जगे होने पर उन्होंने अपनी नाबालिग पुत्री आराधना (15) को फंदे से लटके पाया। जिससे परिवार और आस पड़ोस में हड़कंप मच गया। आनन-फानन किशोरी को फंदे से उतारकर अस्पताल ले जाया गया, लेकिन तब तक मौत हो चुकी थी।

बागेश्वर को रेल नेटवर्क से जोड़ने की योजना पर अजय भट्ट ने संसद में उठाए सवाल, रेल मंत्री ने दी जानकारी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री एवं नैनीताल-ऊधमसिंह नगर से सांसद अजय भट ने लोकसभा में बागेश्वर जिले को रेल नेटवर्क से जोड़ने संबंधी सवाल रेल मंत्री से तारांकित प्रश्न के रूप में पूछा। उन्होंने जानना चाहा कि क्या केंद्र सरकार ने इस क्षेत्र के लिए कोई रेल परियोजना बनाई है, उसकी लागत व समय सीमा क्या है, और क्या निकट भविष्य में कोई योजना प्रस्तावित है। रेल मंत्री ने जवाब में बताया कि टनकपुर-बागेश्वर नई रेल लाइन (170 किमी) के लिए फील्ड सर्वेक्षण पूरा कर लिया गया है और विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार हो चुकी है। रिपोर्ट के अनुसार परियोजना की अनुमानित लागत 48,692 करोड़ रुपये है। हालांकि, यातायात की संभावना कम पाई गई है। परियोजना की स्वीकृति के लिए राज्य सरकारों, नीति आयोग, वित्त मंत्रालय आदि के साथ परामर्श की प्रक्रिया जारी है। इसलिए फिलहाल कोई निश्चित समयसीमा तय नहीं की जा सकती। रेल मंत्री ने यह भी बताया कि हाल के वर्षों में उत्तराखंड के रेलवे बजट में भारी बढ़ोतरी हुई है। जहां 2009 से 2014 के बीच प्रतिवर्ष केवल 187 करोड़ रुपये का व्यय होता था, वहीं 2025-26 में यह बढ़कर 4,661 करोड़ रुपये हो गया है। वर्तमान में उत्तराखंड में तीन स्वीकृत रेल परियोजनाएं चल रही हैं, जिनकी कुल लंबाई 216 किमी है। इनमें से 16 किमी का निर्माण मार्च 2025 तक किया जाना प्रस्तावित है, जिस पर अब तक 19,898 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त राज्य के 11 रेलवे स्टेशनों को अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विक. सित किया जा रहा है। रेल मंत्री ने यह भी जानकारी दी कि 2014 से 2025 के बीच उत्तराखंड में रेलवे लाइन के ऊपर व नीचे 106 आरओबी व आरयूबी बनाए गए हैं। साथ ही, 158 करोड़ रुपये की लागत से 9 नए आरओबी/आरयूबी मार्च 2025 तक स्वीकृत किए गए हैं। इस प्रकार, उत्तराखंड में रेलवे कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे के विस्तार को लेकर केंद्र सरकार की ओर से व्यापक प्रयास जारी हैं।

नशा मुक्ति केंद्र को 10 लाख की सहायता

अल्मोड़ा। जिला खनिज फाउंडेशन न्यास की प्रबन्ध समिति एवं शासी परिषद की बुधवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी आलोक कुमार पांडेय ने बताया कि नशा मुक्ति केंद्र के संचालन के लिए सहायक उपकरण एवं साज-सज्जा सामग्री की खरीद के लिए समाज कल्याण विभाग को 10 लाख रुपये प्रदान किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि नशा मुक्ति केंद्र जनपद की एक अत्यंत महत्वपूर्ण योजना है, जिसके माध्यम से न केवल नशे की लत से मुक्ति दिलाई जा सकेगी, बल्कि अपराधों पर भी प्रभावी अंकुश लगेगा। जिलाधिकारी ने बताया कि पूर्व में खनन न्यास निधि से शिक्षा विभाग के अंतर्गत अस्थाई शिक्षकों की नियुक्ति की गई थी, जिससे विद्यालयों में सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। उन्होंने मुख्य शिक्षा अधिकारी को नियुक्त शिक्षकों के योगदान और विद्यालयों में आए सुधारों की विस्तृत समीक्षा करने के निर्देश दिए है। इसी प्रकार, खनन न्यास निधि से जनपद के अंतर्गत कस्बा रानीखेत, द्वाराहाट, दन्या और लमगड़ा में 62 सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए जा रहे हैं। डीएम ने पुलिस विभाग को निर्देशित किया कि अन्य आवश्यक स्थलों का चिह्नीकरण कर, यदि आवश्यकता हो तो अतिरिक्त कैमरे लगाने हेतु प्रस्ताव समिति के समक्ष प्रस्तुत करें।

NAME CHANGE

I Mahaboob Ali have changed my name from Mahaboob to Mahaboob Ali hence forth I shall be known as Mahaboob Ali S/o Mahmood R/o Parmanandpur, Dabhora Mustakam, Kashipur, Udham Singh Nagar, UK.

राजीव गांधी ने भारत में संचार क्रांति की थी

श्रद्धांजलि अर्पित कर कांग्रेसियों ने पूर्व प्रधानमंत्री के आदर्शों का चलने का लिया संकल्प

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा/रानीखेत। संचार क्रांति के जनक भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती पर कांग्रेजनों ने उनका भावपूर्ण स्मरण किया। पार्टी कार्यालय में उनके चित्र पर पुष्पाजंलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। बुधवार को हुए आयोजन में कांग्रेस के जिलाध्यक्ष भूपेंद्र भोज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि स्व. राजीव गांधी ने बेहद विषम परिस्थितियों में इंदिरा गांधी के बलिदान के बाद देश की सत्ता की बागडोर संभाली। उन्होंने आधुनिक भारत की सोच को लेकर देश के विकास में अभूतपूर्व कार्य किये।

उन्होंने बताया कि पूर्व पीएम राजीव गांधी के ही प्रयास थे कि 18 साल के नौजवान को मतदान का अधिकार मिला। देश में नई क्रांति लाने के लिए स्व गांधी की ओर से किए गए प्रयासों को हमेशा याद रखा जाएगा। यहां नगर अध्यक्ष तारा चंद्र जोशी, पूर्व पालिकाध्यक्ष प्रकाश चन्द्र जोशी, जिलाध्यक्ष महिला राधा बिष्ट, आनन्द सिंह बगडवाल, शोभा जोशी, गोपाल सिंह चौहान, डा. मनोज कुमार जोशी, पूरन सिंह रौतेला, प्रीति बिष्ट, बीके पांडे, एनडी पांडे, आनन्द सिंह बिष्ट, दिनेश पिलख्वाल, परितोष जोशी, हरीश भट्ट, मोहन देवली, नितिन रावत, एमएस राजपूत, किरन आर्या, केवलानंद भट्ट, फेमिना खान समेत कई कार्यकर्ता मौजूद रहे। इधर, रानीखेत कांग्रेस कमेटी की ओर से मंगलवार को भारत रत्न एवं भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की 81वीं जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रदेशध्यक्ष करन माहरा मुख्य अतिथि रहे। मौके पर करन माहरा ने कहा कि स्व. राजीव गांधी आधुनिक भारत के निर्माता थे। जिन्होंने सूचना-प्रौद्योगिकी, शिक्षा और पंचायती राज व्यवस्था को नई दिशा दी। उन्होंने युवाओं को राजनीति और राष्ट्र निर्माण में आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रेरित किया। इसके अलावा नगर कांग्रेस पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने भी अपने विचार रखते हुए राजीव गांधी के जीवन एवं योगदान को याद किया। कार्यक्रम के अंत में कांग्रेसजनों ने पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर अध्यक्ष उमेश भट जी ने किया एवं संचालन पूर्व जिला महामंत्री दीपक पंत ने किया। कार्यक्रम में महिला जिलाध्यक्ष गीता पवार, महिला नगर अध्यक्ष नेहा साह माहरा, यूथ विधानसभा अध्यक्ष अंकिता पंत, सुमित कुमार ग्राम प्रधान भाड़गाँव, किशन अधिकारी ग्राम प्रधान थकुलाड़ी, प्रीति पंत ग्राम प्रधान वलना, अगस्त लाल साह, अतुल जोशी, कुलदीप बिष्ट, प्रमोद पाल, दीप पांडे, पूरन मेहरा, विश्व विजय सिंह माहरा, कॉर्डिनेटर कुलदीप कुमार, मीडिया प्रभारी सोनू सिद्दीकी, आनंद अग्रवाल, अनीस अहमद, राम चन्द्र मराठा, गोविंद बिष्ट, कैलाश राम, स्वाति बंसल, प्रियंका, दीपक पंत, रवि मेहरा, विजय तिवारी, दीप उपाध्याय, विनीत चौरसिया, महिपाल मेहरा, माया बिष्ट, लीला नयाल, नाज़िश, भीम सिंह मेहरा, सौरभ बिष्ट, मनोज कोरंगा, नितिन प्रकाश, अमन शेख, हर्षित किरौला, दीपक, संजय ठाकुर, अंकित रावत, संजय कुमार, भावेष पंत, सुरेंद्र पवार, भूप्पी, यशिका आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

राजीव को कांग्रेसियों की श्रद्धांजलि

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। स्वराज आश्रम में पूर्व प्रधानमंत्री और सूचना क्रांति के जनक स्व. राजीव गांधी की जयंती पर कांग्रेसजनों ने उनकी फोटो पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष राहुल छिमवाल, महानगर अध्यक्ष गोविंद सिंह बिष्ट, मनोज शर्मा, केदार पलड़िया सहित कई नेताओं ने राजीव गांधी के योगदान को याद करते हुए कहा कि आज की आईटी क्रांति उनकी ही दूरदर्शिता का परिणाम है। नेताओं ने कहा कि राजीव गांधी का विकास रोडमैप देश को नई ऊंचाइयों तक ले गया था, जिसे आज की सत्ता फासीवादी विचारधारा से पीछे धकेल रही है। कार्यक्रम में महिला कांग्रेस जिलाध्यक्ष मधु सांगूड़ी, जया कर्नाटक, पुष्पा तिवारी, हाजी सुहैल सिद्दीकी, सतनाम सिंह, ताहिर हुसैन समेत बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

दुपट्टे से गला घोंटकर ज्योति मेर को मारा

योगा ट्रेनर हत्याकांड का खुलासा, अवैध सम्बंध बने हत्या की वजह

घटना की रात भर पीटा और फिर दुपट्टे से घोंट दिया था गला

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। मुखानी क्षेत्र में हुई महिला योगा ट्रेनर ज्योति मेर की हत्या से पुलिस ने 20 दिन बाद पर्दा उठा दिया। ज्योति हत्याकांड में पुलिस ने आरोपी अभय कुमार उर्फ राजा को नगला से गिरफ्तार किया। ज्योति जिस योगा सेंटर में काम करती थी, उसके मालिक अजय रघुवंशी से ज्योति से अवैध संबंध थे। ये राज अजय के छोटे भाई अभय के सामने फाश हो चुका था। जिसके बाद से दोनों भाइयों में दूरियां बढ़ गई, इतनी की अजय ने अभय को न सिर्फ घर से निकाल दिया, बल्कि व्यापार भी उसके हाथ से निकलने लगा था। अभय ने इन सबका जिम्मेदार ज्योति को मान लिया था और इसी वजह से उसने ज्योति को पहले तो बेरहमी से पीटा और दुपट्टे से गला घोंट कर उसे मार दिया। पकड़े गए आरोपी के पास से पुलिस ने हत्या में इस्तेमाल करने वाला दुपट्टा भी बरामद कर लिया। आरोपी के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई कर न्यायालय में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया। बुधवार को एसएसपी पीएन मीणा ने हत्याकांड का खुलासा करते हुए बताया कि मुखानी थानाक्षेत्र के जेके पुरम में किराए पर रहने वाली 35 वर्षीय ज्योति मेर की लाश उसी के कमरे में 31 जुलाई को मिली थी। एसएसपी ने बताया कि 3 अगस्त को मुखानी थाने में मृतका की मां दीपा मेर निवासी हल्दूचौड़, तुलारामपुर, लालकुआं ने मुखानी थाने में तहरीर देते हुए बताया कि उनकी बेटी ज्योति मेर पत्नी कमल सबलानी, मूल निवासी जोधपुर, राजस्थान जेके पुरम घर की तीसरी मंजिल पर रहती थी और पास ही स्थित अजय योगा एंड फिटनेस सेंटर में योगा ट्रेनर थी। दीपा ने सेंटर मालिक अजय यदुवंशी और उसके छोटे भाई अभय यदुवंशी उर्फ राजा पर हत्या का मुकदमा दर्ज कराया। एसएसपी पीएन मीणा ने बताया कि ज्योति मेर हत्याकांड को लेकर विशेष टीम का गठन किया और आस-पास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगालने शुरू किए। घटनास्थल और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले और इसकी स्कैनिंग के दौरान एक संदिग्ध युवक कैमरे में ज्योति के कमरे की दिशा से निकलता दिखाई दिया। हाव-भाव और स्थानीय इनपुट से उसकी पहचान अभय कुमार उर्फ राजा निवासी गोल चौक, वाल्मीकि नगर, पश्चिमी चंपारण बिहार के तौर पर हुई, जो वर्तमान में योगा सेंटर के परिसर में रहता था। इधर, मामले के तूल पकड़ने से पहले अभय फरार हो गया। लंबे समय तक वह नेपाल में ही छिपा रहा और इधर, लगातार पुलिस उसकी तलाश में दबिशें देती रही। तभी पुलिस ने बीते मंगलवार की रात्रि उसे नगला तिराहे के पास से गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में पकड़े गए आरोपी ने बताया कि चन्दन डायग्नोसिस के टॉप फ्लोर पर उसके बड़े भाई का अजय फिटनेस योगा सेन्टर नाम से एकेडमी है। जिसे अभियुक्त का बड़ा भाई अजय व अभय चलाते थे। योगा सेन्टर में मेनेजमेन्ट के सारे काम अभय ही देखता था। सेन्टर में ज्योति मेर भी काम करती थी। इसी दौरान ज्योति और अजय की बीच अवैध संबंध के चलते अजय ने अपने भाई अभय को खर्चा देना बंद कर दिया और उसको अपने घर से निकाल दिया। आक्रोश में आकर अभय ने ज्योति के कमरे में रखे उसके दुपट्टे से पीछे से जाकर गला दबाकर हत्या कर दी और हत्या करने के बाद टैक्सी से बनबसा पहुंचा और वहां से नेपाल चला गया। गुडवर्क करने वाली टीम को एसएसपी पीएन मीणा ने ढाई हजार का ईनाम देने की घोषणा की। टीम में मुखानी थानाध्यक्ष दिनेश चंद्र जोशी, एसआई विरेंद्र चंद, एसआई विरेन्द्र सिंह बिष्ट, एसआई नरेन्द्र कुमार, एसआई हरजीत सिंह, कांस्टेबल सुनील आगरी, रोहित कुमार, सुरेश देवड़ी, रविंद्र खाती, बलवंत सिंह, धीरज सुगड़ा, शंकर सिंह, राजेश, अरविंद, अनूप तिवारी, प्रवीण सिंह, गंगा मठपाल शामिल थे।

ज्योति के जख्मों ने बयां की थी हैवानियत

हल्द्वानी। अभय की हैवानियत ज्योति की पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने बयां कर दी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में ज्योति के सिर के बाएं हिस्से पर गहरा घाव, दाहिने हाथ की कोहनी के पास घाव, पैरों के निचले हिस्से पर घाव और पीठ के ऊपरी हिस्से पर त्वचा फटी हुई थी। जबकि अंदरूनी चोटों की बात करें तो ज्योति की खोपड़ी में फ्रैक्चर था, मस्तिष्क में खून के थक्के जम चुके थे। पसलियों में भी चोट व अंदर खून जमा था और पेट के अंदर के अंगों जैसे लीवर में चोट और रक्तस्राव हुआ था।

पहचान छिपाने के लिए मुंडवा लिया था सिर

हल्द्वानी। पुलिस के चंगुल से बचने के लिए हत्यारोपी अभय ने अपना हुलिया तक बदलने की कोशिश की। उसने ज्योति को मौत के घाट उतारने से पहले अपना सिर मुंडवाया ताकि वारदात को अंजाम देने के बाद वो सीसीटीवी कैमरों में कहीं पर भी अपने असल रूप में न दिखाई दे। हत्या के दिन उसने अपने चेहरे और सिर को ढक लिया था, ताकि अगर सीसीटीवी में नजर भी आए तो उसकी पहचान न हो सके। हालांकि अपनी चाल-ढाल को वह बदलना भूल गया और पुलिस की नजर में आ गया। पुलिस ने उसका फोटो बिहार तक के थानों तक पहुंचा दी थी। अभय जानता था कि पुलिस उसके पीछे है। उसने पुलिस को चकमा देने के लिए अपना सिर मुंडवा लिया था।

कांग्रेस नेता प्रदीप नेगी सड़क हादसे में घायल

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। यूथ कांग्रेस के राष्ट्रीय समन्वयक प्रदीप नेगी रविवार रात गाजियाबाद में सड़क हादसे में घायल हो गए। उन्हें अस्पताल में उपचार देने के बाद डिस्चार्ज कर दिया है। इलेक्ट्रिक बस के डिवाइडर पर चढ़ने से हादसा हुआ। कांग्रेस नेता प्रदीप नेगी ने बताया कि रविवार रात 11 बजे वह हल्द्वानी से दिल्ली के लिए रवाना हुए। सुबह करीब साढ़े चार बजे के आसपास डासना, गाजियाबाद के पास एकाएक बस डिवाइडर के ऊपर चढ़ गई। जिस कारण प्रदीप समेत बस में सवार सात से आठ लोग घायल हो गए। कांग्रेस नेता के नाक और हाथ में चोट आई। उन्हें तत्काल नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। जहां उपचार के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया। वह किसी निजी कार्य से दिल्ली जा रहे थे। सूचना मिलने के बाद परिजन हल्द्वानी से उनका हालचाल जानने दिल्ली चले निकल गए।

'पहाड़ी स्टोर' का भ्रमण

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। विकासखंड हल्द्वानी में आईएफएडी दिल्ली की टीम ने एसएचजी समूह की महिलाओं द्वारा किए जा रहे कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान टीम ने कटघरिया के पास खुले एक आउटलेट 'पहाड़ी स्टोर' का भी भ्रमण किया। इसके पश्चात विकासखंड हल्द्वानी में समूह के क्लस्टर की महिलाओं के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में टीम द्वारा महिलाओं को वित्तीय समावेशन के बारे में जानकारी दी गई और उनके उत्पादों को ऑनलाइन प्लेटफार्म पर लाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके साथ ही महिलाओं से उनके उद्योग को बेहतर बनाने के लिए सुझाव भी मांगे गए। कार्यक्रम के समापन पर अभिजीत कुमार ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए नैनीताल जनपद में चल रहे गतिविधियों पर संतोष जताया। टीम में विजय तुली, अभिजीत कुमार और संपत चित्ती शामिल रहे, जबकि जनपद स्तर से तमंच की टीम के सदस्य अविनाश कुमार उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त हल्द्वानी ब्लॉक की टीम से एनआरएलएम के बीएमएम जानकी डसीला, खंड विकास अधिकारी तनवीर असगर और विकासखंड हल्द्वानी के सभी ग्राम विकास अधिकारी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।

यूओयू ने वृद्धाश्रम में बिखेरी खुशियां

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग द्वारा 6वाँ राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह के अवसर पर भावनात्मक और शिक्षाप्रद कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस उपलक्ष्य में विभाग के छात्र-छात्राओं ने हल्द्वानी स्थित श्री आनंद वृद्धाश्रम, रामपुर रोड का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान छात्रों ने बुजुर्गों के लिए सांगीतिक एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं, जिससे वृद्धाश्रम का वातावरण भावनाओं और प्रसन्नता से भर गया। बुजुर्गावस्था में स्वास्थ्य संरक्षण और निवारक उपाय विषय पर विभागीय संकाय द्वारा व्याख्यान भी प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर वृद्धाश्रम की संस्थापिका व तीलू रौतेली पुरस्कार से सम्मानित कनक चन्द और पर्यावरण संरक्षक मदन मोहन बिष्ट की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को प्रेरणादायी बना दिया। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष प्रो. रेनू प्रकाश के मार्गदर्शन में हुआ, जबकि राज्य समन्वयक एनएपीएसडब्ल्यूआई डा. नीरजा सिंह ने राज्य भर में ऐसे आयोजनों के महत्व को रेखांकित किया। इसी श्रृंखला में विश्वविद्यालय के देहरादून परिसर में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसका विषय था मानव स्वास्थ्य में सामाजिक सेतुओं का महत्व। इस संगोष्ठी में डा. भावना डोभाल, डा. सुभाष रमोला, डा. नरेंद्र जगूड़ी, डा. गोविंद सिंह रावत सहित विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएं व कार्मिकों ने भाग लिया। इस पूरे आयोजन में कार्यक्रम समन्वयक डा. नीरजा सिंह, सहायक प्राध्यापक कुशा सिंह और डा. पूजा हैड़िया भी सक्रिय रूप से उपस्थित रहीं।

मनोज-दीपक की जोड़ी ने जीती ट्राफी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। एसके बैडमिंटन आकादमी द्वारा आयोजित टूर्नामेंट में मनोज-दीपक की जोड़ी ने कमल गुरूरानी-नन्द किशोर की जोड़ी को फाइनल मुकाबले में 20-19 से हराकर ट्राफी पर कब्ज़ा जमा लिया। इससे पूर्व खेले गए क्वार्टरफाइनल के मुकाबलों में कमल गुरूरानी-नन्द किशोर ने गुड्डू-अक्षत की जोड़ी को, रोबिन-मुकेश ने संतोष-प्रीतम को, रचना-अमृत ने कमलेश-तुषार को तथा मनोज-दीपक की जोड़ी ने विक्रांत-अभिषेक को हराकर सेमीफाइनल में अपनी जगह बनाई। सेमीफाइनल का पहला मैच नन्द किशोर-कमल तथा रचना-अमृत के बीच खेला गया। जिसमें 13 के मुकाबले 21 अंक लेकर कमल गुरूरानी-नन्द किशोर की टीम ने फाइनल में अपना स्थान बनाने में कामयाबी हासिल की। इसी प्रकार मनोज-दीपक तथा रोबिन-मुकेश के बीच खेले गए दूसरे मैच में 17 के मुकाबले 21 अंक प्राप्त करते हुए मनोज-दीपक ने फाइनल में प्रवेश किया। इस अवसर पर विजेता तथा प्रतिभागियों को अकादमी के निदेशक भरत दास, डा. प्रवीन्द्र कुमार रौतेला, मनमोहन सिंह, अरविन्द पाण्डेय तथा जगदीश जोशी ने पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए। खेल के दौरान अकादमी के निदेशक भरत दास, भास्कर कांडपाल, पंकज बिष्ट, कमल गुरुरानी, महेश जोशी, दीपक कठायत, तपन पाण्डेय, अमृत नेगी, पायल रावत, मुकेश अधिकारी, मनोज तिवारी, नन्द किशोर, भानु पन्त, अक्षत जोशी, ममता बिष्ट, नागेन्द्र गंगोला, रोबिन, कमलेश जोशी, चेतन रावत, समेत तमाम खेल प्रेमी तथा खिलाड़ी उपस्थित रहे।

सैलरी नहीं मिली, भीख मांगने लगे उपनल कर्मी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। कुमाऊं मंडल के सबसे बड़े डा. सुशीला तिवारी राजकीय चिकित्सालय और राजकीय मेडिकल कॉलेज में कार्यरत 659 उपनल कर्मचारी पिछले 6 महीने से वेतन नहीं मिलने से नाराज हैं। इसीलिए इन दिनों सभी उपनल कर्मचारी अलग-अलग तरीकों से धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं। बुधवार 20 अगस्त को उपनल कर्मचारी प्राचार्य डॉ. अरुण जोशी के कार्यालय के बाहर धरने पर बैठे और जमकर प्रदर्शन किया। इस दौरान उपनल कर्मचारी ने भीख मांग कर प्रदर्शन भी किया। उपनल कर्मचारियों का हंगामा बढ़ता देख राजकीय मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डा. अरुण जोशी भी उनको आश्वासन देने की कोशिश की, लेकिन हड़ताली कर्मचारी अपनी मांगों पर अड़े रहे। कर्मचारियों ने प्रदर्शन करते हुए कहा कि पिछले 6 महीना से उनका वेतन नहीं मिला है। उनकी आर्थिक स्थिति काफी खराब हो चुकी है। कर्मचारियों का कहना है कि अपनी मांगों को लेकर कॉलेज प्रशासन के साथ-साथ मुख्यमंत्री और शासन स्तर पर भी गुहार लगा चुके हैं, लेकिन उनकी सुनवाई नहीं हो रही है। उपनल कर्मचारियों ने बुधवार को मेडिकल कॉलेज प्राचार्य के कार्यालय भी पहुंचकर धरने बैठ गए और अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने जमकर हंगामा भी हुआ। कर्मचारियों को मनाने के लिए मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य भी पहुंचे, लेकिन कर्मचारी अपनी मांगों पर अड़े रहे। हड़ताली कर्मचारियों ने मांग की है कि गैरसैंण में विधानसभा सत्र चल रहा है। ऐसे में मुख्यमंत्री को चाहिए कि कर्मचारियों को मांगों को देखते हुए विधानसभा में इसकी घोषणा करनी चाहिए। मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डा. अरुण जोशी का कहना है कि कर्मचारियों की मांगों को लेकर शासन स्तर पर वार्ता चल रही है। जल्द समाधान निकालने की उम्मीद जताई जा रही है। बजट मिलते ही कर्मचारियों का भुगतान कर दिया जाएगा।

एमबीबीएस में दाखिले की प्रक्रिया शुरू

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। एमबीबीएस में दाखिले के लिए राजकीय मेडिकल कॉलेज में प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गयी है। पहले दिन बुधवार को छात्र अपने अभिभावकों के साथ कॉलेज पहुंचे। कॉलेज प्रशासन ने दाखिला प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए एकल खिड़की प्रणाली लागू की है। इसके तहत छात्रों के दस्तावेजों की जांच, शपथ पत्र तैयार करना और मेडिकल जांच जैसे कार्य एक साथ किए जा रहे हैं। प्राचार्य डा. अरुण जोशी ने बताया कि राज्य कोटे की 109 एमबीबीएस सीटों पर दाखिले होंगे। पहले दिन 32 छात्रों ने दाखिला लिया। दाखिला प्रक्रिया अगले दो दिन तक चलेगी। उन्होंने कहा कि छात्रों को किसी भी तरह की परेशानी न हो, इसके लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

नोशनल इंक्रीमेंट के लिए मौन उपवास

सरकार के रवैये से पेंशनरों में आक्रोश

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। पेंशन की गणना में नोशनल इंक्रीमेंट का लाभ जनवरी 2006 से दिये जाने की मांग को लेकर सेवानिवृत्त सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी रमेश चन्द्र पाण्डे बुधवार की सुबह 11 बजे से बुद्धपार्क में उपवास में बैठ गए।

सेवानिवृत्त कार्मिक समन्वय समिति से जुड़े दर्जनों पेंशनरों ने उनके समर्थन में नारेबाजी करते हुए जोरदार प्रदर्शन किया। उपवास स्थल में आयोजित खुली सभा में वक्ताओं ने पेंशनरों की मांगों के प्रति सरकार के उपेक्षापूर्ण रवैये पर गहरी नाराजगी व्यक्त की। वक्ताओं ने इस आन्दोलन के लिए शासन स्तर से बरती गई संवादशून्यता को जिम्मेदार ठहराया। सभा के बीच देहरादून से सेवानिवृत्त कार्मिक समन्वय समिति के प्रान्तीय मुख्य संयोजक सुमन सिंह वाल्दिया और सह संयोजक नवीन नैथानी की ओर से श्री पाण्डे को सम्बोधित पत्र प्राप्त हुआ जिसे संरक्षक पीसी जोशी द्वारा पढ़कर सुनाया गया। नोशनल इंक्रीमेंट का लाभ केन्द्र की तर्ज पर नहीं मिलने से राज्य के सैकड़ों पेंशनर प्रभावित हैं। ऐसे में इस मांग को लेकर एकजुट होकर संघर्ष करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा गया कि इस पर ठोस रणनीति तय करने के लिए आगामी 23 अगस्त को देहरादून स्थित संकल्प भवन में बैठक बुलाई गई है। आन्दोलन वापस लेने का अनुरोध करते हुए श्री पाण्डे को उक्त बैठक में आने का आमन्त्रण दिया गया है। वरिष्ठ नागरिक कल्याण परिषद के उपाध्यक्ष नवीन वर्मा ने इस मामले मे मुख्य सचिव को पत्र भेजकर इस मामले का वार्ता के जरिये समाधान निकालने को कहा गया है। इस अवसर पर समन्वय समिति के मुख्य संयोजक नवीन काण्डपाल, संरक्षक पीसी जोशी, लीलाधर पाण्डे, वीर सिंह, जेसी पन्तोला, एसके नैय्यर, पूरन चन्द्र, एचबी जोशी, पीसी पन्त, जेएस कन्याल, लक्ष्मण सिंह गौनियां, विजय तिवारी, यतीश पन्त, डीके जोशी, राजेन्द्र बोरा, जेएस खोलिया, भुवन पाण्डे, नवीन जोशी, नरेन्द्र जोशी, ललित मोहन पाण्डे, बीसी उप्रेती आदि थे।

92 लोगों ने कराया स्वास्थ्य परीक्षण

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। जनसेवा समिति द्वारा गांधीनगर पार्क में एक दिवसीय नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। समिति के अध्यक्ष कार्तिक हर्बोला के नेतृत्व में आयोजित इस शिविर में शहर के प्रमुख चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दीं।

शिविर में कुल 92 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। स्वास्थ्य शिविर में संजीवनी चिकित्सालय हल्द्वानी से डा. अजय पुंडीर जनरल फिजिशियन, डा. तन्मय बनर्जी ऑर्थोपेडिक सर्जन, डा. अंशुल केडिया श्वास रोग विशेषज्ञ और डा. अदिति अरोड़ा स्त्री रोग विशेषज्ञ ने मरीजों की जांच की। इसके अलावा आईक्यू सुपर स्पेशलिटी आंखों अस्पताल से वरिष्ठ ऑप्टोमेट्रिस्ट नीतीश तिवारी, फार्मासिस्ट तेज प्रकाश, देवेंद्र, अशोक सिंह राणा, और एलडीपीएल लैब से लैब टेक्नीशियन मानव ने सहयोग प्रदान किया। जनसेवा समिति के अध्यक्ष कार्तिक हर्बोला ने बताया कि समिति का उद्देश्य लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना और समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर इस प्रकार के शिविर आयोजित कर लोगों को चिकित्सकीय लाभ पहुंचाना है। उन्होंने बताया कि समिति आगे भी इस तरह के शिविर हल्द्वानी के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित करती रहेगी। शिविर में रंजन बर्गली, प्रताप रैकवाल, प्रकाश हर्बोला, अजय राजौर, योगेंद्र भट्ट, विशु शर्मा, प्रिंस शर्मा, हर्ष राजौर, हिमांशु सनवाल, योगेश राजौर, करन श्रीवास्तव, मनोज अग्रवाल, उज्ज्वल चौहान, कार्तिक चौहान, कनिष्क ढींगरा, कुणाल वर्मा, उमेश जोशी आदि मौजूद रहे।

पहाड़ी आर्मी ने हत्या के खुलासे पर उठाए सवाल

हल्द्वानी। पहले दिन से ज्योति के परिवार के साथ आंदोलन कर रहे पहाड़ी आर्मी के संस्थापक अध्यक्ष हरीश रावत का कहना है कि मामले में पुलिस ने मुख्य आरोपी अभय को गिरफ्तार किया, लेकिन इसमें शामिल उसके भाई अजय और अन्य पर कार्यवाही नहीं की। गहराई से जांच करते हुए ज्योति के मोबाइल की पड़ताल करें तो कई रसूखदार इसमें लिप्त मिलेंगे। अपेक्षा है कि पुलिस अपनी जांच के दायरे को बढ़ाएगी और सभी दोषियों को न्याय के कठघरे में खड़ा करेगी। मुख्य आरोपी को पकड़ने के लिए हमारे आंदोलन का दवाब काम आया। नहीं तो पुलिस ने इस हत्या को पहले ही दिन आत्महत्या करार दिया था।

सफाई व्यवस्था में लापरवाही बरतने पर होगी कार्रवाई: नगर आयुक्त

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। स्वच्छता व्यवस्था को लेकर नगर निगम ने मैजिक जीनी एजेंसी के साथ बैठक कर सख्त निर्देश जारी किए हैं। निगम प्रशासन ने स्पष्ट किया कि शहर की सफाई व्यवस्था में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। नगर आयुक्त ऋचा सिंह ने एजेंसी को निर्देश दिए कि सभी वाहन पूरी तरह चालू स्थिति में रखे जाए और उनमें लगी जीपीएस प्रणाली काम करती रहे। उन्होंने एजेंसी को दस दिनों के भीतर सभी वाहनों की फिटनेस जांच अनिवार्य रूप से पूरी करने को कहा है। इसके अलावा नगर निगम कार्यालय में शिकायत प्रकोष्ठ स्थापित करने के लिए एजेंसी को दो कर्मियों की तैनाती करने और दो हेल्पलाइन नंबर उपलब्ध कराए गए है। यह हेल्पलाइन नंबर वार्ड 1 से 33 तक की शिकायतों को सुनेंगे व समस्याओं का समाधान भी कराएंगे। साथ ही कर्मचारी नागरिकों से प्राप्त शिकायतों का रजिस्टर भी संधारित करेंगे जिसका समय-समय पर परीक्षण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि एजेंसी को घर-घर और वाणिज्यिक क्षेत्रों से समय पर कचरा संग्रहण करना होगा। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि तय समय सीमा में इन निर्देशों का पालन नहीं किया गया तो एजेंसी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। बैठक में एजेंसी के प्रोजेक्ट हेड जसवीर सिंह, निर्भय सिंह, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट (एसडब्ल्यूएम) से विवेक यादव मौजूद रहे।

बागजाला में धरना तीसरे दिन भी

बेदखली की कोशिश कर रही भाजपा सरकार: आनंद सिंह नेगी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। अखिल भारतीय किसान महासभा बागजाला द्वारा अपनी आठ सूत्रीय मांगों भूमि के मालिकाना अधिकार, मानसून सत्र में राजस्व गांव का प्रस्ताव पारित करने, जनता की पेयजल, सड़क, विकास कार्यों और निर्माण कार्यों पर लगी रोक हटाने, जल जीवन मिशन योजना को शुरू करने, पंचायत प्रतिनिधि चुनने के अधिकार को बहाल करने, बागजाला गांव समेत सभी वन भूमि, नजूल भूमि पर बसे सभी लोगों को मालिकाना अधिकार देने जैसी मूलभूत नागरिक सुविधाओं की मांग को लेकर अनिश्चितकालीन धरना तीसरे दिन भी जारी रहा। बुधवार को धरनास्थल पर हुई सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा बागजाला में इधर कुछ सालों से प्रदेश की भाजपा सरकार के निर्देश पर वन विभाग लगातार लोगों को नोटिस दे रहा है। दशकों से काबिज लोगों को मालिकाना हक देने के बजाय भाजपा सरकार बेघर करने की नीतियां बना रही है। असल में भाजपा सरकार 2020 से ही खेती-किसानी को पूंजीपतियों के हाथों सौंपने की केन्द्रीय स्तर पर नीतियां बना रही है। लगातार कम और महंगी होती जमीनों पर किस तरह से बड़े कॉरपोरेट घरानों, बिल्डर कम्पनियों का कब्जा हो यह नीति लगातार भाजपा सरकार बना रही है। कहा कि बागजाला से लेकर दमुवाढुंगा, लालकुआं, बनभूलपुरा, हल्द्वानी, पुछड़ी, रामनगर तक जिले में हर जगह गरीबों से जमीन छीनकर विकास और सौंदर्यीकरण के नाम पर उजाड़ने की कोशिश की जा रही है। जिसे किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। धरना प्रदर्शन में आनन्द सिंह नेगी, डा. कैलाश पाण्डेय, विमला देवी, वेद प्रकाश, प्रेम सिंह नयाल, हरिदित्ता सिंह, तस्लीम अंसारी, मीना भट्ट, चन्दन सिंह मटियाली, मकसूद, परवेज अंसारी, संजय गोस्वामी, राजू बिष्ट, सोहन लाल, पूरन लाल, दौलत सिंह, विकी नेगी आदि मौजूद रहे।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर हमला निंदनीय: सुमित हृदयेश

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर हुए हमले को लेकर हल्द्वानी के विधायक सुमित हृदयेश ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने इस घटना को बेहद निंदनीय करार देते हुए कहा कि लोकतंत्र में असहमति और वैचारिक मतभेद तो स्वाभाविक हैं, लेकिन हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। विधायक हृदयेश ने कहा राजनीति में मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन विचारों की लड़ाई कभी भी हिंसा के रास्ते से नहीं लड़ी जानी चाहिए। सत्ता और विपक्ष के बीच स्वस्थ संवाद ही लोकतंत्र की असली ताकत है। सुमित हृदयेश ने दिल्ली पुलिस से अपेक्षा की कि दोषियों के खिलाफ सख्त और निष्पक्ष कार्रवाई की जाए। उन्होंने सीएम रेखा गुप्ता के सुरक्षित और स्वस्थ होने की कामना भी की।

गैरसैंण स्थायी राजधानी घोषित हो

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। गैरसैंण को स्थाई राजधानी बनाए जाने की मांग को लेकर बुधवार को उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी संयुक्त समिति के पदाधिकारियों ने एसडीएम राहुल साह के माध्यम से मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को ज्ञापन भेजा। उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी संयुक्त समिति के जिलाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह बिष्ट ने सीएम को भेजे ज्ञापन में कहा कि उत्तराखंड राज्य बने 25 वर्ष पूरे होने के बावजूद स्थायी राजधानी का मुद्दा अब भी अनसुलझा है। जो राज्य आंदोलनकारियों का अपमान है। इस संबंध में उत्तराखंड राज्य आंदोलनकारी संयुक्त समिति ने गैरसैंण को स्थायी राजधानी घोषित करने की पुरजोर मांग उठाई, और कहा यदि सरकार ने शीघ्र निर्णय नहीं लिया, तो आंदोलनकारी जन आंदोलन की राह अपनाएंगे। आंदोलनकारियों ने स्पष्ट किया कि यह केवल एक राजनीतिक मांग नहीं, बल्कि जनभावनाओं से जुड़ा विषय है। ज्ञापन देने वालों में जिलाध्यक्ष राजेन्द्र सिंह बिष्ट, डीके जोशी, हेम चन्द्र पाठक, डीएस बिष्ट, दीपक रौतेला, भुवन चन्द्र तिवारी आदि मौजूद रहे।

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजड़ू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं कृष्णा लोहा भण्डार, प्रथम तल काला ढुंगी रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड) से प्रकाशित।

सम्पादक:
एस.एन. राना

*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
☎05946-250286

मुख्यालय:
मोबाइल-9720007290
R.N.I. No. UTTHIN/2003/10264
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

भीतर घातियों को बाहर का रास्ता दिखाए कांग्रेस हाईकमान

चेयरमैन गित्ते और ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि भुल्लर ने की संयुक्त प्रेस वार्ता

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष गुरजीत सिंह 'गित्ते' और बाजपुर ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि स. जोरावर सिंह भुल्लर ने पालिका सभागार में संयुक्त रूप से प्रेसवार्ता कर भीतर घातियों को कांग्रेस से बाहर का रास्ता दिखाने की मांग कांग्रेस हाईकमान से की है।

उन्होंने कांग्रेस संगठन के भीतर पनप रही अनुशासनहीनता को गंभीर चुनौती बताते हुए कहा कि यह प्रवृत्ति पार्टी के भविष्य के लिए खतरनाक है। उन्होंने आरोप लगाया कि ब्लॉक प्रमुख चुनाव में पार्टी की अधिकृत प्रत्याशी सुखमन कौर औलख के खिलाफ कुछ पूर्व कांग्रेस पदाधिकारियों ने खुलेआम भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार किया और कांग्रेस को हराने की साजिश रची। यह न केवल पार्टी के जनाधार पर चोट है, बल्कि निष्ठावान कार्यकर्ताओं के मनोबल को तोड़ने का सुनियोजित प्रयास भी है। बाजपुर चेयरमैन गुरजीत सिंह गित्ते ने यह भी आरोप लगाया कि जनवरी में हुए पालिका चुनावों में भी यही लोग कांग्रेस से बगावत कर पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी के खिलाफ मैदान में उतरे थे।

बाजपुर ब्लॉक प्रमुख सुखमन कौर औलख के पति जोरावर सिंह भुल्लर ने भी बाजपुर चेयरमैन गुरजीत सिंह 'गित्ते' का समर्थन करते हुए कहा कि यदि कांग्रेस पार्टी प्रदेश में अपने संगठनात्मक ढ़ांचे को मजबूत करना चाहती है तो उसे दोहरी चाल चलने वाले कार्यकर्ताओं के प्रति सख्त रूख अपनाना होगा।

जोरावर सिंह भुल्लर ने चेतावनी दी कि यदि कांग्रेस हाईकमान इस मामले में ठोस कार्रवाई नहीं करता है तो निष्ठावान कार्यकर्ताओं का मनोबल टूटेगा और भविष्य के चुनावों में संगठन को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

बाजपुर में चौथी बार पालिका अध्यक्षी संभाल रहे गुरजीत सिंह 'गित्ते' ने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि यदि कांग्रेस संगठन इन लोगों पर शीघ्र कार्रवाई नहीं करता है तो वे और उनके साथ खड़े निष्ठावान कार्यकर्ता कठोर कदम उठाने के लिए बाध्य होंगे। वे बोले, अगर पार्टी ही अनुशासनहीनों को संरक्षण देगी तो निष्ठावान कार्यकर्ताओं से निष्ठा निभाने की उम्मीद करना बेमानी है।

लापता युवक का तालाब में तैरता मिला शव

- **ग्रामीणों में मचा हड़कंप, पुलिस मौके पर पहुंची**

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। बिगराबाग गांव स्थित एक तालाब में सोमवार की सुबह स्थानीय युवक का शव तैरता हुआ पाया गया। ग्रामीणों ने जब सुबह के समय तालाब में युवक के शव को तैरते हुए शव को देखा तो ग्रामीणों में हड़कंप मच गया। वहीं शव को देखने के लिए मौके पर काफी भीड़ इकट्ठा हो गई। ग्रामीणों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया तथा घटना के बारे में जानकारी जुटाई। युवक की पहचान बिगराबाग निवासी संदीप सिंह राणा उम्र करीब 25 वर्ष पुत्र सत्यव्रत सिंह राणा के रूप में हुई। वहीं घटना की जानकारी होने पर परिजनों ने परिजनों में कोहराम मच गया तथा उनका रो-रो कर बुरा हाल है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक मृतक संदीप अविवाहित था जो सोमवार को अपराह्न लगभग ढाई बजे खेत में दवा छिड़काव करने गया था तब से घर वापस नहीं लौटा। शाम तक घर वापस न आने पर परिजनों ने खोजबीन शुरू कर दी लेकिन उसका कहीं पता नहीं लग पाया। वहीं रिश्तेदारी या मित्रों के साथ जाने की आशंका जाहिर करते हुए परिजनों ने गुमशुदगी की रिपोर्ट भी दर्ज नहीं कराई। सोमवार की सुबह गांव के ही समीप स्थित तालाब में उसका शव उतराता हुआ पाया गया। परिजन ने मौत मामले में किसी भी प्रकार की आशंका जाहिर करने से इनकार कर रहे हैं। मृतक संदीप सिंह राणा सबसे बड़ा भाई था छोटा भाई शुभम सिंह राणा है तथा मृतक से छोटी बहन संगीता राणा की शादी हो चुकी है।

वहीं मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लिया तथा पंचनामा की कार्यवाही कर पोस्टमार्टम हेतु खटीमा सरकारी अस्पताल भेज दिया।

एक नजर

राजविंदर कौर बनी ग्राम प्रधान संघ की अध्यक्ष

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। विकासखंड के समस्त ग्राम प्रधानों की एक होटल में बैठक आयोजित हुई। जिसमें ग्राम प्रधानों की सर्व समिति से ग्राम सभा इटव्वा की ग्राम प्रधान राजविंदर कौर को बाजपुर ग्राम प्रधान संघ का अध्यक्ष बनाया गया।

इसके अलावा ग्राम प्रधान संघ का उपाध्यक्ष अजय सिंह, महिला उपाध्यक्ष माया देवी, महिला सचिव मनप्रीत कौर, उप सचिव नेहा रानी, महामंत्री संगठन बलविंदर सिंह, मंत्री संगठन रेनू कौर, कोषाध्यक्ष रोहित सेमवाल, मीडिया प्रभारी सूरज राठौड़, संयोजक भानु प्रताप सिंह को बनाया गया। नवनिर्वाचित ग्राम प्रधान संघ की अध्यक्ष राजविंदर कौर ने कहा बाजपुर विकास खंड के सभी ग्राम प्रधानों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया जाएगा और धामी सरकार की गलत नीतियों का पुर जोर विरोध किया जाएगा।

जयंती पर पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी को किया याद

शाह टाइम्स संवाददाता

किच्छा। आधुनिक भारत के रत्न देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की 81 वीं जयंती पर उनकी स्मृति में कांग्रेसियों किच्छा ने स्व. गांधी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर याद किया।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की जयन्ती के इस मौके पर नगर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी ने कहा की स्व. राजीव गांधी जैसे नेता की दूरदर्शिता के कारण ही देश कम्प्यूटर युग में प्रवेश कर सका। जब कम्प्यूटर के क्षेत्र में अध्ययन एवं अनुसन्धान के प्रयासों को उन्होंने बल देना शुरू किया था तो लोगों ने इससे बेरोजगारी बढ़ने की बात कहकर उनकी तीव्र आलोचना की थी, किन्तु आज देश की प्रगति में कम्प्यूटर की उपयोगिता एवं भूमिका से यह स्वाभाविक रूप से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि स्व. राजीव गांधी अपने समय से कितना आगे चलते हुए पूरी सूझ-बूझ से निर्णय लिया करते थे। भारत आज सूचना प्रौद्योगिकी की सुपर शक्ति बन चुका है और इसमें कम्प्यूटर की भूमिका अहम् है। स्व. राजीव गांधी के नेतृत्व में देश ने आधुनिकीकरण एवं खुशहाली के नए युग में प्रवेश किया। इस मौके पर कांग्रेस कमेटी नगर अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी, सुनीता कश्यप, मेजर सिंह, एनयू खान, मिसवाल कुरैशी, अशोक मित्रा, ,गुलशन सिन्धी, फिरदौस सलमानी ,हरभजन सिंह, त्रिपत सिंह, हाफिज अख्तर रजा ,फरियाद शाह, छोटे लाल कोली, रितेश चावला, शिव कुमार कटियार, हरविन्द्र पाल सिंह, राजवीर आदि थे।

मृतक आश्रित को दुग्ध संघ ने दिया एक लाख का चेक

शाह टाइम्स संवाददाता

गूलरभोज। बुधवार को दुग्ध संघ ने दुग्ध समिति के सचिव की मृत्यु उपरान्त आश्रित को एक लाख रुपये का चेक प्रदान किया। ललपुरी दुग्ध समिति सचिव हिमांशु गड़िया की बीते कुछ माह पूर्व सड़क हादसे में निधान हो गया था। बुधवार को ललपुरी में आयोजित कार्यक्रम के दौरान दुग्ध संघ प्रबंधक राजेश मेहता व डायरेक्टर चन्द्र शेखर द्विवेदी ने सचिव सामूहिक बीमा योजना के तहत हिमांशु की पत्नी भूमि कार्की को एक लाख का चेक प्रदान किया। यहां सुपरवाइजर देवेद्र सिंह बोरा, सचिव गीता देवी, अध्यक्ष किशन सिंह चौहान, हरिनदंन तिवारी आदि मौजूद रहे।

युवा कांग्रेसियों ने फूंका राज्य सरकार का पुतला

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। नैनीताल में चुनाव में हुई धांधली और नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य सहित कांग्रेसियों पर दर्ज मुकदमे वापस करने की मांग को लेकर यूथ कांग्रेस के जिला अध्यक्ष और दियोहरी के ग्राम प्रधान अराज सिंह सिद्धू के निर्देश पर युवा युवा कांग्रेस के आक्रोशित कांग्रेसियों ने बेरिया तिराहे पर राज्य सरकार का पुतला फूंका और राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

युवा यूथ कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कहा राज्य में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो गई है जिला स्तरीय अधिकारी अपनी जिम्मेदारियां से बच रहा है स्थानीय अधिकारी कानून व्यवस्था को लेकर अपनी जिम्मेदारी नहीं समझ रहे हैं यही वजह है जो लोग कानून को अपने हाथों में लेकर उसका सरे आम उल्लंघन कर रहे हैं आए दिन जगह-जगह फायरिंग हो रही है। राज्य में गुंडागर्दी बढ़ती जा रही है। चुनाव में दिन दहाड़े गोलियां चलाई जाती हैं।

पुलिस फोर्स की मौजूदगी में यह सब होता है। उसके बाद वीडियो वायरल होने पर भी उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की जाती है। इसलिए शासन प्रशासन और राज्य सरकार पर सबसे बड़ा सवाल उठ रहा है।

साइकिल रैली निकाली

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। थारू राजकीय इंटर कॉलेज खटीमा में एनसीसी तथा इको क्लब के माध्यम से फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत साइकिल रैली का आयोजन किया गया। इस दौरान एनसीसी कैडेट में जन मानस को साइकिल चलाकर फिट रहने का संदेश पहुंचाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य संतोष कुमार ने कहा कि साइकिल चलाना हम सबके लिए बहुत अच्छा है। कार्यक्रम के संयोजक एनसीसी ऑफिसर नरेंद्र सिंह रौतेला ने कहा कि फिट इंडिया के तहत हम लोगों को जागरूक करना चाहते हैं। यहां प्रमोद सिंह राणा, होशियार सिंह बिष्ट, मेवाराम, चंद्र कुमार, आलोक सिंह आदि रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी को किया याद

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। कांग्रेस कार्यालय रामनगर में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व विधायक रणजीत सिंह रावत के नेतृत्व में पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. राजीव गांधी का जन्मदिन मनाया गया। वक्ताओं ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला। कहा कि राजीव गांधी आधुनिक भारत के निर्माता थे। इस अवसर पर युवा कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता एडवोकेट फैजुल हक,नगर कांग्रेस अध्यक्ष भुवन शर्मा, ब्लाक अध्यक्ष देश बन्धु रावत, ओमप्रकाश, शतेश्वरी रावत, वीना रावत, अनिल अग्रवाल खुलासा, नरेश कालिया, अनीस खान, नजाकत अली, जावेद खान, सुऐव रजा,अफाक हुसैन, लीला धर जोशी, धीरज मौलेखी, चांद खान,बाबर खान, मोहम्मद यूसुफ, गिरधारी लाल राजीव अग्रवाल, गाजी करीम, महेश पांडे, धारा बल्लभ पांडे , वीरेंद्र तिवारी, राजेन्द्र सिंह बिष्ट आदि मौजूद रहे।

मैट्रोपॉलिस में पांचवीं मंजिल से गिरा मजदूर, हालत गंभीर

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। नैनीताल मार्ग पर स्थित मैट्रोपॉलिस कालोनी में पेन्ट करने के दौरान एक श्रमिक पांचवी मंजिल से असन्तुलित होकर नीचे आ गिरा और लहूलुहान होकर गम्भीर रूप से घायल हो गया। अचानक हुई घटना से वहा कार्य कर रहे अन्य मजदूरों, कालोनी वासियों को एवं सोसाइटी के पदाधिकारियों में हड़कम्प मच गया। आनन-फानन में घायल मजदूर को उपचार के लिए तत्काल जिला चिकित्सालय ले जाया गया। जहां प्राथमिक उपचार करने के बाद उसकी हालत चिंता जनक देखते हुए उसे रेफर कर दिया गया। जहां घायल मजदूर की हालत अभी भी गम्भीर बनी हुई है।

जानकारी के अनुसार मैट्रोपॉलिस कालोनी में सोसाइटी द्वारा पिछले कुछ दिनों से पेटिंग का कार्य कराया जा रहा है, जिसमें कई मजदूर अपने अपने ठेकेदारों के अधीन कार्य कर रहे है। बताया जाता है कि आज प्रात: कालोनी पर पांचवी मंजिल पर रस्सी के सहारे मंच पर बैठकर दिनेशपुर निवासी धीरज सरकार पेन्ट कर रहा था।

इसी दौरान वह असंतुलित होकर नीचे आ गिरा और गम्भीर रूप से घायल हो गया उसके सिर व चेहरे पर गम्भीर चोटे आई है। चिकित्सकों ने उसकी हालत को चिन्ताजनक बताया है। सोसाइटी के पदाधिकारियों ने बताया कि सभी ठेकेदारों को कार्य के दौरान मजदूरों की सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध करने के पूर्व में ही निर्देश दिये गये थे जो अनुबन्ध पत्र में भी शामिल है।

चुनावी रंजिश में दो पक्ष भिड़े, दो भाई घायल

- **पुलिस ने नामजद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की**

शाह टाइम्स संवाददाता

किच्छा । ग्राम दरऊ में चुनावी रंजिश को लेकर एक पक्ष पर जानलेवा हमला किए जाने का मामला सामने आया है। घटना में दो सगे भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। पीड़ित पक्ष की तहरीर पर पुलिस ने नामजद आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पीड़ित ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि वह अपने घर पर खाना खाने के बाद अपने भाई महावीर पुत्र स्व. रामलाल के साथ अम्बेडकर चौक पर टहलने गया था। इसी दौरान पहले से घात लगाकर बैठे राम सिंह पुत्र स्व. बल्देव, महेन्द्र पुत्र श्यामलाल, अरविन्द पुत्र जीवनलाल, अमर सिंह पुत्र स्व. बल्देव प्रसाद, तुषार पुत्र वेदपाल, विपिन और राहुल पुत्र स्व. महावीर निवासी ग्राम दरऊ ने लाठी-डंडों व धारदार हथियारों से हमला बोल दिया। हमले में सिर पर धारदार हथियार से वार किया गया, जिससे गहरा घाव हो गया, जबकि उसके भाई महावीर को बुरी तरह लाठी-डंडों से पीटा गया। पीड़ित का आरोप है कि हमला करने वाले राम सिंह ने कहा कि भतीजे विपिन को बीडीसी का चुनाव न लड़ाने की बड़ी गलती की है, अब तुम्हें इसी तरह पिटना पड़ेगा। पीड़ित के अनुसार, यदि मौके पर प्रमोद व धर्मेन्द्र न पहुंचते तो हमलावर उन्हें जान से मार देते। जाते-जाते आरोपियों ने गालियां दीं और धमकी दी कि इस बार बच गए हो, लेकिन आगे नहीं बचोगे। पुलिस ने मामले में नामजद सभी आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है और जांच शुरू कर दी है।

बाढ़ की समस्या का स्थायी समाधन की मांग को लेकर सपा नेता अरविंद यादव ने डीएम से की मुलाकात

शाह टाइम्स संवाददाता

बाजपुर। समाजवादी पार्टी यूथ ब्रिगेड के राष्ट्रीय महासचिव अरविंद यादव ने बाजपुर में प्रत्येक वर्ष आने वाली बाढ़ की समस्या का स्थाई समाधान की मांग को लेकर डीएम नितिन भदौरिया से मुलाकात की। साथ ही अरविंद यादव ने डीएम को लिखित रूप में 1980 से चली आ रही बाढ़ की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया।

कहा कि दीर्घकालिक समस्या का मुख्य कारण पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा के पश्चात चुना खान बेलपढ़ाओ (जिला नैनीताल) की नहर का पानी सीधे बाजपुर नगर की लेबड़ा नदी में आना है। भारी वर्षा के समय यह जल प्रवाह अत्यधिक बढ़ जाता है, जिससे नगर में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस समस्या के समाधान के लिए मेरा विनम्र सुझाव है कि जलधारा को गड़प्पू नहर में परिवर्तित कर सीधे बोर जलाशय की ओर मोड़ा जाए। इसके लिए लगभग 6 किलो मीटर लंबी नहर का चौड़ीकरण किया जाना आवश्यक होगा। यदि यह कार्य कराया जाए तो बाढ़ की समस्या का स्थायी समाधान संभव है। डीएम नितिन भदौरिया से इस विषय पर गंभीरता से विचार करते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करें।

कांग्रेस ने किया नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को सम्मानित

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। कांग्रेस विधायक कैंप कार्यालय में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी के जन्मदिन के शुभ अवसर पर महिला कांग्रेस की जिलाध्यक्ष रेखा सोनकर के नेतृत्व में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नवनिर्वाचित जिला पंचायत सदस्य हीरा मुंडेला, ग्राम प्रधान राखी राणा व क्षेत्र पंचायत सदस्य नेहा जोशी को शॉल ओढ़ाकर कर सम्मानित किया गया तथा उनको शुभकामनाएं दी गई। इस अवसर पर उपस्थित खटीमा विधायक की धर्मपत्नी कविता कापड़ी, कांग्रेस प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य बॉबी राठौर, शांति सामंत, बीना राणा, कृष्ण नेगी, फूलमती राणा, विद्या, ज्योति तथा लीला अधिकारी सहित सभी सम्मानित कांग्रेस जन उपस्थित रहे।

सरकारी इंटर कॉलेज से चोरी हुए आठ पंखे बरामद

- **पुलिस ने मामले का खुलासा कर नशे का आदी शातिर चोर दबोचा**

शाह टाइम्स संवाददाता

सितारगंज। कोतवाली सितारगंज पुलिस ने अपनी सतर्कता और तकनीकी कुशलता का परिचय देते हुए सरकारी इंटर कॉलेज से चोरी हुए आठ पंखों की वारदात का खुलासा कर आरोपी को सलाखों के पीछे पहुंचा दिया है।

मामला 11 अगस्त का है, जब राजकीय इंटर कॉलेज शक्तिफार्म की प्रधानाचार्य मनीषा अग्रवाल ने विद्यालय भवनों से आठ सीलिंग फैन चोरी होने की तहरीर दी थी। सरकारी संस्थान से चोरी की इस घटना को गंभीर मानते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने तुरंत खुलासा करने के आदेश दिए। पुलिस ने विशेष टीम गठित कर जांच शुरू की। टीमों ने स्कूल परिसर से लेकर आसपास की गलियों व लिंक रोडों तक लगे 150 से अधिक सीसीटीवी फुटेज खंगाले, घंटों की मेहनत के बाद मैनुअल सर्विलांस के जरिए संदिग्ध की पहचान की गई। आखिरकार 19 अगस्त को मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने वन शक्तिमंदिर शक्तिफार्म के पास दबिश देकर आरोपी अभिषेक सिकदार (24 वर्ष), निवासी नेताजी कॉलोनी शक्तिगढ़ को गिरफ्तार कर लिया। तलाशी लेने पर आरोपी के पास से चोरी के सभी आठ पंखे बरामद कर लिए गए। पूछताछ में आरोपी ने नशे का आदी होने की बात स्वीकार करते हुए बताया कि अपनी लत पूरी करने के लिए वह लगातार छोटे-मोटे चोरी की घटनाओं को अंजाम देता रहा है। आरोपी का आपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा है।

पुलिस ने आरोपी को न्यायालय में पेश कर दिया है। इस सराहनीय सफलता में चौकी प्रभारी शक्तिफार्म उपनिरीक्षक प्रकाश भट्ट, उपनिरीक्षक सुरेंद्र सिंह बोरा, कॉन्स्टेबल भवान सिंह और हरीश कबड़वाल की टीम की अहम भूमिका रही। पुलिस की इस त्वरित कार्रवाई ने जहां स्थानीय जनता में राहत की सांस दी है, वहीं अपराधियों के लिए यह कड़ा संदेश है कि कानून के शिकंजे से कोई बच नहीं सकता।

जिपं अध्यक्ष अजय ने प्रशासक कामिल की मां के देहांत पर किया शोक व्यक्त

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। उधम सिंह नगर जनपद के नवनिर्वाचित जिला पंचायत अध्यक्ष अजय मौर्य ने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ जामा मस्जिद के प्रशासक व वरिष्ठ भाजपा नेता कामिल खान के आवास पर पहुंचकर उनकी माता फहमीदा बेगम के इंतकाल पर शोक संवेदना व्यक्त किया।

आपको बता दें कि जामा मस्जिद के प्रशासक कामिल खान की माता फहमीदा बेगम का सोमवार की सुबह इंतकाल हो गया था। इस दुखद घटना के बाद क्षेत्र के तमाम लोगों एवं जनप्रतिनिधियों ने उनके आवास पर पहुंचकर शोक व्यक्त किया। इसी क्रम में बुधवार को जिला पंचायत अध्यक्ष अजय मौर्य ने भी कामिल खान के आवास पर पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त किया तथा शोक संतृप्त परिवार को ढांढस बंधाया तथा उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से कामना की। इस अवसर पर उनके साथ वरिष्ठ भाजपा नेता सतीश गोयल, नंदन सिंह खड़ायत, नरेंद्र नरु, बॉबी ढींगरा, प्रमोद गड़कोटी, जफर खान, अनीस अहमद तथा हाफिजुर्र रहमान सहित अनेकों लोग मौजूद थे।

बोलेरो में पकड़ी खैर की अवैध लकड़ी

- **चौकी कलकत्ता पुलिस ने तीन तस्कर दबोचे**

शाह टाइम्स संवाददाता

किच्छा। तीन लाख रुपए से अधिक की चोरी की लकड़ी के गिल्टों से भरे बोलेरो वाहन समेत तीन लकड़ी तस्करों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने लकड़ी तस्करों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर न्यायालय भेजा है।

कलकत्ता फार्म पुलिस चौकी इंचार्ज ओम प्रकाश सिंह नेगी ने बताया कि उनके नेतृत्व में पुलिस टीम रूटीन वाहन चेकिंग अभियान चलाई हुई थी। इसी दौरान ब्लैक कलर का बोलोरो वाहन संख्या न्च20स-7191 के आने पर वाहन की तलाशी ली तो उसमें जंगल से चोरी छुपे काटी गई खैर की लकड़ी के 17 गिल्टे पाए गए जिसकी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत तीन लाख रुपये से अधिक बताई गई है। वाहन में बैठे दो लोग एवं वाहन चालक बरामद लकड़ी के संबंध में कोई भी सटीक जवाब एवं कोई कागज नहीं दिख पाये।

पुलिस ने खैर की लकड़ी से भरे वाहन को कब्जे में लेकर वाहन चालक समेत वाहन में सवार अन्य दो और लोगों को हिरासत में ले लिया। हिरासत में लिए गए लकड़ी तस्करो ने पुलिस पूछताछ में अपने नाम क्रमश: रमेश पाल पुत्र कन्हैया लाल ,दिनेश पाल पुत्र जीवा राम निवासीगण हमीरपुर थाना टांडा जिला रामपुर उत्तर प्रदेश एव तारा सिंह पुत्र बलदेव सिंह निवासी कोर्ट खरा सूर्य नगर थाना किच्छा जिला उधम सिंह बताया। पुलिस ने वाहन सीज कर लकड़ी तस्करों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर न्यायालय भेजा है। लकड़ी तस्करों को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में कलकत्ता फार्म पुलिस चौकी इंचार्ज ओमप्रकाश सिंह नेगी, का. यशपाल आर्या, कांनि अमित कुमार, ग्राम प्रहरी योगेन्द्र कुमार, अरविंद कुमार आदि

जन मुद्दों पर सजग रहने के बजाय विपक्ष का सदन में सोना दुखद: कमल जिंदल

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर । भाजपा ने कांग्रेस पर स्वार्थपरक राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा कि जन मुद्दों पर सजग रहने के बजाय विपक्ष सदन मे सो गया और उसकी निंद्रा नही टूटी। विपक्ष का सड़क से सदन के भीतर जन मुद्दों पर लड़ने की बात भी शिगूफा ही साबित हुआ।

भाजपा जिलाध्यक्ष कमल जिंदल ने निशाना साधा कि आपदा के जख्मों पर मरहम लगाने के बजाय विपक्षी नेताओं ने अपने ऊपर लगे मुकद्दमों को लेकर हंगामा किया। वहीं सत्र समाप्ति को उचित बताते हुए कहा, सदन सिर्फ हंगामा करने, नींद लेने और राजनीति के लिए ही नही चलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने गैरसैण सत्र में विपक्षी विधायकों द्वारा सदन में की गई तोड़फोड़ और अराजकता की कड़े शब्दों में निंदा की है।

कमल जिंदल ने कहा कि आज प्रदेश धराली, पौड़ी आदि अनेकों स्थानों पर आपदा के दंश का सामना कर रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के नेतृत्व में शासन प्रशासन जनता के सहयोग से राहत बचाव कार्यों के संचालन और प्रभावितों को मदद पहुंचाने में लगा है। ऐसे में सहयोग के हाथ बढ़ाने के बजाय कांग्रेस पार्टी लगातार नकारात्मक राजनीति कर रही है। उनके नेताओं द्वारा लगातार रेस्क्यू ऑपरेशन और राहत राशि को लेकर अफवाह फैलाई गई। उन्होंने कहा कि जनभावनाओं का सम्मान करते हुए सरकार द्वारा पहले से ही गैरसैण में मानसून सत्र आहूत किया हुआ था। बेहतर होता कि सत्र के आगाज में त्रासदी से जान गंवाने और किसी भी तरह का नुकसान उठाने वालों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए, विस्तृत चर्चा होती।

भाजपा जिला अध्यक्ष ने कहा हैरानी है कि आपदा, विकास, जनहित या अपने क्षेत्र का कोई भी मुद्दा उन्हें सदन में उठाने के लिए महत्वपूर्ण नहीं लगा। वह नैनीताल में उनके वरिष्ठ विधायकों और नेताओं द्वारा फैलाई गई अराजकता पर हुई कानूनी कार्रवाई को लेकर अधिक उगरवृह्वा। सदन को बंधक बनाकर, अपनी अलोकतांत्रिक मांग मनवाने के उनके ऐसे कृत्य को जनता ने एक बार पुन: देखा है।

एसएसबी महानिरीक्षक ने सीमा सुरक्षा का लिया जायजा

■ महानिरीक्षक अमित कुमार ने इंडो-नेपाल सीमा चौकियों का किया निरीक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। सशस्त्र सीमा बल मुख्यालय रानीखेत के महानिरीक्षक अमित कुमार ने 57 बटालियन सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकियों का निरीक्षण कर स्थिति का जायजा दिया। इस दौरान उन्होंने इंडो-नेपाल सीमा स्थित सीमा चौकियों नारायण नगर, सिसैया एवं मेलाघाट का दौरा कर जवानों से मुलाकात किया तथा उनके मनोबल को बढ़ाया साथ ही सीमा सुरक्षा की जानकारी ली।

महानिरीक्षक अमित कुमार ने स्थलीय निरीक्षण करते हुए जवानों को सीमा सुरक्षा में और अधिक सतर्कता एवं सक्रियता बरतने के निर्देश दिए। सीमा चौकी सिसैया में चल रहे निर्माण कार्य का निरीक्षण करते हुए उन्होंने जानकारी प्राप्त किया। महानिरीक्षक ने बताया कि सशस्त्र सीमा बल अपने आदर्श वाक्य सेवा, सुरक्षा व बंधुत्व को आत्मसात करते हुए दिन-रात पहाड़ से लेकर तराई तक हर मौसम और हर परिस्थिति में राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित है। कठोर भौगोलिक परिस्थितियों, खुले सीमाई इलाकों और चुनौती पूर्ण हालात के बावजूद भी एसएसबी के जवान पूरी निष्ठा, अनुशासन पराक्रम के साथ देश की सीमाओं की सुरक्षा कर रहे हैं। एसएसबी सीमा पर प्रहरी होने के साथ-साथ स्थानीय नागरिकों का मित्र, सहयोगी और सुरक्षा कवच भी है। इस दौरान महानिरीक्षक अमित कुमार ने जवानों की कार्यप्रणाली की सराहना करते हुए उनके समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा एवं अनुशासन की प्रशंसा की। इस अवसर पर क्षेत्रीय मुख्यालय पीलीभीत के उपमहानिरीक्षक अनिल कुमार शर्मा, 57 बटालियन सितारगंज के कमांडेंट मनोहर लाल, उप कमांडेंट अनिल कुमार यादव, दीपा तोमर, निरीक्षक मोहर सिंह, सुशील कुमार, सहायक उप निरीक्षक राजू कुमार सिंह सहित अन्य जवान उपस्थित रहे।

निर्विरोध निर्वाचित ग्राम प्रधानों संग जिलाधिकारी करेंगे संवाद

शाह टाइम्स संवाददाता

पिथौरागढ़। जनपद में त्रिस्तरीय पंचायत चुनावों में निर्विरोध निर्वाचित ग्राम प्रधानों का सम्मान एवं संवाद कार्यक्रम कल जिला पंचायत सभागार में दोपहर 12:30 बजे से आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर जिलाधिकारी विनोद गोस्वामी की अध्यक्षता में "कॉफी पर चर्चा" के माध्यम से ग्राम स्तर की समस्याओं, प्राथमिकताओं और विकास की संभावनाओं पर सीधा संवाद होगा। 'यह पहल राज्य में अपनी तरह की पहली और अनूठी पहल है, जिसमें जिला प्रशासन द्वारा निर्विरोध प्रतिनिधियों को न केवल सम्मानित किया जा रहा है बल्कि उन्हें नीति-निर्माण की दिशा में सक्रिय भागीदारी के लिए आमंत्रित किया गया है। गौरतलब है कि जनपद की 82 ग्राम पंचायतों में निर्विरोध प्रधान चुने गए हैं।

बैठक के दौरान जिलाधिकारी नवनिर्वाचित प्रधानों का सम्मान करेंगे तथा उनसे जमीनी स्तर की चुनौतियों और सुझावों को साझा करने का आग्रह करेंगे। जिलाधिकारी का कहना है किख्र

निर्विरोध निर्वाचित प्रतिनिधि समाज में आपसी भाईचारे और सहयोग की मिसाल पेश करते हैं। पंचायत स्तर पर सामाजिक सद्भाव और विकास की गति को तेज करने में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रशासन चाहता है कि इन जनप्रतिनिधियों के अनुभवों और विचारों को सुनकर योजनाओं को धरातल पर अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके। इस संवाद में ग्राम पंचायतों से संबंधित मुद्दों जैसे पेयजल आपूर्ति, सड़क एवं संपर्क मार्ग, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, मनरेगा, महिला सशक्तिकरण एवं आजीविका संवर्द्धन पर विशेष चर्चा की जाएगी। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि गांवों की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर लागू किया जाए।

एक नजर

दीपक जोशी राष्ट्रीय राजमार्ग डिविजन लोहाघाट के होंगे नए अधिशासी अभियंता

शाह टाइम्स संवाददाता

लोहाघाट। दीपक जोशी राष्ट्रीय राजमार्ग डिविजन लोहाघाट के नए अधिशासी अभियंता होंगे श्री जोशी यहां से चार माह पूर्व स्थानांतरित किए गए, आशुतोष कुमार का स्थान ग्रहण करेंगे। श्री जोशी वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग डिवीजन अल्मोड़ा में तैनात है। लोहाघाट में वरिष्ठ सहायक अभियंता डीएस जरमाल प्रभारी अधिशासी अभियंता के रूप में कार्य कर रहे हैं। नए अधिशासी अभियंता के आने के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग के कार्य में और तेजी आएगी।

आईफैड सुपरविजन मिशन दल 21 व 22 अगस्त को चंपावत में

शाह टाइम्स संवाददाता

चंपावत। अंतरराष्ट्रीय कृषि विकास निधि द्वारा वित्त पोषित व उत्तराखण्ड ग्राम्य विकास समिति उत्तराखण्ड शासन द्वारा जनपद में संचालित ग्रामोत्थान परियोजना रीप के अंतर्गत परियोजना क्षेत्र में संचालित गतिविधियों की प्रगति समीक्षा हेतु दिनांक 21 व 22 अगस्त को चंपावत जनपद के बनबसा , चंपावत, लोहाघाट व बाराकोट में तीन सदस्यीय आईफैड सुपरविजन मिशन के सदस्यों द्वारा भ्रमण कर कार्यों की समीक्षा की जाएगी।

जिला परियोजना प्रबंधक शुभंकर कुमार झा के अनुसार सुपर विजन मिशन द्वारा परियोजना क्षेत्र में रीप व यूएसआरएलएम द्वारा संचालित गतिविधियों का आंकलन कर समीक्षा की जाएगी। जिसमें संकुल संघ संचालन प्रक्रिया, संघ के दस्तावेज निरीक्षण, उपार्जन प्रक्रिया, संघ की व्यवसायिक गतिविधियां, मूल्य श्रंखला, अल्ट्रा पुवर पैकेज, माइक्रो इंटरप्राइजेज आदि पर चर्चा कर प्रगति समीक्षा की जायेगी, साथ ही परियोजना क्षेत्र के चयनित स्थलों का स्थलीय निरीक्षण किया जाएगा।

सीजीसी झंजेड़ी अब बना सीजीसी विश्वविद्यालय, मोहाली

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। चंडीगढ़ ग्रुप ऑफ कॉलेज, झंजेड़ी ने आधिकारिक रूप से सीजीसी विश्वविद्यालय, मोहाली के रूप में अपने रूपांतरण की घोषणा की है। यह घोषणा चंडीगढ़ में एक प्रेस सम्मेलन के दौरान की गई। सीजीसी विश्वविद्यालय, मोहाली का लक्ष्य भारत को एआई आधारित विकास, तकनीक-प्रथम अध्ययन और नवाचार का नया केंद्र बनाना है। यहां 50:50 शिक्षा मॉडल लागू है। एस. रशपाल सिंह ढालीवाल ने कहा कि यह विश्वविद्यालय समाज के प्रति मेरी प्रतिबद्धता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल कुछ विशेष लोगों का विशेषाधिकार नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह हर व्यक्ति का अधिकार है। सीजीसी विश्वविद्यालय, मोहाली इसी वादे पर आधारित है कि हर छात्र, चाहे उसका कोई भी पृष्ठभूमि हो, उसे सीखने, बढ़ने और सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर मिले। अर्श ढालीवाल, प्रबंध निदेशक, सीजीसी विश्वविद्यालय, मोहाली ने कहा कि विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ ही वेतन-आधारित प्रशिक्षण का अवसर मिलेगा।

विधायक अरोरा ने उठाया फाजलपुर महरौला में हाईकोर्ट के 2017 स्थगन आदेश का मामला

■ बोले स्थगन आदेश पर सरकार की ओर से उच्च न्यायलय में मजबूत पैरवी व नीति बनाकर हजारों परिवारों पर आए संकट से दिलाई जाए राहत

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। गैरसैंण विधानसभा सत्र के दूसरे दिवस विधायक शिव अरोरा ने नियम 53 के अन्तर्गत फजालपुर महरौला के अत्यंत महत्वपूर्ण विषय जिसमे हाई कोर्ट के 2017 के स्थगन आदेश के बाद हजारों परिवार पर आये संकट को देखते हुए सदन में इस विषय को रखा।

उन्होंने कहा रुद्रपुर विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत फाजलपुर महरौला क्षेत्र जिसने हजारों परिवार अनेको वर्ष से वहां निवास करते हैं और उन परिवारों ने अपने भू-खण्ड की रजिस्ट्री, सीलिंग सर्टिफिकेट, दाखिल खारिज, बिजली कनेक्शन आदि सभी मानक पूर्ण करते हुए अपने अपने भू-खण्ड पर आवास बनाकर निवास कर रहे हैं। विधायक अरोरा ने सदन के माध्यम से अवगत करवाया की उच्च न्यायलय के स्थगन आदेश के बाद से फजालपुर महरौला क्षेत्र में यह मकानों के न नक्शे पास हो रहे है, न मकान खरीद व बेच सकते हैं, न बिजली कनेक्शन मिल रहा है न ही उक्त भू-खण्ड पर परिवारों को बैंक द्वारा लोन मिल पा रहा है, जिससे हजारों परिवारों को बेहद गंभीर कठिनाई का समाना करना पड़ रहा है।

विधायकने सदन के माध्यम से सरकार से मांग की उक्त गंभीर विषय पर जिसमे हजारों परिवारों के आशियाने पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं ऐसे में वह यह मांग करते हैं कि जिला प्रशासन, न्याय विभाग, राजस्व विभाग हाईकोर्ट के 2017 के आदेश पर विस्तार से अध्ययन करें क्या यह आदेश सम्पूर्ण फाजलपुर महरौला क्षेत्र के लिए लागू होता है या कुछ सीमित क्षेत्र के लिए लागू होता है, जो वास्तव में सीलिंग की जमीन है या जो नियम विरुद्ध है निश्चित रूप से ऐसे सीलिंग की भूमि कोई कब्जा निर्माण पाया जाता है, उन पर कार्यवाही होनी चाहिए ओर सरकार को वह भूमि अपने कब्जे में लेनी चाहिए।

मगर जिन हजारों परिवारों ने जमीन खरीद कर नक्शा पास करवा कर रजिस्ट्री करवा के सीलिंग सर्टिफिकेट लेकर अपने अपने भू-खण्ड पर निर्माण किये है ऐसे परिवारों पर कोई कार्यवाही न कि जाए।

विधायक शिव अरोरा ने सदन के माध्यम से सरकार से कहा इस जनकल्याण के विषय में सरकार कि ओर से हाईकोर्ट में मजबूत सशक्त पैरवी की आवश्यकता है साथ ही नीति बनाकर इनका स्थाई समाधान निकाला जाना जो हजारों परिवारों के लिए जनहित में उचित होगा।

आजादी के बाद कफललेक एवं खेतीगाड़ गांव के लोगों को पहली बार हुआ आजादी का अहसास

■ सड़क मार्ग बनने की उम्मीदों ने पलायन कर चुके गांव के लोग पुनः पूर्वजों की माटी का तिलक लगाने के लिए हो गए हैं तैयार

शाह टाइम्स संवाददाता

चंपावत। मानेसर से कफललेक एवं खेतीगाड़ के लिए सड़क बनाने का मार्ग खुलने के साथ यहां के लोगों की खुशियों का इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि यहां से पलायन कर चुके सभी परिवार अपने पूर्वजों की हाड़तोड़ मेहनत से तैयार की गई सोना उगलने वाली भूमि को आबाद करने के लिए अभी से प्लानिंग करने में लग गए हैं।

सड़क निर्माण की मांग करते थक एवं सिस्टम से हार चुके यहां के लोगों के पास जिलाधिकारी मनीष कुमार द्वारा उनकी भावनाओं का जो सम्मान किया गया है, उसे देखते हुए यहां के बुजुर्गों का कहना है कि यदि ऐसे डीएम पहले मिले होते तो हंसता-खेलता धन-धान्य से पूर्ण यह गांव वीरान नहीं होता। गत वर्ष यहां के तारा मोहन के पिता का निधन होने के बाद वह वार्षिकी तक तो गांव में रहे, उसके बाद चार महीने पहले ही उनके गांव से पलायन करने से यह गांव खामोशी की आगोश में बंध गया। सड़क बनने की बाधा दूर होने से यहां के बुजुर्गों की उम्र बढ़ने के साथ युवाओं के भविष्य की उम्मीदों में भी पंख लग गए हैं।

खेतीगाड़ ऐसा गांव है, जहां चारों ओर पर्याप्त पानी एवं सोना उगलने वाली ऐसी जमीन है, जो इससे पहले सब्जी, फल-फूल, धान, गेहूं, दूध आदि के उत्पादन के लिए अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए थी। बहरहाल यहां के लोग अब अच्छे दिन आने की उम्मीद कर रहे हैं। कफललेक गांव में अभी तक रह रहे सात परिवार जो पलायन की तैयारी में थे, सड़क बनने की उम्मीद में अब उनके पांव घर में ही बंध गए हैं।

यहां के चंद्रशेखर, राम नारायण, पवन जोशी, मथुरा दत्त, राजेश पचौली, किशन बिष्ट का कहना है कि कौन ऐसी वसुंधरा जमीन, शुद्ध आबो हवा, घर का दूध, सब्जी को छोड़कर कौन नगर में भीड़ का हिस्सा बनना चाहेगा? निवर्तमान ग्राम प्रधान रमेश सिंह पांडे का कहना है कि जिलाधिकारी महोदय के कारण हमारे यहां दो माह पहले ही दीपावली जैसा खुशी का माहौल बन गया है।

तीन माह में ही प्रथम चरण का काम हो जाएगा पूर्णः अधिशासी अभियंता

चंपावत। लोगों की खुशी के साथ अपनी खुशियां जोड़ते हुए लोनिवि के लोहाघाट के अधिशासी अभियंता हितेश कांडपाल का कहना है कि वह तीन माह के भीतर प्रथम चरण का कार्य पूरा कर देंगे तथा आगे की कार्रवाई भी युद्ध स्तर पर जारी रहेगी।

जिला बार एसोसिएशन के संजीव फोगाट बने अध्यक्ष

जसवंत सचिव, बिट्टा उपाध्यक्ष और कुलवीर कोषाध्यक्ष निर्वाचित

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। जिला बार एसोसिएशन के चुनाव में मतगणना के बाद संजीव फोगाट अध्यक्ष, जसवंत सिंह सचिव इंद्रजीत सिंह बिट्टा उपसचिव मनोज सावंत, कोषाध्यक्ष पद पर कुलवीर सिंह ने जीत हासिल की। जिला बार एसोसिएशन के चुनाव में 10 पदों के लिए मतदान हुआ। इस बार कुल 604 मतदाता थे। इनमें से 572 मतदाताओं ने अपने मतों का प्रयोग किया था।

अध्यक्ष पद पर संजीव फोगाट, चरनजीत सिंह व धर्मेंद्र कुमार शर्मा, उपाध्यक्ष पद पर इंद्रजीत सिंह बिट्टा व जयंत दास, सचिव पद पर जसवंत सिंह,रघुवीर सिंह रावत व सर्वजीत कुमार सिंह एवं कोषाध्यक्ष पद पर कुलवीर सिंह, राजीव कुमार शर्मा, सतपाल सिंह कालरा एवं सुखदर्शन सिंह चुनाव मैदान में थे। मंगलवार को सुबह 11 बजे मतगणना की शुरुआत हुई जो रात करीब 9 बजे तक चली। मुख्य चुनाव अधिकारी नवीन चन्द्र, सहायक चुनाव अधिकारी भूपेंद्र सिंह, उमेश नाथ पांडे के मुताबिक 11 राउंड की मतगणना के बाद देर रात परिणाम घोषित किए गए। इसमें अध्यक्ष पद पर संजीव फोगाट 337 मत लेकर विजयी हुए। जबकि प्रतिद्वंद्वी प्रत्याशी चरनजीत सिंह 191 व धर्मेंद्र शर्मा को 37 मत मिले। उपाध्यक्ष पद पर इंदरजीत बिट्टा ने 297 मत लेकर अपने प्रतिद्वंदी 246 मत लेने जयंत दास को 51 मत से हराया। जबकि सचिव पद पर जसवंत सिंह ने 210 मत लेकर अपने प्रतिद्वंदी 184 मत लेने वाले सर्वजीत को 26 मतों से हराया। रघुवीर को 165 मत मिले। कोषाध्यक्ष पद पर कुलवीर सिंह ने 208 मत प्राप्त कर जीत दर्ज की। जबकि, सुखदर्शन को 173, सतपाल को 128 व राजीव को 53 मत मिले। उपसचिव पद पर मनोज सामंत ने 225 मतों के साथ जीत दर्ज की। इस सीट पर अन्य प्रत्याशी दिनेश गुप्ता को 116, रवि रविन्द्र सिंह को 106 व हरबंश लाल को 43 मत मिले। इसके अलावा गिरिराज कुमार लेखा परीक्षक, गिरीश चंद्र चतुर्वेदी पुस्तकालय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। जबकि शाहिद हुसैन, जगदीश बिष्ट वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य और अंकित सिडाना, अभिषेक गुप्ता,लालू प्रसाद कनिष्ठ सदस्य चुने गए। जिला बार एसोसिएशन के अधिवक्ताओं ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का स्वागत किया।

लंबित वादों का समय से किया जाए निस्तारणः जिलाधिकारी

■ मासिक स्टाफ बैठक में राजस्व वसूली में इजाफा के साथ ही बड़े बकायेदारों से सख्ती से वसूली करने के निर्देश दिए

शाह टाइम्स संवाददाता

पिथौरागढ़। जिलाधिकारी विनोद गोस्वामी की अध्यक्षता में कलक्ट्रेट सभागार में मासिक स्टाफ बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने राजस्व, परिवहन,आबकारी, पूर्ति आदि विभागों के अधिकारियों के साथ विभिन्न कार्यों को लेकर समीक्षा की तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। तहसील स्तर पर लंबित विभिन्न वादों की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने सभी उप जिलाधिकारियों एवं तहसीलदारों को निर्देश दिए कि लंबित वादों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर किया जाए।

उन्होंने सभी उप जिलाधिकारियों को राजस्व वसूली में इजाफा करते हुए आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश देने के साथ ही राजस्व वसूली में की गई कार्यवाही की रिपोर्ट उपलब्ध करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने समस्त उपजिलाधिकारियों को जनपद अंतर्गत कूड़े का उचित निस्तारण करने हेतु अभियान चलाकर गधेरो, बाजारों एवम् पार्कों में डाले जाने वाले कूड़े आदि की साफखसफाई करने के निर्देश भी दिए। इस दौरान जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारियों एवम् आबकारी, पुलिस विभाग को जनपद व जनपद अन्तर्गत पर्यटक क्षेत्रों में अवैध शराब पर रोक लगाने के निर्देश भी दिए।

इसके अतिरिक्त जिलाधिकारी ने आपदाकाल को देखते हुए जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी व समस्त उपजिलाधिकारियों को आपस में सामंजस्य बनाते हुए कार्य करने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी तहसीलदारों को निर्देशित किया की मुख्यमंत्री घोषणा के तहत चल रहे कार्यों की प्रगति एवं प्रस्तावित कार्यों को शुरू करने हेतु प्रक्रिया की विस्तृत जांच कर रिपोर्ट उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने कहा की आपदा के दौरान सही समय पर सही सूचना का पहुंचना अत्यंत आवश्यक है जिस हेतु सूचना तंत्र को दुरुस्त करने की जरूरत है उन्होंने दुर्गम क्षेत्रों में तैनात उप जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि वह आपदा के दृष्टिगत स्थानीय आई टी बी पी, एसएसबी, बीआरओ एवं आर्मी के साथ समन्वय बनाकर कार्य करें। उन्होंने आपदा प्रबंधन हेतु प्रयोग किए जाने वाले उपकरणों की जांच कर एवं उन्हें सुचारू रखने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक तहसील में एक कक्ष रिजर्व कर ले जहां पर सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए कनेक्टिविटी हेतु पर्याप्त उपकरण उपलब्ध हो।

साथ ही आपदा के समय सीमा पर तैनात आईटीबीपी, एसएसबी, बीआरओ एवं आर्मी के अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर कार्य किया जाना सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने बैठक लेते हुए कानून व्यवस्था, राजस्व वसूली, वाद निस्तारण की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने राजस्व अधिकारियों को निर्देश दियें कि वे वादों का त्वरित निस्तारण करें तथा पुराने वादों में जल्द डेट लगाकर प्राथमिकता से निस्तारण करना सुनिश्चियत करें। उन्होंने कहा कि राजस्व वसूली पर विशेष ध्यान देने के साथ ही वसूली में तेजी लाने के निर्देश भी दिए। जिलाधिकारी ने राजस्व विभाग को निर्देश दिए कि राजस्व वसूली में विशेष ध्यान देने के निर्देश दिये, ताकि शतप्रतिशत वसूली समय से हो सके तथा बड़े बकायेदारों से सख्ती से वसूली करने के निर्देश भी दिये।

जिलाधिकारी ने पेंशन ,आडिट आपत्ति, सूचना अधिकार, चरित्र सत्यापन, मुख्यमंत्री कार्यालय, राजस्व परिषद, शासन न्यायालय के संदर्भों पर त्वरित कार्यवाही कर निस्तारण करना सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। अंत में जिलाधिकारी ने समस्त उपजिलाधिकारियों को हर माह एक रिपोर्ट तैयार करने के निर्देश दिए जिसमें उनके क्षेत्र में जो भी कार्य किए गए हैं उनका ब्यौरा हो।बैठक में एडीएम योगेन्द्र सिंह, एसडीएम धारचूला, एसडीएम सदर मंजीत सिंह, एसडीएम बेरीनाग आशीष जोशी, एसडीएम डीडीहाट खुशबू पाण्डेय, तहसीलदार पिथौरागढ़ विजय गोस्वामी, तहसीलदार डीडीहाट पिंकी आर्य, अन्य तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार सहित कलेक्ट्रेट के कार्मिक अधिकारी उपस्थित रहे।

नालियों पर हुए अतिक्रमण को हटाने को लेकर दिया ज्ञापन

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल रामनगर के कार्यकर्ताओं ने रामनगर के मोहल्लों में सड़कों के दोनों ओर नालियों पर हुए अतिक्रमण को हटाने को लेकर एक ज्ञापन नगर पालिका अध्यक्ष हाजी मोहम्मद अकरम को दिया। बुधवार को विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल रामनगर के कार्यकर्ताओं ने नगर पालिका अध्यक्ष हाजी मोहम्मद अकरम को दिए गए ज्ञापन में कहा कि रामनगर के मोहल्ला गूलरघट्टी खताड़ी, बंबाघेर,लखनपुर, पम्पापुरी,इंदिरा कॉलोनी, हनुमान गड़ी मुख्य बाजार आदि क्षेत्रों में सड़को के दोनों ओर नालियों पर लोगों द्वारा अतिक्रमण किया गया है। उन्होंने बताया कि इन क्षेत्रों में वाहनों के आने जाने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।छोटी बड़ी गाड़ियां नहीं निकल पाती हैं। उन्होंने बताया कि इन मोहल्ले में रहने वाले लोगों के द्वारा अपने वाहन भी घरों के सामने ही खड़ा करते हैं, जबकि अपने वाहनों को पार्किंग में खड़ा करना चाहिए।किसी की तबियत खराब होने पर एंबुलेंस भी नहीं जा सकती है। उन्होंने नगर पालिका अध्यक्ष से जल्द से जल्द अतिक्रमण हटाने की मांग की है। अतिक्रमण नहीं हटने पर धरना प्रदर्शन की चेतावनी दी है।

नगर पालिका अध्यक्ष ने जल्द कार्य करने का आश्वासन दिया है। इस दौरान हृदेश शर्मा, सुनील वर्मा, भूपेंद्र मेहरा, नीरज वर्मा,कमल जोशी,प्रशांत तिवारी,अजय आदि मौजूद रहे।

सोमांश बने सुपर डांसर में मॉनिटर, मां कंचन को मिली राजमाता की कुर्सी

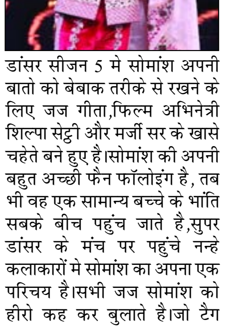

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। रामनगर शहर के एक नन्हे बालक सोमांश सिंह डंगवाल नें रामनगर का नाम रोशन किया है।उनके पिता पूर्व सैनिक और माता ग्रहणी हैं।वह एक शहीद दादा का पौता है, कहा जाए तो एक सैनिक परिवार का लाल जो लगातार अपनें कारनामों से आकाश की बुलंदियों को छू रहा है।

बता दें कि रामनगर के लिटिल चौंप बॉलीवुड कलाकार सोमांश सिंह डंगवाल जो पिछले 6 वर्षो से मुंबई में रह कर कई सीरियल, मूवी, गाने आदि कर चुके है।वह आज किसी परिचय के मोहताज भी नहीं हैं।हर कोई उन्हें जानता पहचानता है।आजकल सोमांश सुपर डांसर सीजन 5 मे अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे है,वैसे तो सोमांश अपनें डांस की वजह से खासा प्रसिद्ध है लेकिन सोनी टीवी मे चल रहे सुपर डांसर सीजन 5 मे सोमांश अपनी बातो को बेबाक तरीके से रखने के लिए जज गीता,फिल्म अभिनेत्री शिल्पा सेट्टी और मर्जी सर के खासे चहेते बने हुए है।सोमांश की अपनी बहुत अच्छी फैन फॉलोइंग है, तब भी वह एक सामान्य बच्चे के भांति सबके बीच पहुंच जाते है,सुपर डांसर के मंच पर पहुंचे नन्हे कलाकारों मे सोमांश का अपना एक परिचय है।सभी जज सोमांश को हीरो कह कर बुलाते है।जो टैग उनके उज्ज्वल भविष्य को रेखांकित करता है और आगे चलकर उनके कैरियर पर एक मील का पत्थर साबित होगा।सोमांश के इन्ही कारनामो और डांस के उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण सोमांश को सुपर डांसर बच्चों के मॉनिटर का खिताब दिया गया है उनकी माता कंचन डंगवाल जो स्वयं इस कार्यक्रम मे अपनी पहचान बनाने मे सफल हुई है। इनको राजमाता का खिताब मिला है, जिससे वह खासा उत्साहित है। उनकी इस उपलब्धि पर सोमांश के पिता भुवन सिंह डंगवाल बहुत खुश हैं। उनका कहना है कि सोमांश एक बहु प्रतिभागी वाला बालक है।जब से वह पैदा हुआ है।वह कृष्ण की भांति कुछ नई प्रतिभावों से हमें गौरवान्वित कराता रहा है।उसके कार्यों को देखकर कई बार मन मे भगवान कृष्ण के बाल्यकाल की यादे ताजा हो जाती है, उसकी प्रतिभा से मात्र मेरा परिवार नहीं बल्कि पूरा उत्तराखंड गौरव महसूस करता है। वह अभी बालक है उसे नहीं पता की वह किस उम्र मे ऐसे कार्य कर रहा है, जिस उम्र को हम बच्चों के खेलने कूदने की उम्र कहते है, वह बड़ो से ज्यादा समझदार और अपनें कार्यो मे निपुण है सोमांश के परिजन उससे काफी खुश हैं।सोमांश की वजह से उनके परिजन कई बार नेशनल टीवी के कार्यक्रमों मे अतिथि स्वरूप जा चुके हैं। उनके पिता भुवन डंगवाल ने बताया कि सोमांश को उत्तराखंड सरकार द्वारा उत्तराखंड गौरव प्रशंसा पत्र सरकार द्वारा जल्द दिया जाए।इस पर भी सरकार से उन्होंने अपील की है।ताकि सोमांश भविष्य मे उत्तराखंड को नई ऊचाईया प्रदान कर विश्व पटल पर गौरवान्वित कर सके।

नगर पालिका ने अतिक्रमण के खिलाफ चलाया अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। नगर पालिका परिषद रामनगर द्वारा काशीपुर रोड पर किए जा रहे अस्थाई अतिक्रमण, गंदगी के खिलाफ अभियान चलाया गया।

नगर पालिका परिषद रामनगर के अधिशासी अधिकारी आलोक उनियाल ने बताया कि बुधवार को काशीपुर रोड पर अतिक्रमण और गंदगी के खिलाफ अभियान चलाया गया। अभियान के तहत नगर पालिका द्वारा अतिक्रमण और गंदगी करने पर छह लोगों पर कार्यवाही करते हुए कुल 3000 रुपये का जुर्माना लगाया गया है। उन्होंने बताया कि नगर पालिका प्रशासन द्वारा यह अभियान लगातार जारी रहेगा।

बता दे कि बीते दिन मंगलवार को विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल रामनगर के कार्यकर्ताओं ने नगर पालिका प्रशासन और एसडीएम प्रमोद कुमार को काशीपुर रोड पर अतिक्रमण हटाने को लेकर ज्ञापन दिया था।इस दौरान नगर पालिका परिषद रामनगर के सफाई निरीक्षक लल्ला मियां,कर टैक्स निरीक्षक संजय मनराल आदि मौजूद रहे।

पर्यटक बेहतर संदेश लेकर जाएं: सीडीओ

सरोवर नगरी के पर्यटन कारोबारियों से मांगे सुझाव

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। विगत पर्यटन सीजन में पर्यटन सुविधाओं के संबंध में जिले के पर्यटन स्थलों में आवश्यक सुविधाओं व्यवस्थाओं आदि के संबंध में स्थानीय लोगों की प्रतिक्रिया/ फीडबैक/विचार तथा आने वाले पर्यटक सीजन हेतु आवश्यक सुझावों को लेकर बुधवार को जिला कार्यालय सभागार नैनीताल में मुख्य विकास अधिकारी अना. मिका की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में पर्यटन से जुड़े विभिन्न संगठनों, होटल एसोसिएशन, व्यापार मंडल, शटल सेवाएं, टैक्सी यूनियन, नाव एवं घोड़ा चालक संघ सहित पर्यटन से जुड़े विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

बैठक में गत पर्यटन सीजन में जिला मुख्यालय समेत कैंची धाम व अन्य पर्यटन स्थलों में पर्यटन सुविधाओं एवं उनमें आवश्यक सुधार आदि के बारे में चर्चा करते हुए व प्रतिक्रिया लेते हुए सुझाव लिए गए। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि आने वाले पर्यटन सीजन में पर्यटकों को बेहतर सुविधा मुहैया करानी है ताकि आने वाला प्रत्येक पर्यटक एक बेहतर संदेश लेकर यहां से जाएं। उन्होंने जिला पंचायत, पर्यटन विभाग, नगर पालिका, जिला विकास प्राधिकरण से आए अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिन-जिन स्थानों में पार्किंग के टेंडर होने हैं शीघ्र ही टेंडर कर लिए जाएं साथ ही शटल सेवा के लिए भी टेंडर आदि प्रक्रिया समय से कर ली जाए। उन्होंने कहा कि सभी पार्किंग स्थलों में आवश्यक सुविधाएं, पेयजल, शौचालय, विद्युत व्यवस्था के साथ ही वहां किराया सूची डिस्प्ले की जाए और जो होटल व्यवसायी अपने होटल की सेवा एवं दर/रेट लिस्ट डिस्प्ले करना चाहते हैं वह भी इन सभी शटल एवं पार्किंग स्थलों में डिस्प्ले कराया जाए ताकि पर्यटकों को सुविधा मिले। मुख्य विकास अधिकारी अनामिका ने कहा कि पर्यटन सीजन से पूर्व सभी सड़क मार्गो से मलवा, मिट्टी के साथ ही भवन सामग्री जो डाली गई हैं उसे हटाया जाए। पुलिस, परिवहन विभाग यह भी सुनिश्चित करें कि सड़क किनारे वाहन पार्किंग न होने पाए ताकि जाम की स्थिति उत्पन्न न हो। मुख्य विकास अधिक. ारी ने कैंचीधाम में लोनिवि द्वारा निर्माणाधीन पार्किंग के कार्यों की भी जानकारी लेते हुए कार्यों को तेजी से करने के निर्देश दिए। उन्होंने घोड़ा स्टैंड में वाहन पार्किंग को सुव्यवस्थित करने के निर्देश उप जिलाधिकारी नैनीताल को दिए। बैठक में पर्यटन सुविधाओं के संबंध में विभिन्न सुझाव प्राप्त हुए जिन पर आवश्यक कार्रवाई हेतु विभागों को निर्देश दिए गए। बैठक में सचिव विकास प्राधिकरण विजय नाथ शुकल, उप जिलाधिकारी नैनीताल नवाजिश खालिक, श्रींकैंची धाम मो. निका, पुलिस क्षेत्राधिकारी पी के साह, होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष सुदर्शन साह, विधायक प्रतिनिधि हरीश राणा सहित अन्य जन प्रतिनिधि व अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

नीट पास कर चयनित हुए उद्भव

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। नगर के प्रतिष्ठित विद्यालय पार्वती प्रेमा जगाती सरस्वती विहार के छात्र उद्भव का

नीट क्वालीफाई करने के पश्चात किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज लखनऊ में चयन हुआ है। छात्र उद्भव ने अपनी सफलता पर कहा कि मेरे माता पिता का आशीर्वाद, विद्यालय का अनुशासित वातावरण और शिक्षकों का सतत मार्गदर्शन ही मेरी इस कामयाबी की असली ताकत है। कड़ी मेहनत और धैर्य के बिना सफलता संभव नहीं थी। विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. सूर्य प्रकाश ने कहा कि उद्भव का चयन हमारे विद्यालय के लिए गौरव की बात है। उनकी लगन और परिश्रम अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेंगे। विद्यालय के प्रबंधक श्याम अग्रवाल एवं कोषाध्यक्ष विपिन अग्रवाल ने छात्र की इस सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

एक नजर

लापरवाही पर एएसआई निलंबित

नैनीताल। शहर में जिला पंचायत चुनाव के दिन पांच सदस्यों के अपहरण के पूर्व दिवस पर ड्यूटी में लापरवाही बरतने पर एक एएसआई पर गाज गिरी है। विभाग ने एएसआई को निलंबित कर दिया है जो चुनाव की पहली रात रात्रि अधिकारी के रूप में तल्लीताल में ड्यूटी पर तैनात थे। चुनाव की पहली रात्रि में धारा 163 लागू होने के बावजूद मालरोड से बैरिकेडिंग पार कर अपहरण को अंजाम देने वाले लोगों के जिला पंचायत कार्यालय के समीप स्थित होटल तक हथियारों के साथ पहुंचने पर कार्रवाई की गई है। बता दे कि बीते 14 अगस्त को जिला पंचायत अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष चुनाव के दिन पांच सदस्यों के अपहरण के बाद हंगामा हो गया था। मामले में कोर्ट ने सख्त रुख अपनाया तो अपहरण के दौरान मूकदर्शक व लापरवाही बरतने वाले कर्मियों पर कार्रवाई शुरू हो गई है। एसपी जगदीश चंद्रा ने बताया कि ड्यूटी में लापरवाही बरतने पर रात्रि अधिकारी एएसआई उदय सिंह राणा को निलंबित कर दिया गया है।

कार्यकारिणी के विस्तार पर मंथन

नैनीताल। कुमाऊं मंडल विकास निगम के कर्मचारियों की बैठक बुधवार को ओक पार्क स्थित निगम मुख्यालय में हुई। बैठक में कुमाऊं मंडल विकास निगम कर्मचारी महासंघ की नई कार्यकारिणी के गठन को लेकर विस्तार से मंथन किया गया। बैठक में एक स्वर में सभी ने तय किया कि आगामी 6 सितंबर शनिवार को पर्यटक आवास गृह अल्मोड़ा में महासंघ की नयी कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा। बैठक में कई कर्मचारियों ने ऑनलाईन भी प्रतिभाग किया तथा सभी ने अपने-अपने सुझावों को प्राथमिकता से रखा। बैठक में महासंघ के कार्यकारी अध्यक्ष मंजुल प्रकाश सनवाल, कार्यकारी महामंत्री तारा दत्त भट्ट समेत कंचन चंदोला, रवि साह, विक्रम साह, रमेश चंद्र पंत, संतोष पंत, संजय कुमार, गौतम कुमार, पीतांबर दुमका, दीपक पांडे, माया पंत, रजनी बिष्ट, बीना कर्नाटक, तारा दत्त शर्मा, देवकी देवी, गंगोत्री बिष्ट, गीता राणा, भय्यू साह समेत अन्य कर्मियों ने विचार रखे। अंत में महासंघ के कार्यकारी अध्यक्ष मंजुल सनवाल व महामंत्री तारा दत्त भट्ट ने सभी कर्मियों का आभार जताया तथा संगठन की मजबूती के लिए एकजुट होने का आह्वान किया।

फोटोग्राफी प्रदर्शनी का समापन

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। नगर के प्रतिष्ठित चेतराम साह ठुलघरिया इंटर कॉलेज के सभागार में चल रही दो दिवसीय फोटोग्राफी प्रदर्शनी का बुधवार को समापन हो गया। बता दें कि अंत. रराष्ट्रीय फोटोग्राफी दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित फोटोग्राफी प्रदर्शनी में फोटोग्राफी के दिग्गजों स्वर्गीय एएन सिंह, बलबीर सिंह व अमित साह को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस प्रदर्शनी में कई स्थानीय फोटोग्राफरों की तस्वीरें भी शामिल की गई थीं जिसे स्थानीय स्कूल तथा कॉलेज के बच्चों के अलावा कई फोटोग्राफरों और नागरिकों ने भी खूब सराहा। अपने समापन भाषण में कार्यक्रम के मुखय आयोजक पद्मश्री अनूप साह ने बताया कि 1984-85 से नैनीताल में हर साल दो फ्लॉवर शो और दो अंतरराष्ट्रीय फोटोग्राफी शो आयोजन करना एक नियमित विशेषता थी, जो सीआरएस टी इंटर कॉलेज और फ्लोरिस्ट लीग भारत के संयुक्त प्रयासों से होती थी हालांकि ये शो पूर्व कोविड-19 अवधि के बाद बंद कर दिए गए थे। अब सीआरएसटी कॉलेज तथा फ्लोरिस्ट लीग इंडिया और हल्द्वानी, अल्मोड़ा, रानीखेत और पिथौरागढ़ के अन्य फ्लोरिस्ट और फोटोग्राफी कलब के समूह बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। ऐसे संयुक्त समूह के प्रयासों के साथ यह प्रस्तावित है कि इस वर्ष नवंबर के महीने में केवल फूलों व लैंडस्केप की एक फोटोग्राफी प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी। इस अवसर पर पदम्श्री प्रो. शेखर पाठक, एनसीसी के ग्रुप कैप्टन अच्युत कुमार समेत डा. रितेश साह, रेखा पंत, डा. चारु पंत के अलावा अन्य लोग उपस्थित रहे। अंत में प्रदर्शनी के कार्यकारी आयोजक हिमांशु जोशी ने सभी का आभार जताया।

अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम के लिए करना होगा संघर्ष

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन नैनीताल द्वारा अधिवक्ताओं के हितों की सुरक्षा हेतु बुधवार को अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम के लिए सेमिनार का आयोजन हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के सभागार में किया गया। इससे पूर्व सर्वप्रथम सभागार में उपस्थित अधिवक्ताओं के मध्य हाईकोर्ट बार एसोसिएशन की ओर से हाईकोर्ट बार के अध्यक्ष डीएस मेहता द्वारा अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम की प्रस्तावित प्रति अधिवक्ताओं के बीच में वितरित की। हाईकोर्ट बार एसोसिएशन ने अधिवक्ताओं से आवाहन किया कि इस प्रस्तावित अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम में आप कौन से सुझाव और देना चाहते हैं और इस प्रस्तावित अधिवक्ता

हाईकोर्ट बार एसोसिएशन में अधिवक्ताओं का सेमिनार

संरक्षण अधिनियम को और बेहतर बना सकते हैं जिससे हमारी राज्य सरकार अधिवक्ताओं के हित में एक बेहतर अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम ला सके। हम अधिवक्ताओं को अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम सरकार से बनवाने के लिए संघर्ष भी करना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. महेन्द्र सिंह पाल (वरिष्ठ अधिवक्ता व पूर्व सांसद) द्वारा की गयी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सेमिनार के मुखय वक्ता ऑल इण्डिया लार्यस एसोसिएशन फॉर जस्टिस के राष्ट्रीय महासचिव एडवोकेट क्लिफ्टिन डी. राजौरिया ने अपने संबोधन में बताया कि अधिवक्ताओं की सुरक्षा केवल उनके ऊपर हो रहे हमलों से ही नही बल्कि उनके ऊपर होने वाली आर्थिक दिक्कतों के लिए भी आवश्यकीय है। उन्होंने बताया कि इस देश में दो राज्यों राजस्थान व कर्नाटक में अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम राज्य सरकारों ने पारित किया है। आईलाज पूरे देश में अधिवक्ताओं के संरक्षण के लिए हर राज्य में अधिवक्ता संरक्षण अधि. नियम की वकालत करता है। कार्यक्रम में मुखय अतिथि सह अध्यक्ष बार कौसिंल ऑफ इण्डिया डीके शर्मा, कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि उत्तराखण्ड बार कौंसिल के सचिव/ सदस्य मेहरबान सिंह कोरंगा थे। कार्यकम को वरिष्ठ अधिवक्ता पुष्पा जोशी, बीपी नौटियाल, एमसी पंत, सैय्यद नदीम मून, नवनीश नेगी, डीके जोशी, कैलाश जोशी, रजत मितल, त्रिभुवन सिंह फर्त्याल, एडी त्रिपाठी, कैलाश चन्द्र तिवारी, कैलाश जोशी, प्रियंका, दीपक कुमार जोशी, विनोद कुमार जैमिनी, बीएस को. रंगा, सुखवानी सिंह, मीना बिष्ट, अक्षय लटवाल, पूरन सिंह रावत, भुवनेश जोशी, सौरव कुमार पाण्डे व निशांत इन्तजार आदि ने संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन वीरेन्द्र सिंह रावत महासचिव हाईकोर्ट बार एसोसिएशन नैनीताल द्वारा किया गया।

मतगणना की वीडियोग्राफी देखी जाए: हाईकोर्ट

पूनम बिष्ट की याचिका पर सुनवाई

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट में बुधवार को जिला पंचायत अध्यक्ष नैनीताल के चुनाव में एक मतपत्र में टेम्परिंग अथवा ओवरराइटिंग करने की शिकायत की गई, जिसपर हाईकोर्ट ने याचिकाकर्ता व सरकार के अधिवक्ताओं को आज यानी (वीरवार) को जिलाधिकारी कार्यालय में मतगणना की सीसीटीवी फुटेज व वीडियो रिकॉर्डिंग देखने को कहा है। याचिका की सुनवाई अब 22 अगस्त शुक्रवार को होगी। याचिकाकर्ता जिला पंचायत सदस्य पूनम बिष्ट की ओर से उनके अधिवक्ता ने ओवरराइटिंग किये गए मतपत्र की फोटो कोर्ट को दिखाई जिसके बाद मुख्य न्यायधीश की अध्यक्षता वाली खण्डपीठ ने याचिकाकर्ता तथा राज्य सरकार व चुनाव आयोग के अधिवक्ताओं व अध्यक्ष पद के दोनों प्रत्याशियों से मतगणना के दौरान की वीडियो व सीसीटीवी देखने को कहा है। ये वीडियो व सीसीटीवी वीरवार (आज) की सुबह 11 बजे जिलाधिकारी कार्यालय नैनीताल में देखी जाएंगी। सीसीटीवी फुटेज व वीडियोग्राफी जो कि ट्रेजरी के लॉकर में है उसे दिखाने की व्यवस्था जिलाधिकारी से करने को कहा गया है।

हाईकोर्ट के मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति जी. नरेंद्र व न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खण्डपीठ ने स्पष्ट किया है कि वीडियोग्राफी व सीसीटीवी कैमरे की फुटेज देखने दोनों पक्षों के तीन-तीन अधिवक्ता, चुनाव आयोग के अधिवक्ता व दोनों प्रत्याशी यानी कुल 9 लोग शामिल होंगे। इसके अलावा कलेक्ट्रेट में भीड़ को रोकने व सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी एसपी सिटी नैनीताल डा. जगदीश चन्द्रा की होगी। बता दें कि पूनम बिष्ट द्वारा जिला पंचायत अध्यक्ष पद पर पुनर्मतदान की मांग को लेकर दायर याचिका पर बुधवार को भी अपरान्ह बाद करीब ढाई घण्टे लंबी बहस हुई और याचिकाकर्ता के अधिवक्ताओं ने रद्द हुए मतपत्र में छेड़छाड़ की आशंका जताते हुए मतगणना के समय की वीडियोग्राफी व सीसीटीवी फुटेज दिखाए जाने की मांग की जिसे हाईकोर्ट ने स्वीकार कर लिया। बता दें कि जिला पंचायत अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के चुनाव में कुल 22 मत पड़े थे, जिनमें से अध्यक्ष पद पर भाजपा प्रत्याशी दीपा दरम्वाल को 11 व कांग्रेस प्रत्याशी पुष्पा नेगी को 10 मत मिले थे। एक मत रद्द हुआ है। इसी रद्द मत में टेमपरिंग का आरोप है। इस मतपत्र में 1 के ऊपर से 2 किये जाने का आरोप है जबकि उपाध्यक्ष पद पर भाजपा व कांग्रेस प्रत्याशी को बराबर मत मिले थे और चुनाव परिणाम लॉटरी से निकला था। कांग्रेस प्रत्याशी का अनुमान है कि अध्यक्ष पद पर भी बराबर मत पड़े हैं। बताया गया है कि मतगणना में कांग्रेस प्रत्याशी या उसके एजेंट मौजूद नहीं थे।

भाजपा ने कांग्रेस का पुतला फूंका

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने बुधवार को नैनीताल में कांग्रेस पार्टी के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया और पुतला दहन किया। यह विरोध कार्यक्रम कांग्रेस के विधायकों के विधानसभा में किए गए अमर्यादित आचरण के विरोध में आयोजित किया गया। भाजपा नेताओं का कहना था कि कांग्रेस मुद्दों से भटक चुकी है और केवल झूठ की राजनीति कर रही है। इस दौरान भाजपा मंडल अध्यक्ष नितिन कार्की ने कहा कि कांग्रेस द्वारा फैलाए जा रहे षडयंत्र और अराजकता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने साफ कहा कि जल्द ही इसका पर्दाफाश कर जनता के सामने सच्चाई रखी जाएगी। इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के खिलाफ नारेबाजी भी की और आरोप लगाया कि विपक्ष जनता

को गुमराह करने का काम कर रहा है। पुतला दहन कार्यक्रम में बड़ी संखया में कार्यकर्ता और स्थानीय नेता मौजूद रहे। इस दौरान मोहित लाल साह, निखिल बिष्ट, विक्रम राठौर, हरीश सिंह राणा, आशीष बजाज, विकास जोशी, प्रदीप कुमार आर्य, भारत सिंह मेहरा, अरविन्द सिंह पडियार, भगवत सिंह रावत, विकास जोशी, आयुष भंडारी, दया किशन पोखरिया, बिमला अधिकारी, कविता गंगोला, कलावती असवाल, मीरा बिष्ट, प्रेमा अधिकारी, दीपिका बिनवाल, नीतू जोशी, भावना मेहरा, भोला दत्त तिवारी, आनंद बिष्ट, भूपेंद्र सिंह बिष्ट, संतोष साह, कृष्ण कुमार शर्मा, शिवांशु जोशी, राहुल नेगी, युवराज करायतए प्रियांश आर्या और पार्थ साह समेत कई कार्यकर्ता शामिल हुए।

नंदा देवी महोत्सव में आएंगे सीएम

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। नैनीताल विधान सभा की विधायक सरिता आर्या ने गैरसैण सत्र के दौरान सूबे के मुखयमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मुलाकात कर नैनीताल

विधानसभा क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों की प्रगति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने मुयमंत्री पुष्कर सिंह धामी को 28 अगस्त से 5 सितंबर तक नैनीताल में आयोजित विश्व विख्यात नंदा देवी महोत्सव का निमंत्रण पत्र भी सौपा। विधायक सरिता आर्या ने महोत्सव की आयोजक संस्था श्री रामसेवक सभा द्वारा भेजी गई मां नंदा सुनंदा की फोटो व चुनरी भी सीएम को भेंट की। इस दौरान मुखयमंत्री ने नंदा देवी महोत्सव के पोस्टर एवं कार्यक्रम का अवलोकन करते हुए मेले को भव्य रूप से आयोजित किया जाना सरकार की प्राथमिकता बताया वही मुखयमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने माँ नंदा देवी महोत्सव के आयोजन को लेकर श्री राम सेवक सभा सहित सभी क्षेत्रवासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वह महोत्सव में आने का पूरा प्रयास करेंगे। बता दें कि विधायक सरिता आर्या के प्रयासों से ही माँ नंदा देवी महोत्सव को राजकीय मेले का दर्जा प्राप्त हुआ है।

एसटीएच के सर्जरी विभाग ने जवान को दिया जीवनदान

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। राजकीय मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डा. अरुण जोशी के दिशा-निर्देशन और सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डा. राजीव सिंह के नेतृत्व में डा. प्रतीक शाक्य व डा. सुनीता की मेहनत से सेना के जवान को नया जीवनदान मिला है। चिकित्सकों व स्टाफ की मेहनत से जवान स्थिर होकर हायर सेंटर भेज दिया गया है। बता दे कि विगत 17 अगस्त की शाम सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल 15 कुमाऊं रेजीमेंट व वर्तमान में 24 गर्ल्स एनसीसी बटालियन अल्मोड़ा में तैनात हवलदार कमलेश मेहता को सुशीला तिवारी चिकित्सालय लाया गया। सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डा. राजीव सिंह के नेतृत्व में डा. प्रतीक शाक्य व डा. सुनीता ने मरीज का उपचार किया। एक समय जवान की स्थिति काफी गंभीर हो गयी थी, ऑक्सीजन लेवल और पल्स रेट निम्न स्तर पर पहुंच गया। चिकित्सकों की निरंतर निगरानी व स्टाफ की मेहनत से मरीज स्थिर हो गया। जवान के तीमारदारों ने बताया कि एसटीएच हमारे लिए वरदान साबित हुआ। चिकित्सकों की दिन-रात मेहनत से मरीज को नया जीवनदान मिला है। प्राचार्य डा. जोशी ने बताया कि जब जवान को चिकित्सालय लाया गया तब उसकी हालत काफी गंभीर थी, जिसे चिकित्सकों की गहन निगरानी में रखा गया। चिकित्सकों व स्टाफ की मेहनत से धीरे-धीरे जवान स्थिर हो गया। जिसे सेना के हेलीकॉप्टर से उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधा के लिए सेना के आरआर हॉस्पिटल दिल्ली के लिए भेज दिया गया।

कानून व्यवस्था को लेकर कांग्रेस ने फूंका सरकार का पुतला

शाह टाइम्स ब्यूरो

नैनीताल। उत्तराखंड की बिगड़ती कानून व्यवस्था, गुंडागर्दी, प्रशासन की नाकामी आदि को लेकर प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर नगर कांग्रेस कमेटी नैनीताल द्वारा नगर अध्यक्ष अनुपम कबड्वाल के नेतृत्व में तल्लीताल गांधी जी की मूर्ति के समीप धामी सरकार का पूतला फूंककर प्रदर्शन किया गया। अनुपम कबड्वाल ने कहा कि धामी सरकार ने प्रदेश में अराजकता का माहौल स्थापित कर लोकतंत्र व पंचायती राज व्यवस्था की हत्या करने का कार्य किया है। डा. भावना भट्ट, जिलाध्यक्ष विधि प्रकोष्ठ कमलेश तिवारी, अधिवक्ता हरीश भट, दीपक रूबाली, शहनवाज सिद्दिकी, पूर्व पालिकाध्यक्ष सचिन नेगी, पूर्व ज्येष्ठ उप प्रमुख हिमांशु पांडेय, पूर्व नगर अध्यक्ष जेके शर्मा, पूर्व दायित्वधारी रईस भाई,सभासद अंकित चंद्रा, कुन्दन सिंह बिष्ट, महिला कांग्रेस से सुनीता आर्या,आशा भट्ट, प्रियांशु बिष्ट आदि शामिल रहे।

हल्द्वानी। प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था और प्रशासन पर नाकामी का आरोप लगाते हुए कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष राहुल छिम्वाल की अगुवाई में बुधवार को पीलीकोठी चौराहे में नारेबाजी कर मुख्यमंत्री का पुतला फूँका। इस दौरान

जिलाध्यक्ष राहुल छिम्वाल और महानगर अध्यक्ष गोविन्द बिष्ट ने कहा कि पूरे प्रदेश में पंचायत चुनाव के दौरान भाजपा के गुंडों ने कानून व्यवस्था की धज्जिया उड़ाई। नैनीताल जैसे शांत शहर का जिला पंचायत अध्यक्ष के चुनाव के दौरान माहौल खराब किया गया। पूर्व जिलाध्यक्ष सतीश नैनवाल, भोला भट्ट व संजय किरोला ने कहा कि भाजपा प्रदेश में कानून का राज खत्म कर, गुंडा राज लाना चाहती हैं। हम किसी भी कीमत में इस शांत प्रदेश को बिहार नहीं बनने देंगे। पुतला फूंकने वालो में मनोज शर्मा, केदार पलडिया, नीरज तिवारी, मधु सांगुड़ी, जया कर्नाटक, भागीरथी बिष्ट, पुष्पा तिवारी, कौशलेन्द्र भट्ट, सुहैल सिद्दीकी, नेत्र बल्लभ जोशी, गोविन्द बगड्वाल, महेश कांडपाल, राजेंद्र उपाध्याय, सतनाम सिंह, संदीप जोशी, किरन मेहरा, संदीप भैसोडा, संजय बिष्ट, मयंक भट्ट, किरन मेहरा, रेनू तोमर सहित कई कार्यकर्ता शामिल रहे।

जिस दरोगा को किया निलंबित, उसी ने दबोचा बदमाशों को

जिपं चुनाव के दौरान बेतालघाट में हुई गोलीकांड के तीन आरोपी लखीमपुर खीरी से गिरफ्तार

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। 14 अगस्त को ब्लॉक बेतालघाट में ब्लॉक प्रमुख चुनाव की वोटिंग के दौरान ब्लॉक प्रमुख पद के एक प्रत्याशी के समर्थकों द्वारा प्रतिद्वंदी प्रत्याशी के समर्थकों पर पिस्टल से ताबड़तोड़ फायरिंग के मामलें में फरार चल रहे तीन बदमाशों को नैनीताल पुलिस ने आज बुधवार को लखीमपुर खीरी स्थित एक मेडिकल स्टोर से उस समय गिरफ्तार किया जब तीनों बदमाश दवा लेने वहां आए थे।

पुलिस तीनों आरोपियों को पकड़कर देर शाम नैनीताल ले आई। बता दें कि बीते 14 अगस्त को जिला पंचायत चुनाव के दौरान बेतालघाट में हुई फायरिंग के दौरान एक युवक घायल हो गया था। इस वारदात के बाद पूरे क्षेत्र में हड़कंप मच गया। घटना के बाद चुनाव आयोग ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तुरंत भवाली सीओ प्रमोद साह और बेतालघाट

थानाध्यक्ष अनीस अहमद को निलंबन कर दिया। जिसके बाद एसएसपी ने एक टीम का गठन करते हुए आरो. पियों की तलाश शुरु कर दी। बदमाशों की तलाश में जुटी पुलिस को मुखबिर की सटीक सूचना मिली। सटीक सूचना पर इस फायरिंग मामले में निलंबन हुई थानाध्यक्ष अनीस अहमद ने टीम के साथ लखीमपुर खीरी पहुंचे और थाना भीरा क्षेत्र में स्थित पंजाब मेडिकल स्टोर के पास से गिरफ्तार किया गया। बताया जा रहा कि पुलिस ने उन्हे उस समय गिरफ्तार किया जब तीनों थार से मेडिकल स्टोर में दवा लेने आये थे। पकड़े गये आरोपी बदमाशों की पहचान अमृतपाल उर्फ पन्नू पुत्र निन्दर सिंह नि. ग्राम रोशनपुर पो. गुलरभोज थाना गदरपुर यूएसनगर, गुरमीत सिंह उर्फ पारस पुत्र मंजीत सिंह निवासी बेरिया दौलत थाना कैलाखेडा यूएसनगर, प्रदीप सिंह उर्फ शौकर पुत्र तेजा सिंह निवासी मुण्डिया कला बहादुरगंज, थाना-बाजपुर हाल निवासी पीरूमदारा गंगापुर पहाडी रामनगर के रुप में हुई। अभी तक पुलिस इस फायरिंग मामले में नौ लोगो को गिरफ्तार कर चुकी है। गुडवर्क करने वाली टीम को एस एसपी ने ढाई हजार ईनाम की घोषणा की है। पुलिस टीम में थानाध्यक्ष अनीस अहमद, एसआई (साइबर सैल) फिरोज आलम, है.कां. मंजीत, कां. संदीप सिंह, संदीप दोसाद शामिल रहे।

कार्यालय सहायक अभियन्ता, द्वितीय नलकूप उपखण्ड, काशीपुर

पत्रांक:- 328 / स0अ0द्वि0/ निविदा/2025-26/ दिनांक:- 19.08.2025

अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या:- 08/स0अ0द्वि0/2025-26

निम्नलिखित कार्यों की मुहरबन्द निविदायें दिनाँक 02.09.2025 अपरान्ह 3:00 बजे तक पंजीकृत ठेकदारों से आमंत्रित की जाती है, जो उसी दिन 3:30 बजे अपरान्ह सहायक अभियन्ता कार्यालय में अधोहस्ताक्षरी अथवा उसके मनोनीत प्रतिनिधि द्वारा खोली जायेगी। निविदा प्रपत्र निविदा खोलने की निर्धारित तिथि के एक दिवस पूर्व तक बेची जायेगी। कार्य संबंधी विवरण निविदा खोलने से पूर्व में किसी भी कार्य दिवस में प्रात: 11.00 बजे से सायं 3.30 बजे तक कार्यालय में देखा जा सकता है। पंजीकृत ठेकेदार अथवा उनके प्रतिनिधि प्रपत्र का निर्धारित मूल्य देकर निविदा प्रपत्र प्राप्त कर सकते है। धरोहर धनराशि राष्ट्रीय बचत पत्र एवं राष्ट्रीकृत बैंक की एफ0डी0आर0 के रूप में जो अधिशासी अभियन्ता, नलकूप खण्ड, बाजपुर के नाम बंधक होगी, मान्य होगी। एक या समस्त निविदाओं को बिना कारण बताये निरस्त करने का एवं कार्य की मात्रा कम या ज्यादा करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी का होगा। निविदा के साथ रू0 100.00 के कोर्ट स्टैम्प पेपर पर 3 माह की वैधता हेतु रू0 1.00 के राजस्व टिकट में हस्ताक्षर कर लगाना होगा। निविदा आमंत्रण की तिथि से पूर्व कार्य स्थल का निरीक्षण कर ले।

क्र0 सं0	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (लाख रु0 में)	धरोहर धनराशि (रु0 में)	कार्य समाप्ति की अवधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रु0)
1	2	3	4	5	6
1	Carriage and Laying of PVC Pipe Line 200/160 mm dia. at STW No. 152 KPG Veerpuri Block - Jaspur (U.S. Nagar) under 8443 District Plan.	3.25	6500.00	02 माह	500.00+ जी0एस0टी0
2	Reconstruction of Old Damaged Brick Gule at STW No. 52 KPG Paiga Block Kashipur (U.S.Nagar) under 2701 M&R	4.00	8000.00	02 माह	500.00+ जी0एस0टी0

सहायक अभियन्ता द्वितीय
नलकूप उपखण्ड काशीपुर।

नगर निगम ने फॉगिंग व लार्वीसाइडल स्प्रे अभियान किया शुरू

नगर आयुक्त नमामि बंसल व सहायक नगर आयुक्त चौहान ने किया रेसकोर्स का निरीक्षण

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। नगर निगम ने मच्छरों से उत्पन्न बीमारियों डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया एवं अन्य संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए एक विशेष सघन अभियान की शुरुआत की है। नगर आयुक्त नमामि बंसल ने बताया कि यह अभियान नगर निगम के सभी 100 वार्डों में व्यवस्थित एवं चरणबद्ध ढंग से चलाया जा रहा है । नगर निगम का उद्देश्य है कि शहरवासियों को एक स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जाए और बरसात के मौसम में मच्छरों से होने वाले संक्रमणों को नियंत्रित किया जा सके।जिसके लिए नगर आयुक्त नमामि बंसल ने अभियान के अंतर्गत बुधवार को रेसकोर्स में निरीक्षण किया, जिसमें वार्ड में पार्षद रोहन चंदेल और वीरेंद्र बिष्ट, सहायक नगर आयुक्त

राजबीर सिंह चौहान ,मुख्य सफाई निरीक्षक मनीष दरियाल , सफाई निरीक्षक राजेश बहुगुणा आदि उपस्थित रहे । इसके अलावा कुछ मुख्य बिंदुओं पर भी चर्चा की गई। नगर आयुक्त नमामि बंसल ने बताया कि अभी तक.फॉगिंग अभियान के तहत नगर निगम ने मुख्य सड़कों, सार्वजनिक स्थलों, बाजारों, पार्कों एवं भीड़भाड़ वाले इलाकों में 4 बड़ी मशीनों की सहायता से फॉगिंग कार्य प्रारंभ किया।

देहरादून को मच्छर-मुक्त एवं स्वस्थ नगर बनाने का लक्ष्यःनमामि बंसल

नगर आयुक्त नमामि बंसल ने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि अपने घरों एवं आस-पड़ोस में पानी जमा न होने दें।गमलों, टायरों, कूलरों एवं छतों पर रुके हुए पानी को नियमित रूप से साफ करें। खुले में कचरा न फेंके और नालियों की सफाई पर ध्यान दें। नगर निगम द्वारा चलाए जा रहे फॉगिंग एवं स्प्रे अभियानों में सहयोग करें। यह व्यापक अभियान नागरिकों के सहयोग एवं जागरूकता के बिना सफल नहीं हो सकता। नगर निगम का संकल्प है कि देहरादून को एक मच्छर-मुक्त एवं स्वस्थ नगर बनाया जाए।

इसका उद्देश्य था कि शहर के प्रमुख यातायात मार्गों एवं सार्वजनिक स्थलों पर मच्छरों की संख्या नियंत्रित की जा सके। 16 अप्रैल से अब तक सभी 100 वार्डों में 100 छोटी मशीनों की सहायता से मोहल्ला-स्तर पर फॉगिंग की जा रही है। यह कार्य नियमित रूप से सुबह एवं शाम के समय किया जाता है ताकि मच्छरों की संख्या न्यूनतम स्तर तक लाई जा सके। लार्वीसाइडल स्प्रे अभियान के तहत 17 अप्रैल से 30 अप्रैल तक शहर की प्रमुख नदियों, बड़े नालों एवं जलभराव वाले स्थलों पर 05 टैंकरों की मदद से लार्वीसाइडल स्प्रे किया गया। इस प्रक्रिया के माध्यम से मच्छरों के अंडों एवं लार्वा को नष्ट किया गया।

नगर आयुक्त ने बताया कि 1 मई से अब तक सभी 100 वार्डों में 20 टैंकरों की मदद से निरंतर लार्वीसाइडल स्प्रे अभियान संचा. लित है। वार्डवार सूची तैयार कर प्रत्येक गली, मोहल्ले, नाली एवं जलभराव वाली जगहों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। निगम सुनिश्चित कर रहा है कि आवश्यकतानुसार पर्याप्त मात्रा में रसायनों का भंडारण एवं उपयोग समयबद्ध तरीके से किया जाए। नगर आयुक्त ने बताया कि नगर निगम आगे की कार्ययोजना बरसात के मौसम में जलभराव को ध्यान में रखते हुए विशेष अभियान चलाया जाएगा।नगर निगम की टीमें वार्ड स्तर पर लगातार निगरानी एवं सर्वेक्षण करेंगी।

स्वास्थ्य विभाग एवं आशा कार्यकर्ताओं के सहयोग से नागरिकों को जागरूक किया जाएगा। स्कूलों, सार्वजनिक स्थलों एवं बस्तियों में जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

नजीबाबाद-कोटद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग दिसम्बर तक होगा पूरा

राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट के सवाल के जवाब में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री ने दी जानकारी

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। गढ़वाल के लिए बहुप्रतीक्षित नजीबाबाद कोटद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग दिसम्बर तक पूर्णतया आरामदायक होने जा रहा है।

राज्यसभा सांसद और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष महेंद्र भट्ट द्वारा सदन में उठाए अंतरांकित प्रश्न 3152 के जवाब में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने यह जानक. ारी दी। उन्होंने बताया कि नजीबा. बाद से कोटद्वार तक 15.56 किलोमीटर लंबी यह सड़क पैडल शोल्डर के साथ दो लेन की बन रही है। 107.43 करोड़ की कुल लागत से बनने वाली इस सड़क का 40 फीसदी कार्य अब तक पूरा हो गया है। अब विभाग का लक्ष्य है कि दिसंबर 2025 तक इस राजमार्ग निर्माण कार्य को पूर्ण कर, पूरी तरह से यातायात के लिए सुचारु किया जाए। उन्होंने बताया कि 5.95 किलोमीटर लंबा 4 लेन कोटद्वार बाईपास हाईवे भी प्रस्तावित है। जिसमें पूर्व में टेंडर भी खोला गया था लेकिन भूमि हस्तांतरण में समय अधिक लगने से इस प्रक्रिया को निरस्त किया गया है। लिहाजा इस तकनीकी दिक्कत के दूर होने के बाद इस कार्य को दोबारा अलग से बोली लगाकर पूरा कराया जाएगा।

10 बीघा भूमि अवैध प्लॉटिंग पर चली एमडीडीए की जेसीबी

नियमों के खिलाफ निर्माण कार्यों पर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई जारी रहेगीः तिवारी

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। उत्तराखंड में सरकारी जमीनों पर कब्जा, अवैध निर्माण और बिना नक्शा पास कराए हो रही प्लॉटिंग के खिलाफ मसूरी-देहरादून विकास प्राधिकरण (एमडीडीए) की सख्त कार्रवाई लगातार जारी है। इसी क्रम में बुधवार को एमडीडीए की टीम ने शिमला बाईपास स्थित हिन्दुवाला क्षेत्र में राशिद द्वारा की जा रही लगभग 10 बीघा भूमि पर अवैध प्लॉटिंग को ध्वस्त किया। कार्रवाई के दौरान सहायक अभियंता अभिषेक भारद्वाज, अवर अभियंता नितेश राणा व सिद्धार्थ सेमवाल, सुप. रवाइजर समेत पुलिस बल मौके पर मौजूद रहा।

उपाध्यक्ष बंशीधर तिवारी ने कहा कि मसूरी-देहरादून विकास प्राधिकरण (एमडीडीए) क्षेत्रान्तर्गत किसी भी प्रकार के अवैध निर्माण या अवैध प्लॉटिंग को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। नियमों के खिलाफ हो रहे निर्माण कार्यों पर ध्वस्तीकरण की कार्यवाही बिना किसी दबाव और प्रभाव के जारी रहेगी। एमडीडीए ने आमजन से अपील की है कि किसी भी प्रकार के निर्माण कार्य से पूर्व नियमानुसार नक्शा स्वीकृत कराएं, अन्यथा अवैध निर्माण व प्लॉटिंग पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

सीजीसी विश्वविद्यालय मोहाली के रूप में रूपांतरण की घोषणा

देहरादून। चंडीगढ़ ग्रुप ऑफ कॉलेज, झंजेड़ी ने आधिकारिक रूप से सीजीसी विश्वविद्यालय, मोहाली के रूप में अपने रूपांतरण की घोषणा की है। यह घोषणा जे. डब्ल्यू. मैरियट, चंडीगढ़ में एक प्रेस सम्मेलन के दौरान की गई। सीजीसी विश्वविद्यालय, मोहाली का लक्ष्य भारत को एआई आधारित विकास, तकनीक-प्रथम अध्ययन और नवाचार का नया केंद्र बनाना है। यहां 50:50 शिक्षा मॉडल लागू है। एस. रशपाल सिंह ढालीवाल ने कहा कि "यह विश्वविद्यालय समाज के प्रति मेरी प्रतिबद्धता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल कुछ विशेष लोगों का विशेषाधिकार नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह हर व्यक्ति का अधिकार है।

महिला का अपहरणकर्ता बंदी, महिला व उसका बच्चा बरामद

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून/सेलाकुई। एक महिला का अपहरण कर ले जाने वाले एक अपहरणकर्ता को सेलाकुई पुलिस ने गिरफ्तार कर उसकी निशानदेही पर अपहृत महिला और उसके बेटे को बरामद करने के साथ-साथ उसके पास से महिला के लाखों के जेवरात भी बरामद कर लिए।

स्थानीय थाने पर अभियोग पंजीकृत करवाते हुए सेलाकुई निवासी एक व्यक्ति ने बताया कि उसकी पत्नी का अब्बू साले उर्फ तालिक ने अपहरण कर लिया और उसके तीन साल के लड़के को भी अपने साथ ले गया। दूसरे समुदाय के व्यक्ति द्वारा महिला और उसके पुत्र का अपहरण कर लिए जाने का अभियोग पंजीकृत हो जाने के बाद मामले की गंभीरता को देखते हुए

थानाध्यक्ष पी.डी.भटट ने महिला और उसके लड़के को बरामद करने के लिए अपहरणकर्ता के मोबाइल नंबर को सर्विलांश पर लगाकर उसकी तलाश प्रारंभ कर दी।

इस दौरान क्षेत्राधिकारी विक. ासनगर भाष्कर लाल शाह ने स्थानीय पुलिस को मामले की गंभीरता को देखते हुए पूरे घटनाक्रम पर से शीध्र पर्दा उठाने के निर्दे दिए थे। थानाध्यक्ष ने बताया कि घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगाला गया। उन्होंने बताया कि दूसरे समुदाय की महिला और उसके पुत्र का अपहरण कर ले जाने वाले विशेष समुदाय के व्यक्ति के समबंध में जानकारी एक. की गई। उन्होंने बताया कि पुलिस अधिकारियों के आदेश पर एसआ. ेजी की टीम ने भी मामले का खुलासा करने के लिए सेलाकुई पुलिस का सहायोग करना प्रारंभ किया।

इस दौरान सोशल मीडियां के माध्यम से भी अपहरणकर्ता का सुराग लगाने के प्रयास किये गए।इस दौरान जानकारी मिली की आरोपी महिला और उसके तीन साल के बच्चे का अपहरण कर रूड़की में किसी स्थान पर छिपा हुआ है। खबर मिलने के बाद अपहृत महिला और उसके बच्चे को बरामद करने के लिए पुलिस की एक टीम को रूड़की रवाना किया गया। पुलिस टीम ने स्थानीय पुलिस को साथ लेकर गंगनहर कोतवाली क्षेत्र के ग्राम सुनहरा से अपहरणकर्ता अब्बू साले उर्फ तालिब पुत्र मुमताज निवासी ग्राम साकीन करिआर थाना डगरवा जिला पूर्णिया बिहार को गिरफ्तार कर उसके पास से महिला और उसके लड़के को बरामद कर लिया। पकड़े गए अपहरणकर्ता से सेलाकुई लाकर पूछताछ की गई तो उसके पास से महिला से लूटे गए जेवरात भी बरामद कर लिए गए। पुलिस ने पकड़े गए अपहरणकर्ता को संबंधित न्यायालय में पेश किया जहां से उसे चौदह दिन की न्यायिक अभिरक्षा में सुद्धेवाला जेल भेज दिया गया।

विपक्ष का काम केवल हंगामा करनाः बंसल

कांग्रेस समेत विपक्ष ने देशभर में बना ली है यह परंपरा

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। भाजपा राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष व सासंद राज्यसभा डा. नरेश बंसल ने संसद के मानसून सत्र में गतिरोध जारी रखने पर विपक्ष की आलोचना की और सदन की कार्यवाही में बाधा डालने का गंभीर आरोप लगाया। उन्होंने विपक्ष को सच्चाई सुनने की ताकत न होने की बात कही और विरोध करने के तरीके सीखने की सलाह दी।उन्होने कहा कि विपक्ष के गलत तरीको से पूरा सत्र हंगामे की भेंट चढ़ गया।

डा. नरेश बंसल ने कहा कि सदन की कार्यवाही में बाधा डालना विपक्ष की आदत हो गई है, विपक्ष का हंगामा नियमों के खिलाफ है।उन्होंने कहा कि विपक्ष सदन को नहीं चलने दे रहा है जबकी सरकार चर्चा कराना चाहती है। भाजपा सांसद ने स्पष्ट रूप से कहा कि विपक्ष में सच्चाई सुनने की ताकत नहीं है।डा. नरेश बंसल ने कहा कि सदन मे जब मैं भाषण दे रहा हूं और बगल में कोई आकर नारेबाजी करेगा तो यह लो. कतांत्रिक नहीं है। यह सदन में काम करने का तरीका नहीं होता।डा. नरेश बंसल ने कहा कि यह जनता के पैसे की बरबादी व लोकतंत्र की हत्या है। डा. नरेश बंसल ने कहा की यही उत्तराखंड विधान सभा मे भी यही देखने को मिला जिसमे कांग्रेस विधायको ने सदन मे तोड़फोड़ की व हाउस को बंधक बनाने का प्रयास किया जो अलोकतांत्रिक है।डा. नरेश बंसल ने कहा कि सदन को किसी भी हाल मे बंधक नहीं बनने दिया जाएगा। डा. नरेश बंसल ने कहा कि बिजनेस एडवाइजरी काउंसिल में यह चर्चा हुई कि बिल पारित कराए जाएंगे,पर पूरे सत्र मे विपक्ष की भूमिका अपनी बात के उल्ट रही।डा. नरेश बंसल ने इस पर नाराजगी जताते हुए इसे बेहद दुखद और अलोकतांत्रिक बताया। डा. नरेश बंसल ने कहा कि सदन में जनता के मुद्दों पर गंभीर चर्चा होनी चाहिए थी, लेकिन विपक्ष ने कानून व्यवस्था की धज्जियां उड़ाने का काम किया।

कहा - चुनावों में भाजपा को जनता का लगातार मिला आशीर्वाद

देहरादून। डा. नरेश बंसल ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए 5315 करोड़ का अनुपूरक बजट प्रस्तुत किया गया है। इस बजट के माध्यम से भाजपा सरकार ने युवाओं को नए अवसर, महिलाओं का सशक्तिकरण, किसानों को सहारा और दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्रों को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दिया है। डा. नरेश बंसल ने कहा कि उत्तराखंड समेत देश भर मे पंचायत चुनाव, लोकसभा और विधानसभा चुनावों में भाजपा को जनता का लगातार आशीर्वाद मिला है। यही वजह है कि कांग्रेस बौखला रही है और ईवीएम, चुनाव आयोग और सरकार पर आरोप लगाती है। उन्होंने कहा कि भाजपा राज्य को देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य बनाने के लिए काम कर रही है और विपक्ष को भी सदन मे जनता के हितों पर केंद्रित करना चाहिए।

बंद मकान से लाखों के जेवरात चोरी करने वाले तीन गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून/सेलाकुई। मकान में चोरी की वारदात को अंजाम देकर फरार हो जाने वाले तीन शातिर चोरों को सेलाकुई पुलिस ने गिरफ्तार कर उनके पास से चोरी किए गए लाखों रुपये के जेवरात बरामद किए है। पकड़े गए चोर नशे की पूर्ति करने के लिए मकानों को निशाना बनाकर वहां पर चोरी की वारदातों को अंजाम देते थे।

भाऊवाला निवासी शशांक गुरूंग पुत्र सूरज गुरूंग ने थानाध्यक्ष सेलाकुई पी.डी.भटट को जानकारी देते हुए बताया था कि वह विगत कुछ समय पूर्व मकान के ताले बंद कर अपने परिजनों के साथ बाहर गया हुआ था। जब वह मकान पर पहुंचा तो मकान के ताले टूटे देखकर उसके होश फाख्ता हो गए। मकान के अंदर जाकर देखा तो वहां पर सारा सामान बिखरा हुआ था और अलमारी के ताले तोड़कर चोरों द्वारा लाखों रुपये के जेवरातों पर हाथ साफ कर दिया गया था। थानाध्यक्ष ने बताया कि शशांक की तहरीर पर धारा 305/ए के तहत अभियोग पंजीकृत कर चोरों की तलाश करने के लिए उनके द्वारा पुलिस टीम का गठन कर दिया गया था। इस दौरान पुलिस टीम ने बंद मकान में हुई चोरी की वारदात वाले स्थान के समीप निवास करने वाले लोगों से पूछताछ की औरचोरी की वारदातों में पूर्व में प्रकाश में आए चोरों के संबंध में जानकारी एकत्र करनी प्रारंभ कर दी। उन्होंने बताया कि इस दौरान उनके द्वारा गठित की गई पुलिस टीम में शामिल अधीनस्थों ने एक सूचना के बाद शशांक गुरूंग के मकान में चोरी करने वाले तीन चोरों को चौकिंग के दौरान हिरासत में ले लिया। थानाध्यक्ष पी.डी.भटट ने बताया कि थाने लाकर हिरासत में लिए गए तीनों चोरों से पूछताछ की गई तो उन्होंने अपने नाम सूर्य प्रताप पुत्र भजनसिंह निवासी निगम रोड,गौरव सिंह पुत्र हीरा सिंह निवासी सिलथाम जनपद पिथौरागढ़ और अंकित पवार पुत्र दर्शन सिंह निवासी रतनपुर कोतवाली पटेलनगर बताए। पकड़े गए चोरों से पुलिस ने लाखों के जेवरात और अन्य सामान बरामद किया। पकड़े गए तीनों चोरों ने बताया कि वह नशा करने के आदि है और अपनी नशे की लत को पूरा करने के लिए वह चोरी की वारदातों को अंजाम देते है।

बिस्मिलाह चौक के लोगों की सहायता में जुटा प्रशासन

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। दून यूनिवर्सिटी से बिस्मिलाह चौक तक निमार्ण कर्यो से सड़क मार्ग में जगह-जगह गढ्ढों से हो आमजन को हो रही परेशानी के चलते राजधानी के अलग-अलग हिस्सों में टूटी सड़के एवं नालों सहित क्षतिग्रस्त हुए मकानो की मरम्मत को लेकर जिलाधिकारी के नेतृत्व में प्रशासन गंभीरता के साथ अपने काम में लगा है।पटेल नगर थाना क्षेत्र के बिस्मिल्लाह चौक पर बारिश के चलते टूटी सड़के एवं नालों की मरम्मत के लिए प्रशासन ने अपनी टीमों को भेज कर जहां कार्यो को तेजी दिलाई है वही आपदा के चलते टूटे मकान को लेकर भी मकान मालिकों को आर्थिक सहायता दी गई है।

एसडीम कुमकुम जोशी के निर्देशन में प्रशासनिक टीम सड़कों एवं नालों की मरम्मत में के कार्यो में जुटी है।एडीएम के के मिश्रा ने बताया कि नगर के अलग-अलग हिस्सों मैं जाकर जहां सड़के वह मकान टूटने की सूचना मिली उन्हें चिन्हित करके दुरुस्त करने में प्रशासन की टीम अपने कार्य में जुटी है और आपदा से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया जा रहा है। प्रशासन उन लोगों को आर्थिक सहायता मुवईया भी कर रहा है जिनके मकान या दुकान भारी बारिश के चलते टूट गया है। मुख्यमंत्री के आदेशों के चलते जिला अधिकारी की टीम लोगों की सहायता के आगे बढ़ती नजर आ रही है।दूसरी और देखा जाए तो आपदा के चलते कुछ लोग राजनीति की रोटियां सेखने में भी लगे हैं और प्रशासन के द्वारा किए गए कामों में रोडा अटाकने का काम कर रहे हैं यह मामला भी लोगों की जबान पर चर्चाओं का विषय बना हुआ है। एसडीएम सदर हरि गिरि ने बताया कि दून यूनिवर्सिटी मार्ग पर सीवर लाईन डाले जाने से क्षतिग्रस्त मार्ग की सत्ह वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त होने से स्थानीय जनता के साथ-साथ विश्व विद्यालय में आवगमन कर रहे विद्यार्थियों को आवागमन में अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था।

प्रदेश की शांत वादियों में कहां से आ रहे विदेशी हथियार

अपराध की दुनियां में नाम कमाने के लिए पश्चिम उत्तर प्रदेश के युवा कर रहे फायरिंग, हत्या

मयूर गुप्ता

देहरादून। उत्तराखंड राज्य की शांत वादियों में पश्चिम उत्तर प्रदेश के युवाओं द्वारा छात्रों और दूनवासियों में अपना वर्चस्व और दबदबा दिखाने तथा कायम रखने के लिए मामूली बातां में विदेशी हथियारों का प्रदर्शन कर जान से मारने की नीयत से फायर करना इतना ही नहीं पश्चिम उत्तर प्रदेश वाली अपनी बादशाहत को दून के लोगों और छात्रों पर कायम करने के लिए उन पर गोली चलाकर उन्हे घायल करना आम बात हो गई है। देहरादून के अंदर कुछ दिनों में दो ऐसी वारदाते घटित हो भी गई और पुलिस ने एक हमलावर के पास से विदेशी पिस्टल भी बरामद की, जबकि दूसरे के पास से कुंट्रीमेड पिस्टल बरामद की। पश्चिम उत्तर प्रदेश के युवा शिक्षा लेने के लिए देहरादून के स्कूलों, कॉलेजों और इस्टीटयूटों में आते तो है लेकिन पढ़ाई-लिखाई से दूर रहकर वह मात्र अपना वर्चश्व कायम रखने के लिए हथियारों का प्रदर्शन और उनकों चलाने का काम करते है।

प्रदेश के हृदय कलाए जाने वाले देहरादून में इन दिनों यह बात काफी चर्चाओं में है कि दून की वादियां में मौजूद कॉलेज, स्कूलों और इंस्टीटयूटों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आने वाले पश्चिम उत्तर प्रदेश के युवा वहां पर अध्यनरत अन्य छात्र-छात्रों में अपना वर्चश्व कायम करने के लिए विदेशी हथियारों का इस्तेमाल कर रहे है। पश्चिम उत्तर प्रदेश के जनपद मुजफ्फरनगर और जनपद सहारनपुर के युवा देशी और विदेशी हथियारों को लाकर उनका खुलेआम प्रदर्शन कर अपने प्रतिद्वदियां को डराने धमकाने का काम कर रहे है। बाहरी राज्यों से आए युवाओं के हाथों में विदेशी हथियार देखकर वहां पर अध्यनरत अन्य छात्र-छात्राओं में दहशत का माहौल व्याप्त हो जाता है। हाल ही के दिनों में कुछ ऐसी वारदातें घटित हुई जिससे शांत देहरादून में निवास करने वाले लोगों और विभिन्न कॉलेजों, स्कूलों तथा इंस्टीटयूटों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं के दिलों-दीमांग पर दहशत का माहौल व्याप्त है। कुछ समय पूर्व प्रेमनगर थाना क्षेत्र में हिन्दू संगठन के युवा नेता रोहित नेगी की विगत 5 जून को मामूली विवाद के बाद जनपद मुजफ्फरनगर के पुरकाजी निवासी दो युवकों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी।

हालांकि बाद में अगले दिन 6 जून को देहरादून पुलिस की दोनों हत्याभियुक्तों मोहम्मद अजहर त्यागी पुत्र अब्दुल रब निवासी प्रधान पट्टी बरला छपार और आयुष कुमार उर्फ सिकंदर पुत्र विजय कुमार निवासी मालैन्डी जनपद शामली के साथ हरिद्वार के मंगलौर कोतवाली क्षेत्र की नारसन बॉर्डर पर मुठभेड़ हो जाने के बाद दोनों हत्यारोपियां के हाथ और पैरों को पुलिस की गोलियों ने छलनी कर दिया था। इसी वर्ष 25 अप्रैल को प्रेमनगर के बैंक कॉलोनी पौंधा में छात्रों के दो गुटों के बीच चली आ रही रंजिश के कारण छात्रों के एक गुट ने एक छात्र को कंट्रीमेड पिस्टल से गोली मारकर घायल कर दिया था। बाद में पुलिस ने छात्र को गोली मारकर घायल करने वाले जनपद सहारनपुर के देवबंद के गांव कुरलली निवासी अनमोल देशवाल पुत्र प्रदीप कुमार देशवाल को गिरफ्तार कर उसके पास से कंट्रीमेड पिस्टल 315 बोर बरामद कर लिया था। वहीं विगत 8 अगस्त को राजपुर थाना क्षेत्र के एक रेस्टोरेंट के बाहर एक बार फिर छात्रों के दो गुटटों में किसी बात को लेकर कहा सुनी के बाद जनपद मुजफ्फरनगर के नई मंडी कोतवाली क्षेत्र के सबसे चर्चित गांव साहवली निवासी गौतम अहलावत पुत्र पवन सिंह अहलावत ने संजय गुरूंग नाम के के छात्र के चेहरे पर गोली मारकर उसे मरणासन्न की स्थिति में पहुंचा दिया। हमलावर छात्र का परिवार साहवली गांव के काफी रूतबे वाला परिवार है और हमलावर की राजनीति पहुंच भी अच्छी है। हमलावर गौतम अहलावत ने जिस हथियार से संजय गुरूंग को गोली मारी थी वह विदेशी हथियार 32 बोर का है पुलिस ने उक्त हथियार को आईटी पार्क के समीप जंगलों से बरामद होना दर्शाया था। सवाल यह उठता है कि आखिरकार प्रदेश की शांत वादियों में विदेशी और देशी हथियारों का पश्चिम उत्तर प्रदेश के युवाओं द्वारा खुलेआम प्रदर्शन किया जाना और अपनी बात को ऊपर रखने के लिए किसी भी युवक और लोगों का उक्त हथियारों का निशाना बनाकर उनकी जान से खिलवाड़ करना इतना हौसला और हथियार कहां से लाने का काम करते है पश्चिम उत्तर प्रदेश के युवा।

राजपुर थानाध्यक्ष सरकारी फोन उठाने की जहमत नहीं उठाते

देहरादून। राजपुर के जिस रेस्टोरेंट के बाहर जनपद मुजफ्फरनगर की नई मंडी कोतवाली क्षेत्र के गांव साहवली निवासी गौतम अहलावत नामक युवक द्वारा विदेशी पिस्टल से अपने प्रतिद्वंदी छात्र को गोली मारकर घायल किया गया आखिरकार उक्त विदेशी हथियार गौतम कहां से लाया और उसकों उक्त हथियार सप्लाई करने वाला व्यक्ति कौन है। इस संबंध में जब हमने राजपुर थानाध्यक्ष से रविवार की देर रात्रि उनके सरकारी नंबर पर फोन कर जानकारी करने का प्रयास किया तो उन्होंने काफी फोन किये जाने के बाद सरकारी मोबाइल नंबर को उठाना तक गवारा नहीं समझा। इसके बाद सोमवार की प्राप्त उन्हे एक बार फिर फोन कर गौतम अहलावत के पास से बरामद किए गए विदेशी पिस्टल के संबंध में जानकारी की गई तो वह इधर-उधर की बाते करने लगे लेकिन बाद में जब सोमावार की दोपहर को उनसे पूरे मामले में विस्तृत जानकारी करने के लिए उनके सरकारी नंबर पर फोन किया गया तो उन्होंने फोन नहीं उठाया।

कार्यालय मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण ट्रॉसपोर्ट नगर सहारनपुर रोड़ देहरादून।

पंत्राक 278/ सम्पत्ति/2025-26 दिनांक 20/8/2025

निविदा सह नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्राधिकरण की विभिन्न रिक्त दुकानों की निविदायें दिनांक 01-09-2025 को 11 बजे तक स्वीकार की जायेगी, तथा उसी दिन 12.30 बजे अपराह्न उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जायेगी, इच्छुक निविदादाता निविदा प्रपत्र एवं शर्ते किसी भी कार्यदिवस में प्राधिकरण के सम्पत्ति अनुभाग से नकद धनराशि जमा कर प्राप्त कर सकतें हैं।

सह प्रभारी सम्पत्ति

आखिर मुस्लिम हितैषी होने का दम भरने वाली कांग्रेस मुस्लिम मुद्दों पर चुप क्यों?

अल्पसंख्यक विधेयकों पर शहजाद ने उठाई आवाज

शाह टाइम्स संवाददाता

रूडकी/ लक्सर। विधानसभा सत्र में राज्य सरकार ने कई विधेयक पास होने के लिए रखे गये जिसमें धर्मांतरण विधेयक में सजा का प्रावधान के अलाव अब दूसरा मदरसा बोर्ड की बजाय उत्तराखण्ड अल्पसंख्यत शिक्षा विधेयक भी रखा गया लेकिन अफसोस की बात है कि मुस्लिम हितों की हामी भरने वाले या यह कहें कि मुस्लिम समाज को अपना वोट बैंक समझने वाली विपक्ष कांग्रेस इन विधेयकों पर क्यों चुप्पी साधे हुए हैं। क्यों इन विधेयकों पर चर्चा के लिए कांग्रेस ने आवाज नहीं उठायी इसके पीछे आखिर कांग्रेस का क्या मकसद है। यह तो विपक्ष ही जाने।

बसपा विधायक हाजी मौ. शहजाद ने धर्मांतरण व उत्तराखण्ड अल्पसंख्यक शिक्षा विधेयक पर अपना विरोध दर्ज कराते हुए इन विधेयकों पर चर्चा के लिए संसोधन प्रसंग लगाये ताकि इन पर चर्चा की जा सके ओर खामियों को सदन की प्रवर समिति को सुपुर्द किया जा सके। जिस तरह से बसपा विधायक लक्सर हाजी मौ. शहजाद ने इन मुस्लिम संबंधित विधेयकों पर विधानसभा में प्रसंग लगाये और चर्चा की मांग की बात रखी उससे यह बात साफ हो

❖उत्तराखण्ड अल्पसंख्यक शिक्षा विधेयक व धर्मांतरण विधेयक पर बसपा विधायक ने लगाया चर्चा के लिए प्रसंग

गयी कि कांग्रेस या मुस्लिम हितैषी होने का दावा करने वाले कांग्रेस विधायक आखिर इन विधेयक पर क्यों चुप रहे। क्या उनकी मंशा इन विधेयकों को बिना चर्चा के सरकार के साथ मिलकर पास कराने की है और ऐसा नहीं तो कांग्रेस या मुस्लिम कांग्रेस विधायकों ने इस पर एतराज क्यों नहीं जताया। विधानसभा में चर्चा की मांग क्यों नहीं की गयी यह एक बडा सवाल है।

बसपा विधायक हाजी मौ. शहजाद ने बताया कि सरकार जिस तरह से मुस्लिम समाज को कई मामलों में सीधा टारगेट कर रही है या यह कहें कि मुस्लिम समाज के मौलिक अधिकारों का हनन किया जा रहा है और इस मामले में मुस्लिम समाज को अपना वोट बैंक कहने वाले कहां हैं क्यों मुस्लिम संबंधी विधेयकों पर चुप हैं क्या उनकी मंशा सरकार के साथ मिलकर इन विधेयकों पास कराना नहीं तो क्या है। यह तो समाज के लोगों को समझना होगा कि उनका कौन हितैषी है और कौन दुश्मन है। और कौन उन्हें वोट के लिए इस्तेमाल करता है।

लक्सर विधायक मौ शहजाद ने विधानसभा सत्र में इन विधेयकों का विरोध करने के लिए प्रसंग लगाये। धर्मांतरण विधेयक मामले में प्रश्न संख्या 22 पर संसोधन का रूप बतौर प्रस्तावक शहजाद द्वारा प्रसंग लगाया गया। वहीं प्रश्न नं0 29 में उत्तराखण्ड अल्पसंख्यक शिक्षा विधेयक में भी संसोधन का रूप बतौर प्रस्तावक नाम शहजाद का ही दर्ज कराया गया है। जिससे यह साफ हो गया है कि मुस्लिम हितैषी होने का दावा करने वाली कांग्रेस व उसके विधायक व कांग्रेस के मुस्लिम विधायक आखिर इन विधेयकों को क्यों चुपचाप पास कराना चाहते हैं क्यों उन पर चर्चा नहीं कराना चाहते। इससे साफ होता है कि विपक्षी कांग्रेस भी मुस्लिम मुद्दों पर भाजपा सरकार के साथ है। अब जनता को इस पर गंभीरता से गौर करना होगा कि कौन उसका हितेषी है और कौन दुश्मन है।

लक्सर विधायक मोहम्मद शहजाद के द्वारा विधानसभा में विधानसभा में क्वेश्चन उठाते हुए कहा कि जो कानून बनाए जा रहे हैं वह केवल एक समुदाय मुसलमान को परेशान करने के लिए बनाए जा रहे हैं उन्होंने कहा जो मदरसा बोर्ड के लिए बड़ी-बड़ी बातें करते थे आज वह बगले झांक रहे हैं क्योंकि वह स्मार्ट मदरसे बनाने की बात करते थे आज उनके पास कहने को कुछ नहीं है उन्होंने कहा ताकतवर आदमी कमजोर आदमी को धर्मांतरण के बारे में ज्ञान दे रहे हैं उन्होंने कहा सरकार को चाहिए कि पहले अपने आप को देखें कि हम ताकतवर होते हुए कमजोर लोगों को किस तरह से परेशान कर रहे हैं। सरकार मुस्लिमों को टारगेट करन उनका सोशण कर रही है।

पुलिस से धक्का मुक्की करने पर एक गिरफ्तार

पूछताछ पर मौके से भागने लगा था संदिग्ध

शाह टाइम संवाददाता

रुड़की। संदिग्ध को पुलिस ने मौके पर पकड़ना चाहा तो संदिग्ध ने पुलिस से धक्का मुक्की कर दी। जिसके बाद पुलिस ने आवश्यक बल प्रयोग कर संदिग्ध को पकड़ लिया। संदिग्ध का पुलिस ने शांतिभंग में चालान किया है। प्राथमिक जांच पड़ताल में पता चला कि धक्का मुक्की करने वाला पूर्व में भी जेल जा चुका है। पुलिस का कहना है कि वह अपराधी किस्म का है।

जानकारी के अनुसार गंगनहर कोतवाली पुलिस की एक टीम नहर पटरी से गुजर रही थी। तभी बिजली घर के पास कुछ वाहन पार्क दिखे। जहां पर एक संदिग्ध खड़ा दिखा। गतिविधियां संदिग्ध होने पर पुलिस ने अपना वाहन रोक और संदिग्ध से पूछताछ की। इस बीच संदिग्ध मौके से भागने लगा। अनहोनी की आशंका पर पुलिस ने संदिग्ध का पीछा किया तो संदिग्ध ने पुलिस से धक्का मुक्की कर दी। जिसके बाद पुलिस ने संदिग्ध को आवश्यक बल प्रयोग कर पकड़ लिया। इंस्पेक्टर आरके सकलानी ने बताया कि पाडली गुर्जर निवासी शहवान उर्फ शहवाज पूर्व में भी कई बार जेल जा चुका है और वह अपराधी किस्म का है।

वहीं आरोपी को पकडने वाली पुलिस टीम में उप निरीक्षक राजीव उनियाल, कांस्टेबल संदीप और विशाल शामिल रहे।

राउमावि नन्हेड़ा में प्रधानाचार्य सीधी भर्ती का किया विरोध

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नन्हेड़ा में आज भी प्रधानाचार्य सीधी भर्ती का विरोध किया गया। इस दरमियान शिक्षकों ने काली पट्टी बांधकर कार्य बहिष्कार किया जिस कारण विद्यालय में शिक्षण कार्य ठप्प रहा।

प्रभारी प्रधानाचार्य ताजीम अली ने कहा कि हम कानून के दायरे में रहकर गांधीवादी तरीकों से विरोध करेंगे सफलता मिलने तक हमारा सत्याग्रह जारी रहेगा। ब्लॉक संयुक्त मंत्री जसमेंद्र कुमार ने उम्मीद जताई कि शासन स्तर पर बातचीत से कोई हल निकल आएगा। श्रीमती रूपाली वशिष्ठ ने भी कहा कि हक के लिए हक मिलने तक जंग जारी रहेगी।

डीएम व एसएसपी ने लिया कलियर उर्स की व्यवस्थाओं का जायजा

मेले की तैयारियों को समय से दुरुस्त करने के निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता

पिरान कलियर। दरगाह साबिर पाक के 757 वे सालाना उर्स/ मेले की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी मयूर दीक्षित और एसएसपी प्रमेंद्र सिंह डोभाल ने कलियर पहुंचकर मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने उर्स/मेले में की तैयारियों को लेकर अधिकारियों को जल्द व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश दिए।साथ ही उन्होंने थाने की प्रस्तावित भूमि का भी निरीक्षण किया।

पिरान कलियर दरगाह साबिर पाक का 757 वे सालाना उर्स/मेले में महज चार दिन बाकी है।उर्स की तैयारी आधी अधूरी पड़ी हुई है। उर्स को शकुशल एवं शांतिपूर्ण संम्पन कराए जाने को लेकर प्रशासन की ओर से तैयारियां चल रही है।उर्स/मेले की तैयारीयों को परखने के लिए जिलाधिकारी मयूर दीक्षित और एसएसपी हरिद्वार प्रमेंद्र सिंह डोभाल, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट दीपक रामचन्द्र शेट एसपी देहात शेखर चन्द्र शुयाल व सीओ रुड़की नरेंद्र पंत ने बुधवार को कलियर पहुंचकर उर्स मेले कि तैयारियों का निरीक्षण किया। उसके बाद कलियर में प्रस्तावित थाने की भूमि का भौतिक निरीक्षण किया।इस दौरान मेला क्षेत्र की व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए सम्बंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

इस दौरान उन्होने यातायात व्यवस्था ,सुरक्षा,भीड़ प्रबंधन,साफ सफाई,पेयजल आपूर्ति,पथ प्रकाश,स्वास्थ्य, सहित अन्य सुविधाओं की तैयारियों की समीक्षा की। साथ ही उन्होने यह भी निर्देश दिए कि मेला क्षेत्र में आने जायरीनों की सुविधाओं को प्राथमिकता दी जाए और सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद रखी जाए।उर्स के दौरान होने वाली सभी व्यवस्था समय से पूरी की जाए।ईओ नगर पंचायत को मेला क्षेत्र की साफ सफाई व शौचालयों को समय से साफ सुथरा रखने को कहा गया है।तहसील प्रशासन के साथ समन्वय बनाकर उर्स के दौरान कार्य करना है।ज्वाइंट मजिस्ट्रेट दीपक रामचन्द्र शेट ने बताया कि जल्द ही उर्स की सभी व्यवस्था दुरुस्त कर ली जाएगी।इस मौके पर एसपी देहात शेखर चंद्र सुयाल, सीओ रुड़की नरेंद्र पंत, थाना प्रभारी रवींद्र कुमार, दरगाह प्रबंधक रजिया, नगर पंचायत ईओ कुलदीप सिंह चौहान समेत अन्य अधिकारी मौजूद रहें।

लक्सर-बिजनौर हाईवे पर दो कारों में जोरदार भिड़ंत

पुलिया तोड़कर नाले में गिरी कार पानी में डूबी , ग्रामीण बने मददगार

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। लक्सर-बिजनौर हाईवे पर बुधवार सुबह उस समय अफरातफरी मच गई, जब अकोढ़ा कला गांव के पास दो कारों की आमने-सामने टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों वाहन पुलिया तोड़कर नाले में जा गिरे। एक कार पूरी तरह गहरे पानी में डूब गई।

हादसा देखकर मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत कर कार में फंसे चालक को छत तोड़कर बाहर निकाला। दूसरी कार के लोग किसी तरह खुद बाहर निकल आए। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, एक कार लक्सर से अमरोहा की ओर जा रही थी जबकि दूसरी रायसी से लक्सर की तरफ आ रही थी। तेज रफ्तार के कारण दोनों वाहनों का संतुलन बिगड़ा और पुलिया पर ही आमने-सामने भिड़ंत हो गई। इसके बाद दोनों कारें सीधे नाले में समा गईं। ग्रामीणों ने बताया कि पानी में समाई कार का दरवाजा जाम हो गया था। काफी कोशिशों के बाद चालक को खिड़की और छत तोड़कर बाहर निकाला गया। सूचना पर पुलिस और फायर टीम भी मौके पर पहुंच गई और क्रेन बुलाकर दोनों गाड़ियों को बाहर निकाला गया। लक्सर कोतवाली प्रभारी राजीव रौथान ने बताया कि हादसे में एक चालक घायल हुआ है, जिसे सीएचसी भेजा गया है। सभी सवार सुरक्षित बताए जा रहे हैं। पुलिस ने वाहनों को हटाकर यातायात बहाल करा दिया है।

पुलिस ने दो नशा तस्कर किए गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। पुलिस के द्वारा अवैध नशा बेचने वालों के खिलाफ छापेमारी करते हुए दो नशा तस्करो को गिरफ्तार किया है राजीव रौथाण कोतवाली प्रभारी लक्सर ने जानकारी देते हुए बताया मिशन ड्रग्स फ्री देवभूमि 2025 को सफल बनाने के लिए एसएसपी हरिद्वार द्वारा जनपद को नशा मुक्त करने के लिए अवैध नशा मादक पदार्थो की तस्करी को रोकने के लिए पुलिस को निर्देशित किया था जिसमें पुलिस टीम गठित की गई गठित पुलिस टीम के द्वारा मुखबीर की सूचना पर 19 अगस्त 2025 को चेकिंग के दौरान एक नशा तस्कर को गिरफ्तार किया गया उसके कब्जे से 480 अवैध नासिले कैप्सूल बरामद हुए। पूछताछ में अभियुक्त द्वारा नशिली दवा को वहन भगवानपुर से लाना बताया जिस पर पुलिस द्वारा ठोस कारवाई करते हुए 20 अगस्त 2025 को मेडिकल संचालक अदनान को भी गिरफ्तार किया गया दोनों अभियुक्तगणों के खिलाफ संबंधित मुकदमा दर्ज कर लिया गया है उनके कब्जे से 480 संबंधित कैप्सूल संबंधित नंबर के बरामद हुए हैं पूछताछ करने पर उन दोनों व्यक्तियों ने अपने नाम नईम पुत्र सलीम निवासी शलियर थाना गग नहर जनपद हरिद्वार अदनान पुत्र अजरार निवासी माधवपुर थाना कोतवाली गग नहर बताएं।

राह भटके तीन नाबालिग बच्चों को पुलिस ने परिजनों को सौंपा

शाह टाइम्स सम्वाददाता

लक्सर। पुलिस के द्वारा तीन नाबालिक बच्चों जो रास्ता भटक गए थे उनको तलाश कर परिजनों के सुपुर्द किया है राजीव रौथाण कोतवाली प्रभारी लक्सर ने जानकारी देते हुए बताया 19 अगस्त 2025 को चेतक को लक्सर क्षेत्र में तीन नाबालिक बच्चे डरते सहमते भटकते दिखाई दिये जिस पर चेतक कर्मगण द्वारा तीनों नाबालिक बच्चे जिनकी उम्र 8 से 12 वर्ष के बीच थी जो की देखने में बहार के प्रतित हो रहे थे उन्हें पास बुलाकर और प्रभारी निरीक्षक कोतवाली लक्सर के निर्देशानुसार अउपनिरीक्षक रंजीत नौटियाल ने पूछताछ कर उनके परिजनों के संबंध में जानकारी की गई तीनों बच्चे डरे सहमें होने के कारण अपना पता स्पष्ट नहीं बता पा रहे थे तीनों बच्चों को अपने साथ लाकर खाना खिलाकर शालीनता प्यार से पूछताछ करने का प्रयास किया गया लेकिन तीनों नाबालिक बच्चों के पास अपने परिजनों व परिचितों के संपर्क नंबर नहीं थे जिस कारण पुलिस को परिजनों तक पहुंचने में कड़ी मेहनत करनी पड़ी तीनों बच्चों के पते में जानकारी जुटाकर उनके परिजनों से संपर्क किया।

नाम परिवर्तन

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पास्पोर्ट में मेरा नाम सद्दाम दर्ज है और मेरे आधार कार्ड, पेनकार्ड आदि अभिलेखों में मेरा नाम अहमद सद्दाम अंकित है। सद्दाम व अहमद सद्दाम दोनों ही मेरे नाम हैं भविष्य में मुझे सद्दाम व अहमद सद्दाम के नाम से ही जाना, पहचाना, पढ़ा लिखा, समझा व दर्ज किया जाए।

अहमद सद्दाम पुत्र अहसान नि. शीतलपुर, तह. व जिला हरिद्वार।

खोया-पाया सूचना

सूचित किया जाता है कि खसरा नं0 444 मौजा किशनपुर भगवानपुर रूडकी की गिफ्ट डीड जो कर्नल विवेक गोयल पुत्र हरि प्रसाद गोयल नि. 1/3 चंद्रपुरी रूडकी हाल नि. 38 आनंद चौक देहरादून दि. 12.11.2018 रजि. बही नं. 1 जिल्द 1479 पृष्ठ 265/282 सीरियल नं. 5219 सब रजिस्ट्रार रूडकी उपरोक्त संपत्ति ख.स. नं. 444 को कोटेक हैल्थकेयर लि. ने 03.12.2022 को खरीद लिया था जिसके दस्तावेज बही नं. 1 जिल्द 6793 के पृष्ठ 277 से 324 क्रं. नं. 8809 पर दि. 03.12.2022 को रजिस्ट्रेशन किया गया है। इस रजिस्टरी की मूल प्रति हमारे पास है परन्तु भगवानपुर तह. में कार्य से जाते समय उपरोक्त गिफ्ट डीड की मूल प्रति कोटेक हैल्थकेयर से वास्तव में कहीं खो गयी है। उक्त डीड का प्रयोग किसी अन्य को अवैध होगा।

कोटेक हैल्थकेयर लि.
हर्ष तिवारी (प्रबंध निदेशक)

रुड़की में सीवर लाइन की स्थिति बताएगा जल संस्थान का रोबोट

शाह टाइम संवाददाता

रुड़की। यदि सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो अब आपके शहर की सीवर लाइन में रोबोट की जांच प्रणाली का पता चल पाएगा। प्रस्ताव बनाकर उच्च अधिकारियों को भेजा जा रहा है। दावा है कि रोबोट से सीवर लाइन की वर्तमान स्थिति और समस्या समाधान का तुरंत पता लग पाएगा। जबकि समय रहते चौक हुई सीवर लाइन का भी निदान समय पर हो सकेगा। सीवर लाइनों में कर्मचारियों को उतारने से भी राहत मिल पाएगी। रुड़की में सीवर की करीब 102 किलोमीटर लंबी लाइनों का जाल बिछा है। लाइनों से वेस्ट मटेरियल, गंदा पानी और गंदगी सीवर लाइनों से मैनहोल तक पहुंचती है। अक्सर शहर में मानसून में सीवर चौक होने की समस्याओं से शहरवासियों को परेशान होना पड़ता है। वहीं दूसरी ओर वेस्ट मटेरियल के सीवर लाइन के चौक होने से भी समस्या और गहरा जाती है। सीवर चौक होने से गंदा पानी ओवरफ्लो होने पर सड़कों पर बहता है। ऐसे में सीवर की गंदगी के आबादी और सड़कों पर फैलने से बीमारियों की भी आशंकाएं बनी रहती है। इन सब समस्याओं को दूर करने के लिए सीवर लाइनों की सफाई मशीन से होती है। लेकिन कई बार लाइनों की वर्तमान स्थिति का पता नहीं चल पाता है और समस्या का निदान समय पर न होने से दुविधाएं पैदा हो जाती है। लेकिन अब इन सीवर चौक और लाइनों की वर्तमान स्थिति को रखने के लिए रोबोट का सहारा लिया जाएगा। यह एक हाईटेक सीसीटीवी लैंस और गहराई में उतरकर पानी के भीतर चलने वाला रोबोट है। जो सीवर लाइन में चलकर वर्तमान स्थिति का पता कर पाएगा। सीसीटीवी कैमरे का पूरा कंट्रोल रिमोट में होगा। जहां पर स्क्रीन या फिर मोबाइल में सीवर लाइन में कहां क्या दिक्कत है यह तुरंत पता चलेगा। सहायक अभियंता जुनैद गोड़ ने बताया कि रामनगर, सिविल लाइन बाजार क्षेत्र, जादूगर रोड, कृष्णा नगर और सुभाष नगर आदि में सीवर चौक होने की समस्याएं बनी रहती है। हालांकि सीवर चौटिंग मशीन से समय-समय पर लाइनों की सफाई होती है। लेकिन सीवर लाइन किस वजह और कहां से चौक हो रही है। यह पता नहीं चल पाता। रोबोट की मदद से सीवर लाइन की वर्तमान स्थिति और समस्या के निदान में काफी मदद मिलेगी। जबकि सफाई के दौरान जहरीली गैस से भी कर्मचारियों बचाया जा सकेगा।

खेत से किसान की साइकिल हुई चोरी

शाह टाइम्स संवाददाता

झबरेड़ा। कस्बा निवासी एक व्यक्ति बुधवार को पशु चारा लेने के लिए साइकिल से अपने खेत में गया था ।खेत से चारा काट कर जैसे ही किसान जहां साइकिल खड़ी की थी वहां आया तो वहां से साइकिल किसी अज्ञात द्वारा चोरी कर ली गई। कस्बा झबरेड़ा निवासी विक्रम सिंह साइकिल लेकर खेत में पशु चारा लेने के लिए गया था। किसान द्वारा अपनी साइकिल को खेत से कुछ दूरी पर चक रोड में खड़ी कर दी गई थी तथा चारा काटने के लिए कुछ ही दूरी पर स्थित अपने खेत में गया था। जैसे ही उक्त किसान पशु चारा काटकर जहां उसने साइकिल खड़ी की थी वहां पर आया तो वहां पर साइकिल नहीं मिल पाई। साइकिल को आसपास दूसरे किसानों से पता करने पर भी साइकिल का कुछ पता नहीं चल सका है।

समस्याओं को लेकर किसानों ने की एसडीएम भगवानपुर से वार्ता

अंडरपास के नीचे जल निकासी व स्मार्ट मीटर लगाने का होगा विरोध

शाह टाइम्स संवाददाता

भगवानपुर। अनेक समस्याओं को लेकर भाकियू के कार्यकर्ता एसडीम भगवानपुर से मिले और उन्होंने जन समस्याओं के साथ किसानों की मूलभूत समस्याओं के जल्द निस्तारण की मांग की है।

किसानों ने स्मार्ट मीटर लगाने का विरोध करने के अलावा अंडरपास के नीचे जल निकासी व अन्य जल निकासी के लिए नारा निर्माण की बाबत वार्ता की गई जल समस्याओं का निस्तारण न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी गई है। किसान यूनियन के अध्यक्ष पदम सिंह रोड एवं उनके यूनियन के प्रतिनिधि गण तथा राजस्व विभाग बिजली विभाग हाईवे विभाग गन्ना मिल इकबालपुर के प्रतिनिधि आदि उपस्थित रहे जिसमें बैठक की अध्यक्षता उप जिलाधिकारी भगवानपुर श्री देवेंद्र सिंह नेगी जी के द्वारा की गई जिसमें ग्रामीणों के द्वारा हाईवे के अधिकारियों पर कार्यों में लापरवाही एवं भूमि का मुआवजा तथा नाले निर्माण न करना अंडरपास के नीचे पानी की निकासी ना होना आदि आरोप लगाए गए तथा बिजली विभाग पर भी तरह-तरह के आरोप लगाएंगे जिसमें स्मार्ट मीटर बिल्कुल भी नहीं लगे देने के लिए किसान यूनियन ने कहा कि यदि कोई जबरदस्ती स्मार्ट मीटर गांव में लगाएगा तो हम उसके

साथ कुछ भी कर सकते हैं बिजली विभाग के अधिकारियों से उनके द्वारा अनुरोध किया गया के गांव में बिना हमारी सहमति के बिना बिल्कुल भी स्मार्ट मीटर ना लगाया जाए । इब्राहिमपुर के ग्राम प्रधान के द्वारा कहा गया कि हमारे गांव में बिजली के तारों की लाइन ढीली है एवं कई जगह खंभे भी तिरछे हैं गन्ना शुगर मिल इकबाल में गाने का भुगतान कराया जाए ।वार्ता में एसडीएम देवेंद्र सिंह नेगी तहसीलदार दयाराम व नायब तहसीलदार अनिल गुप्ता आदि शामिल रहे।

लिब्बरहेड़ी सहकारी गन्ना विकास समिति मंगलौर प्रबंध कमेटी की बैठक

किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता से किया जाएगा हल : नीशू राठी

शाह टाइम्स संवाददाता

मंगलौर। लिब्बरहेड़ी सहकारी गन्ना विकास समिति लिब मंगलौर की प्रबंध कमेटी की बैठक समिति कार्यालय में अध्यक्ष नीशू राठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, बैठक में समिति के आय-व्यय का अनुमोदन, चीनी मिलों से समिति का विकास अंशदान प्राप्त कराये जाने, समिति की वार्षिक सामान्य निकाय की बैठक कराये जाने, पीसीयू, भारतीय बीज सहकारी समिति, राष्ट्रीय सहकारी निर्यात समिति, राष्ट्रीय सहकारी आर्गेनिक्स की सदस्यता ग्रहण किये जाने, क्षेत्र के गन्ना किसानों के प्रयोजनार्थ स्प्रे ड्रोन क्रय किये जाने, अतिवृष्टि से नष्ट हुए एवं आंशिक रूप खराब हुए गन्ने का सर्वे करवाने पर विचार किया गया, सभी प्रस्ताव उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से पास किए, बैठक में उपाध्यक्ष विनोद कुमार, संचालक पवन सैनी, अनुराग राठी, अंगूरी देवी,सुनील कुमार, बीरबाला,ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक प्रमेन्द्र कुमार, सचिव प्रभारी अनंत सिंह मौजूद रहे, समिति की अध्यक्ष नीशू राठी ने कहा कि समिति की पूरी प्रबंध कमेटी क्षेत्र के गन्ना किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करेगी तथा किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता पर हल करेगी, किसान हित सर्वोपरि रहेगा, उन्होंने कहा कि क्षेत्र के सम्मानित गन्ना किसानों ने जो जिम्मेदारी उन्हें

दी है वह एवं पूरी प्रबंध कमेटी उस पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करेंगी, नीशू राठी ने ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक एवं सचिव को गन्ना किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता पर हल करने एवं समिति क्षेत्र के प्रत्येक गांव में चौपाल लगाकर गोष्ठीयां आयोजित करने के निर्देश दिए!

सम्पादकीय

गुरुवार, 21 अगस्त 2025

निशाने पर पीएम-सीएम

केंद्र सरकार ने बुधवार को संसद में एक बिल पेश किया है, जिसमें गिरफ्तारी या 30 दिन हिरासत पर पीएम-सीएम का पद समाप्त हो जाएगा। यह 5 साल से अधिक सजा वाले अपराध में लागू होगा। सरकार ने इस बिल को जेपीसी को भेज दिया है, वहीं विपक्ष ने विरोध किया है। जैसे ही गृहमंत्री अमित शाह ने इस बिल को पेश किया, तो विपक्षी सदस्यों ने वेल में आकर हंगामा शुरू कर दिया।

विपक्ष का तर्क है कि इस बिल के बहाने मोदी सरकार देश की न्याय व्यवस्था को कमजोर करना चाह रही है, जिसे वे नहीं होने देंगे। गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को लोकसभा में इससे संबंधित तीन बिल पेश किए। तीनों विधेयकों के खिलाफ लोकसभा में जमकर हंगामा हुआ। विपक्ष ने तीनों बिलों को वापस लेने की मांग की। ये तीनों बिल अलग-अलग इसलिए लाए गए हैं, क्योंकि केंद्र सरकार, राज्य सरकार और केंद्र शासित राज्यों के लीडर्स के लिए अलग-अलग प्रावधान हैं। विपक्ष ने इस बिल को महा-आपातकाल से भी बढ़कर बताया और कहा कि यह भारत के लोकतांत्रिक युग को हमेशा के लिए समाप्त करने वाला कदम है। यह कठोर कदम भारत में लोकतंत्र और संघवाद के लिए मृत्यु-घंटी है। आखिर इस बिल में ऐसा क्या है, जिसका विपक्ष विरोध कर रहा है।

केंद्र शासित प्रदेश सरकार विधेयक 2025 के अनुसार केंद्र शासित प्रदेश सरकार अधिनियम, 1963 के तहत गंभीर आपराधिक आरोपों के कारण गिरफ्तार और हिरासत में लिए गए सीएम या मंत्री को हटाने का कोई प्रावधान नहीं है। ऐसे मामलों में केंद्र शासित प्रदेश सरकार अधिनियम, 1963 की धारा 45 में संशोधन करने की जरूरत है। वहीं संविधान विधेयक, 2025 के उद्देश्यों के अनुसार, संविधान के तहत गंभीर आपराधिक आरोपों में गिरफ्तार और हिरासत में लिए गए मंत्री को हटाने का कोई प्रावधान नहीं है, इसलिए ऐसे मामलों में संविधान के अनुच्छेद 75, 164 और 239एए में संशोधन की जरूरत है। इसके साथ ही जम्मू कश्मीर पुनर्गठन विधेयक, 2025 के उद्देश्यों के अनुसार, जम्मू कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 के तहत गंभीर आपराधिक आरोपों के कारण गिरफ्तार और हिरासत में लिए गए मुख्यमंत्री या मंत्री को हटाने का कोई प्रावधान नहीं है, इसलिए ऐसे मामलों में सीएम या मंत्री को हटाने के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करने हेतु जम्मू कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 की धारा 54 में संशोधन की जरूरत है। विपक्ष का कहना है कि ऐसे बिलों की आड़ में सरकार संविधान बदलना चाहती है, जिसे किसी भी कीमत पर नहीं होने दिया जाएगा।

पुलिस स्टेट बन जाएगा देश

संविधान संशोधन विधेयक संविधान में निहित शक्ति-विभाजन के सिद्धांत का उल्लंघन है और जनता के जरियें चुनी हुई सरकारों के अधिकार को कमजोर करता है, इससे कार्यकारी एजेंसियों को खुली छूट मिल जाएगी कि वे मामूली आरोपों और शक के आधार पर ही जज और जल्लाद दोनों बन जाएं, यह सरकार किसी भी कीमत पर देश को पुलिस स्टेट में बदलने पर तुली हुई है, यह कदम चुनी हुई सरकारों पर सीधा हमला है और लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर करने वाला है, अगर इन विधेयकों को लागू किया गया, तो यह भारत के लोकतंत्रपर डेथ नेल (अंतिम वॉर) साबित होगा।

-असदुद्दीन ओवैसी
सांसद, एआईएमआईएम

जननायक राहुल गांधी का एक दांव और एनडीए की धड़कनें तेज

तसलीम कुरैशी

> क्या नरेन्द्र मोदी को इस बात खतरा था कि कहीं आरएसएस खेला ना कर दे क्यों एनडीए के संसदीय नेताओं की बैठक में ही नरेन्द्र मोदी ने अपने नाम पर मुहर लगवाई थी क्या नरेन्द्र मोदी और आरएसएस के बीच चल रही रस्साकशी वजह तो नहीं थी। अगर थी तो क्या अब वह सियासी चिंगारी भड़केगी या वैसे ही फुसफुसा कर ही रह जाएगी जैसे 2024 में रह गई थी क्योंकि उपराष्ट्रपति पद के एनडीए प्रत्याशी संघ की पृष्ठभूमि से ही आते है। यह दांव सिर्फ उपराष्ट्रपति चुनाव का नहीं है, बल्कि एनडीए की एकजुटता की असली परीक्षा है। हो सकता है कि एनडीए की पहली बड़ी दरार इसी चुनाव में खुलकर सामने आ जाए अगर यह आशंका सही साबित हुई तो नरेन्द्र मोदी सरकार के सामने भी संकट खड़ा दिखाई देगा और इस संकट से निपटना मुश्किल हो सकता है, तो सवाल यह है कि क्या चंद्रबाबू नायडू, जगन मोहन रेड्डी और तेलंगाना के केसीआर पार्टी लाइन पर चलेंगे या फिर अपने ही राज्य की जमीन से उठे उम्मीदवार के खिलाफ जाकर अपनी राजनीति की सियासी कब्र खोदेंगे।

देश की सियासत बहुत तेजी से करवटें बदल रही है साथ ही जननायक की भूमिका में आए कांग्रेस के नेता राहुल गांधी की स्वीकार्यता देश में बहुत तेजगति से बढ़ती जा रही है। नेता प्रतिपक्ष जननायक राहुल गांधी की सियासी गुगली में मोदी की भाजपा सहित एनडीए भी फंसता दिखाई दे रहा है। उपराष्ट्रपति के चुनाव का मुकाबला रोचक हो गया है, क्योंकि यह मुकाबला दक्षिण के दो नेताओं के बीच होने की संभावना बढ़ गई है। उपराष्ट्रपति चुनाव को लेकर राजनीति में बड़ा धमाका हो चुका है।

एनडीए के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन को हराने के लिए नेता प्रतिपक्ष जननायक राहुल गांधी ने मोदी स्टाइल में ही मास्टर स्ट्रोक चल दिया है उसका सियासी तोड़ मुश्किल नजर आ रहा है एनडीए खेमे में काफी बेचैनी महसूस की जा रही है। जननायक जब यह कहते हैं कि भाजपा ने बिहार में चुनी हुई सरकार चोरी की। 20 सालों से युवाओं का भविष्य चोरी किया। अब यहां के गरीबों से उनका वोट चोरी कर रहे हैं। बिहार के लोग ये चोरी रोकेंगे, 2 दशक का हिसाब भी लेंगे और वोट से जवाब भी देंगे तो जनता एक सुर में आवाज मिलाती नजर आती है। नेता प्रतिपक्ष जननायक राहुल गांधी मोदी सरकार को शुरू से ही घेरने का काम कर रहे हैं। वोट चोरी को लेकर वह एक बड़े आंदोलन को देश में खड़ा करने की ओर बढ़ रहे हैं।

इसकी शुरुआत वह बिहार से कर चुके हैं और उन्हें वहां अच्छे पैमाने पर समर्थन मिल रहा है। इस आंदोलन को जनता के मिल रहे सहयोग की बिहार की सड़कें गवाही दे रही है कि राहुल गांधी अब सिर्फ राहुल गांधी नहीं रहे अब वह जननायक बन गए हैं और यह बात नरेन्द्र मोदी सहित आरएसएस को परेशान कर रही है। राहुल गांधी को लेकर देशभर में प्रोपेगैंडा किया गया था कि शहजादे है पप्पू है पता नहीं क्या-क्या संघियों ने प्रचारित किया था, लेकिन हकीकत उसके उलट थी और है वह बहुत ही सिद्धांतवादी इंसान हैं इंसान मतलब इंसान।

इंसान के रूप में हैवान नहीं जैसा कि आज लोग हैं इंसान नहीं हैवानियत रूप धारण किए हुए हैं जबकि राहुल गांधी सभ्यताओं से भरपूर हैं जिसको देख मन सुखी हो उठता है। उनके द्वारा किए जा रहे आंदोलन में आ रही अपार भीड़ इसका प्रमाण है कि राहुल गांधी अब सिर्फ राहुल गांधी नहीं रह गए हैं वह जननायक बन गए हैं। बच्चे हों बड़े बुजुर्ग हों या जवान महिला हों या पुरुष सब एक झलक पाने को आतुर रहते हैं यही नहीं उनके द्वारा वोट चोरी को लेकर जो बातें की गई हैं या की जा रही हैं उसे वह सही मान रहे हैं और उसका समर्थन कर रहे हैं जो नरेन्द्र मोदी के लिए खतरे की घंटी है जिसको नरेन्द्र मोदी सहित पुरा संघ परिवार समझ चुका है कि अब सत्ता की उलटी गिनती शुरू हो गई है। अब सबसे ज्यादा मुश्किल में पहले चंद्रबाबू नायडू हैं जो एनडीए का हिस्सा होकर भी अपने ही आंध्र प्रदेश से उतरे विपक्षी उम्मीदवार को कैसे नकारें?

दूसरा नाम उसी राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी हैं जो कि राजनीति में अपने अस्तित्व को बचाने की जुगत में हैं लेकिन वोट देने में फंसा दुविधा जाल और तीसरे तेलंगाना राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव (केसीआर) हैं जो कि तेलंगाना की सियासत के बेताज बादशाह कहे जाते थे या है, अब खुद को किस ओर जाएं की दुविधा में पाते हैं। विपक्ष ने चतुराई दिखाते हुए बी. सुदर्शन रेड्डी को उम्मीदवार बनाया है, जिनका ताल्लुक आंध्र प्रदेश से यानी दक्षिण से ही है। यानी उपराष्ट्रपति के चुनावी खेल में दक्षिण का मुकाबला दक्षिण से ही होगा सियासत भी कितनी अजीबोगरीब होती है कभी कैसे तो कभी कैसे रंग बदल लेती है, जिससे एनडीए के सहयोगियों को सबसे ज्यादा असहज होना पड़ेगा। यहां एक सवाल सबसे बड़ा यह भी है जबसे नरेन्द्र मोदी ने तीसरा कार्यकाल शुरू किया था तबसे ही मुंह बाएं खड़ा है जब 2024 के चुनावी परिणाम घोषित हो गए और यह तय हो गया था कि भाजपा की ही सरकार बनेगी, तो भाजपा ने पार्टी की संसदीय दल की बैठक क्यों नहीं बुलाई थी।

क्या नरेन्द्र मोदी को इस बात खतरा था कि कहीं आरएसएस खेला ना कर दे क्यों एनडीए के संसदीय नेताओं की बैठक में ही नरेन्द्र मोदी ने अपने नाम पर मुहर लगवाई थी क्या नरेन्द्र मोदी और आरएसएस के बीच चल रही रस्साकशी वजह तो नहीं थी। अगर थी तो क्या अब वह सियासी चिंगारी भड़केगी या वैसे ही फुसफुसा कर ही रह जाएगी जैसे 2024 में रह गई थी क्योंकि उपराष्ट्रपति पद के एनडीए प्रत्याशी संघ की पृष्ठभूमि से ही आते है। यह दांव सिर्फ उपराष्ट्रपति चुनाव का नहीं है, बल्कि एनडीए की एकजुटता की असली परीक्षा है। हो सकता है कि एनडीए की पहली बड़ी दरार इसी चुनाव में खुलकर सामने आ जाए अगर यह आशंका सही साबित हुई तो नरेन्द्र मोदी सरकार के सामने भी संकट खड़ा दिखाई देगा और इस संकट से निपटना मुश्किल हो सकता है, तो सवाल यह है कि क्या चंद्रबाबू नायडू, जगन मोहन रेड्डी और तेलंगाना के केसीआर पार्टी लाइन पर चलेंगे या फिर अपने ही राज्य की जमीन से उठे उम्मीदवार के खिलाफ जाकर अपनी राजनीति की सियासी कब्र खोदेंगे और अगर ऐसा हुआ, तो क्या एनडीए की मजबूती सिर्फ नाम की रह जाएगी?

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

मलेरिया रोकथाम के दो नए प्रयास

> **वैज्ञानिक उक्त तकनीकों को लेकर उत्साहित हैं, लेकिन सतर्क भी हैं। यह सफल रहे तो भी इनका उपयोग मच्छरदानी, दवाइयों और कीटनाशकों जैसी अन्य रोकथाम विधियों के साथ मिलाकर ही करना होगा और कुछ सवाल अभी अनुत्तरित हैं। जैसे, क्या मच्छर या मलेरिया परजीवी इस तरह की सुरक्षा के प्रतिरोधी हो जाएंगे? ऐसे मच्छर प्रकृति में छोड़े गए, तो पर्यावरण व पारिस्थितिकी पर दीर्घकालिक असर क्या होंगे? अनचाहे परिणामों से बचाव कैसे किया जाएगा?**

मलेरिया रोकथाम के दो नए उपाय सामने आए हैं। एक उपाय में इंसानी खून को मच्छरों के लिए जहरीला बनाने का प्रयास किया गया है ताकि काटते ही मच्छर मर जाएं। दूसरे उपाय में कोशिश यह है कि मच्छरों को मलेरिया परजीवी के लिए अनुपयुक्त बना दिया जाए।

पहले उपाय में आइवरमेक्टिन नामक एक दवा का उपयोग शामिल है। यह दवा न केवल कृमियों को मारती है बल्कि जूं जैसे कीटों का भी खात्मा करती है। इसके अलावा जब कोई व्यक्ति इसे गोली के रूप में लेता है, तो उसका खून पीने वाले कीट भी मर जाते हैं। विचार यह आया कि यदि मच्छर ऐसे व्यक्ति को काटें जिसने हाल ही में आइवरमेक्टिन ली हो, तो क्या वे भी मर जाएंगे? और अगर एक साथ पूरा समुदाय यह दवा ले ले, तो क्या मच्छरों की संख्या घट सकती है?

प्रयोगशाला परीक्षण के नतीजे काफी उत्साहजनक रहे। एक दिन पहले आइवरमेक्टिन लेने वाले लोगों के खून पर पले 73 प्रतिशत मच्छर दो दिन में मर गए, जबकि नियंत्रण समूह में केवल 31 प्रतिशत। लेकिन असली चुनौती वास्तविक दुनिया में इसके असर को साबित करना था। अक्टूबर 2023 में दक्षिण केन्या के क्वाले काउंटी में एक बड़ा परीक्षण बरसात के मौसम की शुरुआत में हुआ, जब मच्छरों की संख्या तेजी से बढ़ती है। अध्ययन में 84 बस्तियों को शामिल किया गया था। आधी बस्तियों के लोगों को तीन महीने तक, हर महीने आइवरमेक्टिन दी गई और बाकी आधों को परजीवी नाशी दवा अल्बेंडेजोल दी गई, जो मच्छरों पर कोई असर नहीं करती। अगले छह महीनों में आइवरमेक्टिनसमूह में बच्चों में मलेरिया के नए मामलों में 26 प्रतिशत की कमी आई। हालांकि कई वैज्ञानिक इस नतीजे से सहमत नहीं है। एक तो, 26 प्रतिशत की कमी व्यापक इस्तेमाल के लिए पर्याप्त नहीं है। दूसरा, यह दवा गर्भवती महिलाओं और शिशुओं को नहीं दी जा सकती।

इसके अलावा बुर्किना फासो के दो परीक्षणों और गिनी-बिसाऊ (2024) के एक परीक्षण में कोई खास फायदा नहीं दिखा था। हालांकि, केन्या परीक्षण थोड़ा अलग था - दवा बरसात की शुरुआत में ही दे दी गई थी, जब मच्छर तेजी से बढ़ते हैं, और कई बार दी गई। एक अतिरिक्त फायदा यह हुआ कि खुजली और जुओं का भी सफाया हो गया। फिर भी इसकी कई चुनौतियां हैं। गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों के लिए यह दवा सुरक्षित नहीं है। हर खुराक के बाद दवा खून में कुछ ही दिनों तक प्रभावी रहती है। लंबे समय तक असर करने वाले संस्करणों पर फिलहाल शोध चल रहा है। मलेरिया के मामलों में महज 26 प्रतिशत कमी लागत और मेहनत के हिसाब से पर्याप्त नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO का नियम है कि जब तक कम से कम दो बड़े और उच्च-गुणवत्ता वाले परीक्षणों में मजबूत सुरक्षा न दिखे, किसी तरीके को बड़े पैमाने पर अपनाने की सिफारिश नहीं की जा सकती। शोधकर्ता भी उपरोक्त शंकाओं को दूर करने की दिशा में और शोध कार्य करने की योजना बना रहे हैं।

दूसरा तरीका मच्छरों को ही मलेरिया के खिलाफ हथियार बनाने का है। नेचर पत्रिका में प्रकाशित एक नए अध्ययन में मच्छरों के जीन में बदलाव करके उन्हें मलेरिया परजीवी प्लाज्मोडियम का वाहक बनने से रो. कने का प्रयास किया गया है। आगे, जीन ड्राइव नामक तकनीक से इस गुण को तेजी से मच्छरों की आबादी में फैलाया जा सकता है। आम तौर पर मच्छर अपने जीन का आधा हिस्सा ही अगली पीढ़ी को देते हैं। लेकिन जीन ड्राइव एक खास आनुवंशिक तकनीक है, जो इस नियम को बदल देती है।

यह चुने हुए जीन को लगभग सभी संतानों में पहुंचाती है, जिससे वह तेजी से पूरी आबादी में फैल जाता है। यह तरीका कारगर तो है, लेकिन विवादास्पद भी है, क्योंकि इससे किसी प्रजाति में स्थाई और बड़े पैमाने पर बदलाव हो सकते हैं, जिनके पर्यावरण पर अनजाने असर पड़ सकते हैं। इसलिए नए शोध में वैज्ञानिकों ने कृत्रिम जीन बनाने की बजाय, मच्छरों में पहले से प्राकृतिक रूप से मौजूद एक उत्परिवर्तन का सहारा लिया। इस उत्परिवर्तन के चलते कुछ एनॉफिलीज गैंबिया मच्छरों में एक प्रोटीन का थोड़ा बदला हुआ रूप पाया जाता है। यह बदला हुआ प्रोटीन मलेरिया परजीवी को मच्छर के शरीर में अपना जीवन-चक्र पूरा करने में मुश्किल पैदा करता है।

-स्रोत फीचर्स

वोट चोरी का मुद्दा: तू इधर-उधर की बात न कर...

निर्मल रानी

भारत में इन दिनों वोट चोरी का मुद्दा आम लोगों में चर्चा का विषय बना हुआ है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में होने वाले चुनावों की हालांकि पूरे विश्व में सराहना की जाती है परन्तु यह भी सही है कि इन चुनावों की पारदर्शिता को लेकर भी दशकों से सवाल उठते रहे हैं। आज यदि ईवीएम से होने वाली कथित धांधली पर सवाल उठाया जाता है तो बैलेट पेपर और मत पेटी के दौर में बूथ कैप्चरिंग व वोट गिनती में धांधली के आरोप भी लगते रहे हैं परन्तु पिछले दिनों इस सम्बन्ध में उठा विवाद कुछ ज्यादा ही तूल पकड़ गया है।

इस विवाद में एक तरफ भारतीय जनता पार्टी व चुनाव आयोग है तो दूसरी तरफ कांग्रेस के नेतृत्व में इण्डिया गठबंधन के सभी दल। यह विवाद दरअसल 2024 के लोकसभा चुनाव व कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों के बाद उस समय शुरू हुआ, जब कांग्रेस और इंडिया गठबंधन ने चुनाव आयोग पर मतदाता सूची में गड़बड़ियों और वोटर फ्रॉड के गंभीर आरोप लगाए।

कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी सहित अनेक विपक्षी नेताओं ने दावा किया है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में मतदाता सूचियों में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी कर चुनावों में बेईमानी की गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि कर्नाटक, महाराष्ट्र, हरियाणा और बिहार जैसे राज्यों में बड़ी संख्या में फर्जी मतदाताओं के नाम जोड़े गए हैं और डुप्लिकेट वोटर की प्रविष्टियां बनाई गई हैं। कि कई जगह तो मतदाताओं के नाम सूची से भी हटा दिए गए हैं।

इस संबंध में राहुल गांधी ने चुनाव आयोग द्वारा ही उपलब्ध कराए गए वोटर लिस्ट के विशाल भंडार के शोध के आधार पर ही विशेष रूप से कर्नाटक के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र का उदाहरण दिया। उन्होंने अपनी पड़ताल में पाया कि अकेले महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र में ही डुप्लिकेट प्रविष्टियों और फर्जी पतों के द्वारा 1,00,250 वोट चुराए गए। विपक्ष के मुताबिक इस तरह की गड़बड़ियों के कारण ही कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों को 2024 के चुनाव में पराजय हुई। विशेष रूप से उन सीटों पर जहां हार का अंतर 50,000 वोटों से कम था। राहुल गांधी ने तो यहां तक दावा किया कि इसी वोटर फ्रॉड की वजह से ही कांग्रेस को लगभग 70 लोकसभा सीटों का नुकसान हुआ। इसी बीच बिहार में निकट भविष्य में होने वाले विधानसभा चुनावों से पूर्व चुनाव आयोग ने वोटर लिस्ट का विशेष गहन पुनरीक्षण Special Intensive Revision - SIR का काम शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया में बिहार की मतदाता सूची से लगभग 65 लाख मतदाताओं के नाम हटाए गए, जिसे विपक्ष ने वोट चोरी का हिस्सा बताया। सुप्रीम कोर्ट ने भी इस मामले में हस्तक्षेप करते हुए चुनाव आयोग को इन हटाए गए नामों का विवरण और कारण सार्वजनिक करने का निर्देश दिया।

उसके बाद ही चुनाव आयोग ने इन्हें सार्वजनिक किया। एक तरफ तो विपक्ष अर्थात इण्डिया गठबंधन, इस पूरे प्रकरण को लेकर चुनाव आयोग की बीजेपी के साथ मिलीभगत का आरोप लगा रहा है जबकि बीजेपी व चुनाव आयोग इसे विपक्ष की बौखलाहट और अनर्गल आरोप करार दे रहे हैं। पहले भी चुनाव आयोग विपक्ष के इस तरह के आरोपों को बार-बार खारिज करता रहा है, परन्तु कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक ने इस मुद्दे को जनता तक ले जाने के लिए वोट चोरी से आजादी अभियान शुरू किया है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने गत 17 अगस्त, 2025 को चुनावी राज्य बिहार के सासाराम से अपनी 16 दिवसीय मतदाता अधिकार यात्रा शुरू की।

1,300 किलोमीटर की यह यात्रा 1 सितंबर को पटना में एक विशाल रैली के साथ समाप्त होगी, जिसमें विभिन्न भारतीय राजनैतिक दलों के नेता शामिल होंगे। दूसरी तरफ ठीक उसी दिन व उसी समय यानी 17 अगस्त 2025 को ही चुनाव आयोग ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित कर कहा कि मतदाता सूची की प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी है और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 के तहत है। आयोग ने यह भी कहा कि राजनीतिक दलों को मतदाता सूची की जांच के लिए समय दिया जाता है, लेकिन विपक्ष ने समय पर आपत्तियां दर्ज नहीं कीं। आयोग ने राहुल गांधी से उनके आरोपों के समर्थन में शपथ पत्र मांगते हुए कहा कि यदि उन्होंने एक सप्ताह में अपनी आपत्तियों से सम्बंधित हलफनामा नहीं दिया तो उन्हें देश से मुआफी मांगनी पड़ेगी। अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में सी सी टी वी फुटेज को लेकर भी चुनाव आयोग ने कई ऐसी बातें कीं जिसे पक्षपातपूर्ण व अतार्किक माना जा रहा है। बहरहाल, विपक्ष व चुनाव आयोग के बीच भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में पहली बार इस कद्र तल्खी पैदा हुई है। चुनाव आयोग की मनमानी को बेनकाब करने के लिए कांग्रेस ने http://votechori.in के नाम से एक वेब पोर्टल लॉन्च किया है, जहां लोग वोट चोरी के विरुद्ध अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं और डिजिटल मतदाता सूची की मांग का समर्थन कर सकते हैं।

साथ ही कांग्रेस ने टोल फ्री नंबर 9650003420 भी मिस्ड कॉल के लिए जारी किया है। इस पर जनता उन्हें अपना समर्थन व वोट सम्बन्धी अपनी शिकायत दे सकती है। विपक्ष ने इस मुहिम को वोट चोरी से आजादी अभियान का नाम दिया है। इसमें कोई शक नहीं कि अब वोट चोरी के मुद्दे ने देश की राजनीति में उबाल पैदा कर दिया है। पूरा देश इसे एक गंभीर और संवेदनशील मुद्दे के रूप में देख रहा है, क्योंकि चुनाव आयोग व भाजपा की जुगलबंदी ने भारत जैसे विशाल लोकतंत्र की पारदर्शिता और निष्पक्षता पर सवाल खड़ा कर दिया है। विपक्ष तो सीधे तौर पर इसे लो. कतंत्र पर हमला बता रहा है। देश के मतदाता इस समय चुनाव आयोग के पक्षपातपूर्ण रवैये से परेशान होकर यही कहते दिखाई दे रहे हैं कि तू इधर उधर की बात न कर। ये बता कि काफिला क्यों लुटा? मुझे रहजनों से गरज नहीं। तेरी रहबरी का सवाल है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

संक्षिप्त समाचार

ब्रिटेन, फ्रांस यूक्रेन में सैनिक तैनात नहीं करेंगे

मास्को। ब्रिटेन और फ्रांस यूक्रेन में अपने हजारों सैनिक तैनात करने का कोई इरादा नहीं है लेकिन तथाकथित 'इच्छुक गठबंधन' यूक्रेन की सुरक्षा की गारंटी के लिए वैकल्पिक तरीकों पर विचार कर रहा है। द टाइम्स अखबार की जारी रिपोर्ट में यह खबर दी गई। जिसके अनुसार 'इच्छुक गठबंधन' यूक्रेन को हवाई और समुद्री हमलों से बचाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। साथ ही वह यूक्रेनी सशस्त्र बलों को फिर से मजबूत करने में मदद के लिए जमीनीस्तर पर सैन्य प्रशिक्षकों को तैनात कर रहा है।

कराची में बारिश का कहर, 11 लोगों की मौत, 10 घायल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के दक्षिणी बंदरगाह शहर कराची में बारिश जनित हादसों में कम से कम 11 लोगों की मौत हो गई और 10 अन्य घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों ने बुधवार को बताया कि भारी बारिश के कारण कई इलाके झीलों में तब्दील हो गए और अनेक उड़ानें बाधित हुईं तथा बिजली गुल हो गई।बारिश के पानी में डूबने और करंट लगने से भी लोगों की मौत हुई है। राहत एंव बचाव विभाग के अनुसार, दक्षिणी सिंध प्रांत की राजधानी कराची में मंगलवार सुबह से हो रही भारी बारिश के बाद बिजली का करंट लगने, डूबने और दीवार गिरने की घटनाओं में कई लोगों की मौत हो गई।

नाइजीरिया में मस्जिद पर हमले में तेरह लोगों की मौत

अबुजा। नाइजीरिया के उत्तरी राज्य कात्सिना में नमाज के दौरान एक मस्जिद पर बंदूकधारियों के एक समूह द्वारा किए गए हमले में कम से कम 13 लोगों की मौत हो गई। एक स्थानीय अधिकारी ने यह जानकारी दी है। कात्सिना के आंतरिक सुरक्षा और गृह मामलों के आयुक्त नासिर मुआजू ने स्थानीय मीडिया को बताया कि बंदूकधारियों ने मालुमफशी में मुस्लिम बहुल उन्गुवान मंतौ समुदाय पर हमला किया और सुबह की नमाज के दौरान मस्जिद में नमाजियों पर अंधाधुंध गोलीबारी की। उन्होंने कहा कि हमलावरों के 'प्रतिशोध अभियान' पर होने का संदेह है।

अफगानिस्तान में बस-ट्रक हादसे में 79 की मौत

काबुल। अफगानिस्तान के पश्चिमी प्रांत हेरात में मंगलवार रात हुए सड़क हादसे में मरने वालों की संख्या बढ़कर 79 हो गई है। गृह मंत्रालय के अधिकारियों ने बुधवार को बताया कि मृतकों में 19 बच्चे भी शामिल हैं। दुर्घटना उस वक्त हुई जब ईरान से हेरात लौट रही बस एक मोटर साईकिल से टकराने के बाद वहां अन्य मिनी ट्रक से टकरा गई। टक्कर के बाद बस में आग लग गई और यात्रियों को बाहर निकलने का मौका भी नहीं मिल सका। यह दुर्घटना इतनी भयानक थी कि आग में जले शवों की पहचान भी मुश्किल हो गई है।

नई दिल्ली। संसद में कांग्रेस संसदीय दल की चेयरपर्सन सोनिया गांधी, LOP राज्यसभा और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे व इंडिया गठबंधन के नेताओं के द्वारा उप-राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बी. सुदर्शन रेड्डी का अभिनंदन किया गया।

सुदर्शन रेड्डी लड़ेंगे दमदार चुनाव: राहुल गांधी

उपराष्ट्रपति चुनाव में कांग्रेस ने कसी कमर

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति चुनाव को लेकर विपक्षी गठबंधन ने पूर्व सुप्रीम कोर्ट जज बी. सुदर्शन रेड्डी को अपना उम्मीदवार बनाया है। विपक्ष का दावा है कि यह चुनाव सिर्फ एक पद के लिए नहीं, बल्कि संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए है।

कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने बुधवार को रेड्डी के समर्थन में एकजुट होकर यह संदेश दिया कि विपक्ष अब संविधान विरोधी ताकतों के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ने के लिए तैयार है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा कि यह चुनाव संविधान को बचाने वालों और उस पर हमला करने वालों के बीच की लड़ाई है।

उन्होंने बताया कि रेड्डी ने तेलंगाना में जाति जनगणना पर काम किया और सामाजिक न्याय की दिशा में ठोस दृष्टिकोण तैयार किया। राहुल ने एक दिलचस्प किस्सा साझा करते हुए कहा कि जब उन्होंने रेड्डी से बातचीत की, तो उनकी जेब में संविधान की प्रति थी। रेड्डी ने उन्हें बताया कि वे पिछले 52 वर्षों से संविधान अपने साथ रखते हैं क्योंकि किसी भी कानूनी बहस का अंतिम उत्तर संविधान ही होता है। राहुल ने कहा कि यही प्रतिबद्धता आज देश को चाहिए। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि बीते 11 वर्षों में सत्तारूढ़ भाजपा ने अपनी संसदीय बहुमत का बार-बार दुरुपयोग किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र ने प्रवर्तन निदेशालय, आयकर विभाग और केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो जैसी स्वायत्त एजेंसियों को विपक्षी नेताओं के खिलाफ इस्तेमाल किया है। खड़गे ने कहा कि अब नए विधेयक भी विपक्षी सरकारों को कमजोर करने और उन्हें अस्थिर करने के औजार बना दिए गए हैं। उनके अनुसार, संसद में लगातार विपक्ष की आवाज दबाई जा रही है और गंभीर जनहित के मुद्दों पर बहस तक नहीं होने दी जा रही। खड़गे ने जोर देकर कहा कि ऐसे समय में बी. सुदर्शन रेड्डी की उम्मीदवारी विपक्ष की सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि रेड्डी का जीवन और काम संविधान की आत्मा को दर्शाता है न्याय, करुणा और हर नागरिक को सशक्त बनाने की भावना। विपक्ष का मानना है कि रेड्डी उपराष्ट्रपति पद पर बैठकर न केवल लोकतंत्र की रक्षा करेंगे बल्कि देश को न्याय और एकता की नई दिशा देंगे।

- **लोक सभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने समर्थन में एकजुट होकर संदेश दिया**
- **यह चुनाव संविधान को बचाने वालों और उस पर हमला करने वालों के बीच की लड़ाई है**
- **राहुल गांधी ने कहा: जब उन्होंने रेड्डी से बातचीत की, तो उनकी जेब में संविधान की प्रति थी**

चीनी विदेश मंत्री वांग ई पाकिस्तान के बजाए अफगानिस्तान पहुंचे

नई दिल्ली। चीन के विदेश मंत्री वांग ई अपनी प्रस्तावित पाकिस्तान यात्रा के कार्यक्रम में बदलाव करते हुए अफगानिस्तान पहुंच गए हैं। वह काबुल में छठी चीन-अफगानिस्तान-पाकिस्तान त्रिपक्षीय विदेश मंत्रियों की वार्ता में भाग लेने वहां गए हैं। इस वार्ता में तीनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और क्षेत्रीय सहयोग सहित कई प्रमुख मुद्दों पर चर्चा होगी। वांग ई की बीते तीन सालों में यह पहली अफगानिस्तान यात्रा है। पाकिस्तान के उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार इस बैठक में भाग लेने के लिए काबुल पहुंच चुके हैं। अफगानिस्तान के विदेश मंत्रालय ने काबुल में त्रिपक्षीय वार्ता के लिए वांग ई और डार के आगमन की घोषणा करते हुए कहा कि इस बैठक में तीनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और क्षेत्रीय सहयोग सहित कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर व्यापक चर्चा होगी।

भारत पर प्रतिबंध का मकसद रूस पर दबाव

अमेरिका ने कहा: प्रतिबंध से यूक्रेन जंग रोकने में मदद मिलेगी, भारत पर अब तक 50% टैरिफ लगाया

वाशिंगटन। अमेरिका ने रूस पर दबाव बनाने के लिए भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं। व्हाइट हाउस की प्रेस सेक्रेटरी कैरोलीन लीविट ने इसकी जानकारी दी। इससे पहले तक ट्रम्प प्रशासन रूस से तेल लेने पर भारत के खिलाफ की गई आर्थिक कार्रवाई को पैनल्टी या टैरिफ बताता रहा है। ट्रम्प ने भारत पर अब तक कुल 50 टैरिफ लगाने का फैसला किया है।

इसमें 25 प्रतिशत रेसीप्रोकल यानी जैसे को तैसा टैरिफ और रूस से तेल खरीदने पर 25 प्रतिशत पैनल्टी है। रेसीप्रोकल टैरिफ 7 अगस्त से लागू हो गया है, जबकि पेनल्टी 27 अगस्त से लागू होगी। लीविट के मुताबिक इसका मकसद रूस पर सेकेंडरी प्रेशर डालना है, ताकि वह युद्ध खत्म करने पर मजबूर हो। लीविट ने दावा किया कि आपरेशन सिंदूर के बाद भारत-पाक संघर्ष को रोकने में ट्रम्प ने अहम भूमिका निभाई थी। प्रेस सेक्रेटरी के मुताबिक ट्रम्प ने व्यापार को हथियार की तरह इस्तेमाल कर इस संघर्ष को खत्म कराया। लीविट ने कहा कि ट्रम्प ने अजरबैजान और आर्मेनिया के बीच पीस डील कराई। साथ ही रवांडा और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ कान्गो के बीच संघर्ष खत्म करने में मदद की। व्हाइट हाउस के मुताबिक, फिलहाल ट्रम्प का सबसे ज्यादा ध्यान रूस-यूक्रेन और इजरायल-हमास जंग को खत्म कराने पर है। ट्रम्प पहले भी कई बार भारत-पाक संघर्ष को खत्म कराने का श्रेय खुद को दे चुके हैं। ट्रम्प ने व्हाइट हाउस में यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से मुलाकात की थी। ट्रम्प ने इस बातचीत को सफल बताया। वहीं जेलेंस्की ने कहा कि यह अब तक की उनकी सबसे अच्छी बातचीत रही। हालांकि इस दौरान रूस-यूक्रेन के बीच सीजफायर पर सहमति नहीं बनी। ट्रम्प ने कहा कि फिलहाल इतनी जल्दी सीजफायर संभव नहीं है। दूसरी ओर अमेरिका ने 6000 से ज्यादा इंटरनेशनल स्टूडेंट्स के वीजा रद्द कर दिए हैं। जांच में पाया गया कि इनमें से कुछ ने कानून तोड़ा, कुछ वीजा एक्सपायर होने के बाद भी रुके हुए थे, जबकि कुछ गंभीर अपराधों में शामिल थे। अमेरिका में रद्द किए गए 6000 वीजा में से लगभग दो-तिहाई यानी करीब 4000 वीजा धारक अपराधों में शामिल थे। इनमें मारपीट, चोरी और नशे में गाड़ी चलाना शामिल है। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने पुष्टि की है कि कुछ मामले आतंकवाद से भी जुड़े थे।

यूएस ने 6000 स्टूडेंट वीजा रद्द किए स्टूडेंट में से 4000 अपराध और आतंकवाद में शामिल बताए गए

2023-24 में अमेरिकी कालेजों में 11 लाख से ज्यादा विदेशी छात्र पढ़ रहे थे। सरकार को चिंता है कि कुछ लोग एजुकेशन वीजा का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। इस वजह से वीजा नियमों की जांच को और सख्त किया जा रहा है। अमेरिका ने 200 से 300 स्टूडेंट वीजा आतंकवाद से जुड़े मामलों की वजह से रद्द किए हैं। इन वीजा को इमिग्रेशन और नेशनैलिटी एक्ट की उस धारा के तहत रद्द किया गया, जो आतंकवाद और सुरक्षा से जुड़ी है। इन मामलों की डिटेल जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है। अधिकारियों का कहना है कि इन घटनाओं में न सिर्फ अमेरिकी कानूनों का उल्लंघन किया गया, बल्कि कालेज कैंपस और आम लोगों की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा किया गया। अमेरिकी सरकार इंटरनेशनल छात्रों को वीजा देने की प्रोसेस को लगातार सख्त करती जा रही है। अमेरिकी विदेश विभाग ने कुछ दिन पहले ही 2 सितम्बर से वीजा की ड्राप बाक्स सुविधा यानी इंटरव्यू वेवर प्रोग्राम (आईडब्ल्यूपी) को बंद करने की घोषणा की है।

हमारे कच्चे तेल का कोई विकल्प नहीं, अमेरिकी दबाव गलत: रूस

मास्को/ नई दिल्ली। रशियन आयल खरीदने के चलते भारत पर बनाए जा रहे अमेरिकी दबाव को रूस ने गलत बताया है। सीनियर रूसी डिप्लोमेट रोमन बाबुश्किन ने कहा: भारत इस बात को समझता है कि तेल आपूर्ति को बदलने का कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि रूसी तेल भारत के लिए बहुत फायदेमंद है। भारत के लिए रूसी कच्चे तेल पर डिस्काउंट लगभग 5 प्रतिशत है। रोमन बाबुश्किन ने कहा- भारत के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण स्थिति है, लेकिन हमें भारत के साथ अपने संबंधों पर विश्वास है। हमें विश्वास है कि बाहरी दबाव के बावजूद भारत-रूस ऊर्जा सहयोग जारी रहेगा। एक रिपोर्ट के मुताबिक रूस के दूतावास ने ये भी कहा कि ष्अगर भारतीय सामान अमेरिकी बाजार में नहीं जा सकते, तो वे रूस की तरफ जा सकते हैं। दरअसल, अमेरिका ने भारत पर रूसी तेल खरीदने के चलते 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया है। इससे अमेरिका में भारत के सामान महंगे हो जाएंगे।

फलस्तीन को मान्यता देने पर ऑस्ट्रेलिया-इजरायल में तनाव

ऑस्ट्रेलियाई पीएम ने खारिज किए नेतन्याहू के आरोप

मेलबर्न। फलस्तीन को मान्यता देने के बाद आस्ट्रेलिया और इजरायल के बीच तनाव बढ़ गया है। इजरायल लगातार आस्ट्रेलिया के इस कदम का विरोध कर रहा है। इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने आस्ट्रेलिया के पीएम एंथनी अल्बनीज पर आरोप लगाया कि वे एक कमजोर राजनेता हैं।

उन्होंने इजरायल को धोखा दिया है। अल्बनीज ने नेतन्याहू के आरोपों को खारिज कर दिया है। उन्होंने नेतन्याहू को जवाब दिया कि मैं अन्य देशों के नेताओं के साथ सम्मान से पेश आता हूं। मैं उनके साथ कूटनीतिक तरीके से बातचीत करता हूं। आस्ट्रेलिया के पीएम अल्बनीज ने 11 अगस्त को एलान किया था कि आस्ट्रेलिया भी फलस्तीन को मान्यता देगा।

इसके बाद इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा था कि इतिहास अल्बानीज को उनके व्यक्तित्व के लिए याद रखेगा। एक कमजोर राजनेता जिसने इजरायल को धोखा दिया और आस्ट्रेलिया के यहूदियों को त्याग दिया। इसके जवाब में आस्ट्रेलियाई पीएम अल्बनीज ने कहा कि मैं इन बातों को व्यक्तिगत रूप से नहीं लेता। वैश्विक चिंता बढ़ती जा रही है क्योंकि लोग हिंसा के चक्र का अंत देखना चाहते हैं। इसे हम बहुत लंबे समय से देखते आ रहे हैं। आस्ट्रेलियाई भी यही देखना चाहते हैं। आस्ट्रेलिया के गृह मंत्री टोनी बर्क ने आस्ट्रेलिया आ रहे नेतन्याहू के गठबंधन के सदस्य दक्षिणपंथी इजरायली सांसद सिमचा रोथमैन का वीजा रद्द कर दिया। बर्क ने नेतन्याहू पर आस्ट्रेलिया के खिलाफ वैसा हमला करने का आरोप लगाया, जैसा उन्होंने फलस्तीनी राज्य को मान्यता देने के मुद्दे पर ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, आयरलैंड, नार्वे और स्पेन के खिलाफ किया था। बर्क ने इस बात से इंकार किया कि अल्बनीज कमजोर हैं।

मैं अन्य देशों के नेताओं के साथ सम्मान से पेश आता हूं: ऑस्ट्रेलियाई पीएम अल्बनीज

व्हाइट हाउस ने टिकॉट अकाउंट शुरू किया

वाशिंगटन। अमेरिका में 'व्हाइट हाउस' ने आधिकारिक तौर पर अपना टिकटॉक अकाउंट लॉन्च किया। गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा इस सोशल मीडिया ऐप को लगभग सितम्बर तक नए मालिक की तलाश करने या फिर देश में प्रतिबंध का सामना करने की समय सीमा संबंधी धमकी के बीच हुआ है।

इस अकाउंट पर मंगलवार दोपहर को पहला वीडियो पोस्ट किया गया। यह 27 सेकंड की एक क्लिप है जिसमें ट्रम्प को अपने समर्थकों के साथ बातचीत करते हुए दिखाया गया है। इसमें 2016 के रिपब्लिकन नेशनल सम्मेलन में उनके स्वीकृति भाषण का 'ऑडियो' भी है। इस वीडियो के कुछ ही घंटों बाद अकाउंट के 57,000 से जयादा 'फॉलोअर्स' हो गए जबकि पिछले साल अपने राष्ट्रपति चुनाव अभियान के लिए ट्रम्प द्वारा इस्तेमाल किए गए टिकटॉक अकाउंट पर 1.5 करोड़ से जयादा फॉलोअर्स हैं।

- **ट्रम्प द्वारा इस्तेमाल किए गए टिकटॉक अकाउंट पर 1.5 करोड़ से जयादा फॉलोअर्स**

स्लोवेनिया ने गाजा में सहायता की पहली खेप भेजी

लजुब्लजाना। स्लोवेनिया ने जॉर्डन के रास्ते गाजा के लिए मानवीय सहायता की पहली खेप पहुंची है। स्लोवेनिया के रक्षा मंत्रालय ने यह जानकारी दी। मंत्रालय ने बताया कि रक्षा मंत्रालय के भंडार से खाद्य सामग्री और कंबल सहित यह सहायता एक स्पार्टन सैन्य मालवाहक विमान द्वारा पहुंचाई गई है। दो और उड़ानें निर्धारित हैं और सभी आपूर्ति अगस्त के अंत तक पूरी होने की उम्मीद है। मंत्रालय के अनुसार, यह खेप जॉर्डन में अम्मान के पास एक सैन्य हवाई अड्डे पर प्राप्त हुई। रक्षा मंत्री बोरुत साजोविक ने इस अभियान के बारे में बताया कि गाजा में नागरिक लगभग दो वर्षों से संघर्ष झेल रहे हैं।

ट्रम्प ने वेनेजुएला के पास तीन वॉरशिप भेजे

ड्रग्स माफिया से निपटना मकसद, वेनेजुएला ने 45 लाख लड़ाके तैनात किए, कहा: अमेरिका पागल हुआ

वाशिंगटन। ट्रम्प प्रशासन ने वेनेजुएला के पास तीन वॉरशिप तैनात भेजे है। वॉरशिप अगले कुछ घंटों में वेनेजुएला के तट के पास पहुंच जाएंगे। ट्रम्प प्रशासन ने सोमवार को कहा था कि ये तैनाती ड्रग कार्टेल्स (ड्रग्स की तस्करी करने वाले ग्रुप्स) और इससे जुड़ी हिंसा को रोकने के लिए किया जा रहा है। ट्रम्प प्रशासन का मानना है कि वेनेजुएला की सरकार ड्रग तस्करी को बढ़ावा दे रही है।

वहीं, वेनेजुएला ने अमेरिका के इन आरोपों को खारिज किया है। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने वॉरशिप तैनाती के खिलाफ 45 लाख सैनिकों को तैनात करने का ऐलान किया है। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय के एक अधिकारी के मुताबिक, यूएसएस ग्रेवली, यूएसएस जेसन डनहम और यूएसएस सैम्पसन नाम के तीन एजिस गाइडेड-मिसाइल डेस्ट्रायर वॉरशिप जल्द ही वेनेजुएला के तट पर पहुंचेंगे। तीनों वॉरशिप हवा, समुद्र, और पनडुब्बी हमलों से रक्षा करने में माहिर है। इनके साथ 4,000 सैनिक, पी-8ए पोसाइडन विमान, और एक हमलावर पनडुब्बी भी शामिल है। यह अगले कुछ महीनों तक इस इलाके में ड्रग तस्करी के खिलाफ अभियान में शामिल रहेंगे। वेनेजुएला के विदेश मंत्री यवान गिल ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि अमेरिका का वेनेजुएला पर ड्रग तस्करी का आरोप उसकी विश्वसनीयता की कमी को दिखाता है। गिल बोले, श्हम शांति और संप्रभुता के साथ आगे बढ़ रहे हैं। अमेरिका की हर धमकी यह साबित करती है कि वह एक स्वतंत्र देश को झुका नहीं सकता। ट्रम्प प्रशासन मादुरो को दुनिया के सबसे बड़े ड्रग तस्करों में से एक मानता है। अमेरिका ने 8 अगस्त को मादुरो की गिरफ्तारी के लिए इनाम की राशि को दोगुना करके 435 करोड़ रुपये कर दिया। इससे पहले मादुरो पर 217 करोड़ रुपये का इनाम था।

- **ट्रम्प प्रशासन का मानना है कि वेनेजुएला की सरकार ड्रग तस्करी को बढ़ावा दे रही है**

इजरायल ने गाजा पर कब्जे को प्लानिंग को दी मंजूरी

करीब 60 हजार रिजर्व फोर्स को सरकार ने डयूटी पर बुलाया, कुल 1.30 लाख सैनिक तैनात करेगा

तेल अवीव। इजरायल के रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज ने गाजा सिटी पर कब्जा करने की योजना को मंजूरी दी है। इसके लिए उन्होंने करीब 60 हजार एक्स्ट्रा सैनिकों (रिजर्व फोर्स) को डयूटी पर बुलाने का आदेश दिया है।

इजरायल के रक्षा मंत्रालय ने बुधवार को इसकी पुष्टि की। इजरायल ने गाजा सिटी पर कब्जे के लिए 1.30 लाख सैनिकों को मोर्चे पर तैनात करने का फैसला किया है। सैनिकों को डयूटी जाइन करने से कम से कम 2 हफ्ते पहले नोटिस दिया जाएगा। पहली खेप में 2 सितम्बर को करीब 40-50 हजार सैनिक बुलाए जाएंगे। दूसरी खेप नवम्बर-दिसम्बर में और तीसरी फरवरी-मार्च 2026 में बुलाई जाएगी। यह फैसला रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज ने सेना प्रमुख और सुरक्षा अधिकारियों के साथ बैठक के बाद लिया। गाजा सिटी पर कब्जे के अभियान को गिदोन'स चेरीअट्स-बी नाम दिया गया है। इस दौरान पहले से डयूटी कर रहे हजारों रिजर्व सैनिकों की सेवा 30-40 दिन और बढ़ा दी जाएगी। इस कार्रवाई में 5 आर्मी डिवीजन शामिल रहेंगी। इसमें 12 ब्रिगेड-लेवल टीमें होंगी, जिनमें पैदल सेना, टैंक, तोपखाना, इंजीनियरिंग और सपोर्ट यूनिट शामिल होंगी। इसके अलावा गाजा डिवीजन की नार्थ और साउथ ब्रिगेड भी हिस्सा लेंगी। इजरायल यह कदम हमास पर दबाव बढ़ाने के लिए उठाया गया है, क्योंकि गाजा में लगभग दो साल से चल रहे युद्ध को रोकने के लिए एक नई शांति योजना पर काम हो रहा है। इस नई योजना में 60 दिन तक युद्ध रोकने, बंधकों को चरणबद्ध तरीके से छोड़ने, कुछ फलस्तीनी कैदियों को रिहा करने और गाजा में खाने-पीने की चीजें पहुंचाने पर बात हो रही है। कतर ने कहा कि यह योजना पहले की एक योजना जैसी है, जिसे इजरायल ने मंजूर किया था। मिस्र ने कहा कि अब इजरायल को फैसला करना है। इजरायली सेना ने बताया है कि गाजा सिटी पर कब्जे की तैयारी शुरू हो चुकी है। अभी गाजा सिटी के बाहरी इलाकों में आपरेशन चल रहा है। जैतून इलाके में नहल और 7वीं आर्मर्ड ब्रिगेड आपरेशन चला रही है। वहीं एक दूसरे इलाके, जबालिया में गिवाती ब्रिगेड कफ आपरेशन को अंजाम दे रही है। यह अभियान कई स्टेप में चलेगा।

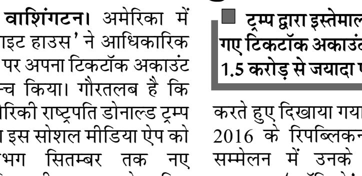

- **सैनिकों को डयूटी जाइन करने से कम से कम दो हफ्ते पहले नोटिस दिया जाएगा**

नेतन्याहू ने मैक्रों पर यहूदी-विरोधी भावना भड़काने का लगाया आरोप

तेल अवीव। इज़राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों पर यहूदी-विरोधी भावना भड़काने का आरोप लगाया है। पॉलिटिको ने एक पत्र का हवाला देते हुए बताया कि इजराइल ने फलस्तीन राज्य को मान्यता देने की पेरिस की पहल के बाद यह आरोप लगाया है।

मंगलवार को पॉलिटिको में प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक, नेतन्याहू ने मैक्रों को लिखे पत्र में कहा कि फलस्तीन के लिए आपका आह्वान इस यहूदी-विरोधी आग में घी डालने जैसा है-यह कूटनीति नहीं, बल्कि तुष्टिकरण है। यह हमास के आतंक को बढ़ावा देता है, बंधकों को रिहा करने से हमास के इनकार को और मज़बूत बनाता है, फ्रांसिसी यहूदियों को धमकाने वालों को बढ़ावा देता है और यहूदी-घृणा को बढ़ावा देता है, जो अब आपके यहां भी दिखने लगी है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि एलिसी पैलेस (फ्रांस के राष्ट्रपति का आधिकारिक कार्यालय एवं आवास) ने नेतन्याहू को जवाब दिया कि फ्रांस 'यहूदी धर्म के अपने देशवासियों की रक्षा करता है और हमेशा करता रहेगा' और इज़राइली प्रधानमंत्री से 'भ्रम और छल-कपट की नहीं, बल्कि गंभीरता और ज़िम्मेदारी की माँग करता है।' मैक्रों के कार्यालय ने कथित तौर पर कहा कि नेतन्याहू के आरोप गलत, घृणित हैं और इनका जवाब दिया जाएगा।

यौन समस्याएं
यौन समस्याओं के विशेषज्ञ

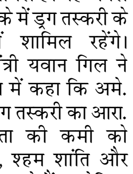

पुराने से पुराने यौन रोग के मरीज एक बार अवश्य मिलें
डा. सम्राट
नशामुक्ति, शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा तम्बाकू, प्रोक्सीवॉन कैप्सूल अफीम, चरस, डोडे पोस्त इंजेक्शन व अन्य नशा छुड़ाने का स्थायी ईलाज।
नावल्टी सिनेमा चौक
मुजफ्फरनगर (यू.पी.)
M-9412211108